

गुरुत्व ज्योतिष

प्रश्न ज्योतिष विशेष



FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष पत्रिका जून 2012

संपादक	चिंतन जोशी
संपर्क	गुरुत्व ज्योतिष विभाग गुरुत्व कार्यालय 92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA) INDIA
फोन	91+9338213418, 91+9238328785,
ईमेल	gurutva.karyalay@gmail.com , gurutva.karyalay@yahoo.in ,
वेब	http://gk.yolasite.com/ http://www.gurutvakaryalay.blogspot.com/
पत्रिका प्रस्तुति	चिंतन जोशी, स्वस्तिक.ऐन.जोशी
फोटो ग्राफिक्स	चिंतन जोशी, स्वस्तिक आर्ट
हमारे मुख्य सहयोगी	स्वस्तिक.ऐन.जोशी (स्वस्तिक सोफ्टेक इन्डिया लि)

ई- जन्म पत्रिका

E HOROSCOPE

अत्याधुनिक ज्योतिष पद्धति द्वारा
उत्कृष्ट भविष्यवाणी के साथ
१००+ पेज में प्रस्तुत

Create By Advanced Astrology
Excellent Prediction
100+ Pages

हिंदी/ English में मूल्य मात्र 750/-

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ORISSA) INDIA

Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785

Email Us:- gurutva.karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

अनुक्रम

प्रश्न ज्योतिष विशेष

प्रश्न ज्योतिष से संबंधित विशेष सूचना	6	प्रश्न ज्योतिष और धन से संबंधित योग	30
प्रश्न कुण्डली से जाने स्वास्थ्य लाभ के योग	7	प्रश्न ज्योतिष और विवाह योग	41
प्रश्न कुण्डली से परिजनो के स्वास्थ्य लाभ के योग	10	प्रश्न ज्योतिष से शत्रु का विचार	44
प्रश्न कुण्डली में रोग में मंगल की भूमिका	16	प्रश्न कुण्डली से जाने नौकरी के विभिन्न योग	45
प्रश्न ज्योतिष से जाने विद्या प्राप्ति के योग	18	प्रश्न कुण्डली से जाने मुकदमे में सफलता के योग	52
प्रश्न ज्योतिष से जानिए विद्याप्राप्ति में ग्रहों की भूमिका	19	शनि प्रदोष व्रत का महत्व	53
विद्या प्राप्ति से जेडे अन्य महत्वपूर्ण योग	21	गुरु पुण्यामृत योग	54
प्रश्न ज्योतिष और यात्रा के योग	25		

हमारे उत्पाद

गणेश लक्ष्मी यंत्र	11	कनकधारा यंत्र	32	श्री हनुमान यंत्र	56	जैन धर्मके विशिष्ट यंत्र	62
दुर्गा बीसा यंत्र	14	धन वृद्धि डिब्बी	33	मंत्रसिद्ध लक्ष्मी यंत्रसूचि	57	राशी रत्न एवं उपरत्न	64
मंत्रसिद्ध स्फटिक श्री यंत्र	16	द्वादश महा यंत्र	37	मंत्र सिद्ध देवी यंत्र सूचि	57	शनि पीडा निवारक	70
मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री	17	मंत्र सिद्ध मूंगा गणेश	39	राशि रत्न	58	मंगलयंत्र से ऋण मुक्ति	73
पढाई संबंधित समस्या	18	शादी संबंधित समस्या	42	मंत्र सिद्ध रुद्राक्ष	59	सर्व रोगनाशक यंत्र/	80
सरस्वती कवच और यंत्र	24	पुरुषाकार शनि यंत्र	44	श्रीकृष्ण बीसा यंत्र/ कवच	60	मंत्र सिद्ध कवच	82
सर्व कार्य सिद्धि कवच	28	संपूर्ण जन्म कुंडली परामर्श	52	राम रक्षा यंत्र	61	YANTRA	83
भाग्य लक्ष्मी दिब्बी	30	नवरत्न जड़ित श्री यंत्र	55	अमोघ महामृत्युंजय कवच	64	GEMS STONE	85
घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र			63	पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु			47
मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र			56	क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?			48
प्रश्न कुण्डली से स्टिक उत्तर प्राप्त किजिए			27	मंत्र सिद्ध सामग्री-			73-75

स्थायी और अन्य लेख

संपादकीय	4	दिन-रात के चौघडिये	77
मासिक राशि फल	65	दिन-रात कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक	78
जून 2012 मासिक पंचांग	69	ग्रह चलन जून -2012	79
जून-2012 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार	71	सूचना	87
जून 2012 -विशेष योग	76	हमारा उद्देश्य	89
दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका	76		

संपादकीय

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

आज के आधुनिक युग में प्रायः हर मनुष्य अपने भविष्य को लेकर चिंतित रहते हैं ! फिर चाहे वह अमीर हो या गरीब, गृहस्थ हो या संसारकी मोह, माया, राग-द्वेष इत्यादि गुणों को त्याग चुके आधुनिक युग के साधु सन्यासी हो (कुछ साधु सन्यासी को छोड़कर क्योंकि, कुछ साधु-सन्यासी पूर्णतः इश्वर के प्रति समर्पित होते हैं जिन्हें भविष्य से संबंधित किसी प्रकार की चिंता या उत्सुकता नहीं होती।), हर किसी को इस विषय में एक विशेष प्रकार की जिज्ञासा या उत्सुकता बनी रहती है कि आने वाले भविष्य में क्या घटित होने वाला है? यह एक प्रकार की सामान्य उत्कंठा होती है, जो प्रायः हर मनुष्य के भितर चल रही होती है?

एसी पौराणिक कहावत है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है। मनुष्य ने अपनी विभिन्न जिज्ञासा को शांत करने के लिए कुदरत के अनेक गुप्त रहस्यों को खोजने का प्रयास किया है और उसने अपने प्रयासों एवं अनुभवों से उन गुप्त रहस्यों को प्रकट भी किया है। इस में जरा भी संदेह नहीं है कि अनादि काल से ही गूढ रहस्यों को खोजना, जानना एवं समझना मनुष्य का स्वभाव रहा है।

मनुष्य के मार्गदर्शन के लिए और उसके भविष्य एवं वर्तमान जीवन के महत्वपूर्ण पहलू को जानने समझने और उससे प्राप्त जानकारी से उसके जीवन को सुधारने और सवारने का कार्य भारतीय ऋषी-मुनियों ने किया है, हमारे विद्वान ऋषिमुनियों ने किसी भी मनुष्य के वर्तमान एवं उसके भविष्य के गर्भ में झांकने के लिये विभिन्न ग्रंथों, शास्त्रों की रचना की है जिसे हम ज्योतिष शास्त्र, अंक शास्त्र, प्रश्न ज्योतिष, शकुन शास्त्र, समल शास्त्र, सामुद्रिक शास्त्र इत्यादि के नाम से जानते हैं। इन विषयों पर विद्वानों ने वर्षों तक शोध किये और उसका सूक्ष्म अवलोकन कर विभिन्न उपाय खोजे हैं और आने वाले भविष्य में भी खोजे जाते रहेंगे।

हमारे विद्वानों ने हजारों वर्ष पूर्व यह ज्ञात कर लिया था कि सौर-मण्डल का प्रभाव हमारी पृथ्वी पर और पृथ्वी पर निवार करने वाले समस्त जीवों पर निश्चित रूप से पड़ता है। क्योंकि सौर-मण्डल में जो भी जितनी भी ग्रह स्थित हैं, वह एक निश्चित मार्ग पर पृथ्वी की तरह ही सूर्य के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते हैं। ग्रहों की उसी गति एवं स्थिति का प्रभाव हमारे मानव जीवन को प्रभावित करता है। जिन ग्रहों का प्रभाव पृथ्वी पर विशेष रूप से पड़ता है, ग्रहों की उसी गति में उनका फल भी निश्चित रूप से मिलता है।

इस लिये जब किसी नवजात शिशु का जन्म होता है तो उसके जन्म के समय में आकाश मार्ग में ग्रहों की जो स्थिति होती है भारतीय ज्योतिष में ग्रहों की उसी स्थिति के अनुशार उस शिशु की जन्म कुण्डली का निर्माण कर दिया जाता है। जन्म कुण्डली उस नवजात शिशु के संपूर्ण जीवन का आईना होती है।

लेकिन जिन लोगों के पास जन्म कुण्डली नहीं है या उनके पास अपने जन्म का स्टिक विवरण जैसे तारीख,

समय जात नहीं हैं, वह लोग क्या करें? कैसे जाने अपना भविष्य?, उनके लिये प्रश्न ज्योतिष एक उत्तम माध्यम साबित हो सकता हैं। क्योंकि प्रश्न कुण्डली के माध्यम से प्रश्न कर्ता के भूत, भविष्य और वर्तमान से जुड़े विभिन्न प्रश्नों का बिना किसी परेशानी से सरलता से उत्तर प्राप्त हो सकता हैं। व्यक्ति अपने आनेवाले समय का निश्चित रूप से सदुपयोग कर सकता हैं। कुछ विद्वानों का यहां तक कहना हैं की प्रश्न कुण्डली की स्टिक गणना से उपयुक्त समय का चयन कर किये गये शुभ कार्यों से निर्धन व्यक्ति भी धनवान बन सकता हैं और अनपढ़ व्यक्ति प्रखर विद्वान बन सकता हैं।

प्राचीन भारतीय धर्मग्रंथों में प्रश्न ज्योतिष के महत्व को समझते हुवे सैकड़ों ग्रंथों की रचना की हैं। जिसके माध्यम से मनुष्य के भूत, भविष्य और वर्तमान से संबंधित प्रश्नों का उत्तर प्राप्त किये जा सकते हैं। लेकिन वर्तमान समय में प्रश्न ज्योतिष से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारीया और उनका उपयुक्त फलादेश और जानकारी या विभिन्न ग्रंथों में किसी टूटी हुई माला के मनको के समान बिखरे पड़े हैं जिससे प्रायः हर विद्वान ज्योतिषी अच्छी प्रकार से परिचित हैं। कठिन परिश्रम एवं विभिन्न ग्रंथों के अध्ययन के पश्चात ही कोई जानकार ज्योतिष किसी प्रश्न कर्ता के प्रश्नों का निर्धारित उत्तर देने में समर्थ हो सकता हैं। आजके आधुनिक युग में संभवत किसी एक ग्रंथ में वर्णित फलादेश करना कठिन हो सकता हैं। क्योंकि समय के साथ-साथ विद्वानों द्वारा किये गये विभिन्न शोध एवं उनके अनुभवों के आधार पर हर विद्वानों के अनुभवों में भिन्नता रही हैं जिससे उनके फल कथन में भी भिन्नता हो जाती हैं। इस लिए उक्त सभी बातों का ख्याल रखते हुए प्रश्न ज्योतिष का फल कथन करना उचित होगा।

हर व्यक्ति ज्योतिष बने यह जरूरी नहीं हैं लेकिन ज्योतिष से संबंधित सामान्य ज्ञान हर व्यक्ति के पास हो यह अति आवश्यक हैं। इसी उद्देश्य से पाठकों के मार्गदर्शन के लिये प्रश्न ज्योतिष विशेषांक कि प्रस्तुति कि गई हैं।

सभी पाठकों के मार्गदर्शन या ज्ञानवर्धन के लिए प्रश्न ज्योतिष से संबंधित विभिन्न उपयोगी जानकारी इस अंक में विभिन्न ग्रंथों एवं निजी अनुभवों के आधार पर संकलित की गई हैं। ज्योतिषी एवं विद्वान पाठकों से अनुरोध हैं, यदि प्रश्न ज्योतिष से संबंधित विषय में ग्रह योग, ग्रहों की स्थिति इत्यादि के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य ज्योतिषी या विद्वान से सलाह विमर्श कर लें। क्योंकि जानकार ज्योतिषी एवं विद्वानों के निजी अनुभव व विभिन्न ग्रंथों में वर्णित प्रश्न ज्योतिष से संबंधित जानकारीयों में एवं विद्वानों के स्वयं के अनुभवों में भिन्नता होने के कारण संबंधित प्रश्न का विचार करते समय ग्रहों की स्थिति योग इत्यादि के स्टिक फल के निर्णय में भिन्नता संभव हैं।

इस अंक में प्रश्न ज्योतिष के कुछ खास प्रश्नों का ही समावेश किया गया हैं। प्रश्न ज्योतिष से जुड़े अन्य प्रश्नों का समावेश पाठकों की रुचि के अनुसार क्रमशः अंकों में नियमित रूप से किया जायेगा।

हमारी शुभकामनाएं आपके साथ हैं.....

चिंतन जोशी



***** प्रश्न ज्योतिष से संबंधित विशेष सूचना *****

- ❖ पत्रिका में प्रकाशित प्रश्न ज्योतिष से सम्बन्धित सभी जानकारीयां गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ❖ ज्योतिष पर अविश्वास रखने वाले व्यक्ति प्रश्नज्योतिष के विषय को मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ❖ प्रश्न ज्योतिष का विषय ज्योतिष से संबंधित होने के कारण इस अंकमें वर्णित सभी जानकारीयां भारतीय ज्योतिष शास्त्रों से प्रेरित होकर लिखी गई हैं।
- ❖ प्रश्न ज्योतिष से संबंधित विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ❖ प्रश्न ज्योतिष से संबंधित भविष्यवाणी कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं और ना ही प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ❖ प्रश्नज्योतिष से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय उनका स्वयं का होगा।
- ❖ प्रश्न ज्योतिष से संबंधित पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ❖ प्रश्न ज्योतिष से संबंधित लेख ज्योतिष के प्रामाणिक ग्रंथो, हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दि गई हैं।
- ❖ हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रश्न ज्योतिष पर विश्वास किए जाने पर उसके लाभ या नुकसान की जिन्मेदारी नहीं लेते हैं। यह जिन्मेदारी प्रश्न ज्योतिष पर विश्वास करने वाले या उसका प्रयोग करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- ❖ क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रश्न ज्योतिष का प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रश्न ज्योतिष की गणना करने मे त्रुटि रखता हैं या उससे त्रुटि होती हैं तो इस कारण से प्रतिकूल अथवा विपरित परिणाम मिलने भी संभव हैं।
- ❖ प्रश्न ज्योतिष से संबंधित जानकारी को मानकर उससे प्राप्त होने वाले लाभ, हानी कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ❖ हमारे द्वारा पोस्ट किये गये प्रश्न ज्योतिष पर आधारित लेखों में वर्णित जानकारी को हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण के नीजी जीवन में आजमाया हैं। जिस्से हमे अनेको बार प्रश्न ज्योतिष के आधार पर स्टिक उत्तर की प्राप्ति हुई हैं।
- ❖ अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)



प्रश्न कुण्डली से जाने स्वास्थ्य लाभ के योग

चिंतन जोशी



सभी व्यक्ति स्वयं के और अपने स्वजनो के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता है। लेकिन हमारा शरीर में विभिन्न कारणों से स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां समय के साथ-साथ आती-जाती रहती हैं।

लेकिन यदि बिमारी होने पर स्वास्थ्य में जल्दी सुधार नहीं होता तो, तरह-तरह की चिंता और मानसिक तनाव होना साधारण बात हैं। कि स्वास्थ्य में सुधार कब आयेगा?, कब उत्तम स्वास्थ्य लाभ होगा?, स्वास्थ्य लाभ होगा या नहीं?, इत्यादि प्रश्न उठ खड़े हो जाते हैं।

मनुष्य की इसी चिंताको दूर करने के लिए हजारों वर्ष पूर्व भारतीय ज्योतिषाचार्यों ने प्रश्न कुंडली के माध्यम से ज्ञात करने की विद्या हमें प्रदान की है।

जिस के फल स्वरूप किसी भी व्यक्ति के स्वास्थ्य से संबंधित प्रश्नों का ज्योतिषी गणनाओं के माध्यम से सरलता से समाधान किया जा सकता है!

प्रश्न कुंडली के माध्यम से स्वास्थ्य से संबंधित जानकारी प्राप्त करने हेतु सर्व प्रथम प्रश्न कुंडली में रोगी के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के योग हैं या नहीं यह देख लेना अति आवश्यक है।

आपके मार्गदर्शन हेतु यहां विशेष योग से आपको अवगत करवा रहे हैं।

लग्न में स्थित ग्रह या लग्नेश से रोग मुक्ति के योग।

- यदि लग्न में बलवान ग्रह स्थित हो तो रोगी को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ देते हैं।
- प्रश्न कुंडली में यदि लग्ने (लग्न का स्वामी ग्रह) और दशमेश (दशम भाव का स्वामी ग्रह) मित्र हो तो रोगी को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ देते हैं।
- प्रश्न कुंडली में चतुर्थेश (चतुर्थ भाव का स्वामी ग्रह) और सप्तमेश (सप्तम भाव का स्वामी ग्रह) के बीच मित्रता हो तो शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के योग बनते हैं।
- यदि लग्नेश (लग्न का स्वामी ग्रह) का चन्द्र के साथ संबंध हो और चन्द्र शुभ ग्रहों से युक्त या द्रष्ट हो या केन्द्र में स्थित हो तो शीघ्र स्वास्थ्य लाभ होता है।
- यदि कुंडली में लग्नेश (लग्न का स्वामी ग्रह) और चन्द्र शुभ ग्रहों से युक्त या द्रष्ट होकर केन्द्र में स्थित हो और सप्तमेश वक्री न हो एवं अष्टम भाव के स्वामी ग्रह से प्रभाव मुक्त हो तो शीघ्र स्वास्थ्य लाभ होता है।

चन्द्रमा से रोग मुक्ति के योग

- यदि चन्द्र स्वराशि या उच्च राशि में बलवान हो कर किसी शुभ ग्रह से युक्त हो या द्रष्ट हो तो रोगी को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ होते देखा गया है।



- यदि प्रश्न कुंडली में यदि चन्द्र चर राशि अर्थात् द्विस्वभाव राशि में स्थित हो कर लग्न या लग्नेश से द्रष्ट हो तो शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की संभावना प्रबल होती हैं।
- यदि चन्द्र स्वराशि से चतुर्थ या दशम भाव में स्थित हो तो शीघ्र स्वास्थ्य लाभ होने के योग बनते हैं।
- प्रश्न कुंडली में शुभ ग्रहो से द्रष्ट चन्द्र या सूर्य लग्न में, चतुर्थ या सप्तम भाव में स्थित हो तो शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के योग बनते हैं।

प्रश्न कुंडली के माध्यम से स्वास्थ्य लाभ में विलम्ब होने के योग देख लेना भी आवश्यक होता है।

स्वास्थ्य लाभ में विलंब होने के योग

- सधारणतः जातक में षष्ठम भाव व षष्ठेश से रोग को देखा जाता है।
- प्रश्न कुंडली में यदि लग्नेश और दशमेश के बीच अथवा चतुर्थेश और सप्तमेश ग्रहो के बीच में शत्रुता हो तो रोग बढने की संभावनाएँ अधिक होती हैं और स्वास्थ्य लाभ में विलम्ब हो सकता है।
- प्रश्न कुंडली में यदि षष्ठेश अष्टमेश अथवा द्वादशेश के साथ युति या द्रष्टी संबंध बनाता हो तो स्वास्थ्य लाभ की संभावना अधिक कम होती हैं और स्वास्थ्य लाभ में विलम्ब हो सकता है।
- प्रश्न कुंडली में यदि लग्न मे चन्द्र या शुक्र की स्थित हो तो रोग शीघ्र पीछा नहीं छोडता।
- प्रश्न कुंडली में यदि लग्नेश एवं मंगल की किसी ही भाव में युति हो तो स्वास्थ्य लाभ में विलम्ब हो सकता है।
- यदि लग्नेश द्वादश भाव मे स्थित हो तो रोगी देर से रोगमुक्त होने की संभावनाएँ होती हैं।
- यदि लग्नेश षष्ठम, अष्टम भाव मे स्थित हो और अष्टमेश केन्द्र मे स्थित हो तो रोग शीघ्र दूर नहीं होते।

यदि प्रश्न कुंडली में स्वास्थ्य लाभ में विलंब होने के योग बन रहे हो तो चिंतित होने के बजाय शास्त्रोक्त उपाय इत्यादि करना लाभदायक सिद्ध होता है। एसी स्थिति में विद्वानो के मत से महामृत्युंजय मंत्र-यंत्र का प्रयोग शीघ्र रोग मुक्ति हेतु रामबाण होता है।

प्रश्न कुंडली का अध्ययन करते समय यह योग भी देखले की रोगी को उचित उपचार प्राप्त हो रहा है या नहीं।

रोग का उचित उपचार होने के योग हैं या नहीं!

- प्रश्न कुंडली में प्रथम, पंचम, सप्तम एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह हों और चन्द्रमा कमजोर या पाप ग्रह से पीडित हों तो रोग का उपचार कठिन हो जाता है।
- यदि चन्द्रमा बलवान हो और 1, 5, 7 एवं 8 भाव में शुभ ग्रह स्थित हों तो उपचार से रोग का दूर होना संभव हो पाता है।
- यदि प्रश्न कुंडली में तृतीय, षष्ठम, नवम एवं एकादश भाव में शुभ ग्रह स्थित हों तो उपचार के बाद ही रोग से मुक्ति मिलती है।
- यदि प्रश्न कुंडली में सप्तम भाव में शुभ ग्रह स्थित हों और सप्तमांश बलवान हों तो रोग का उपचार संभव होता है।



- यदि प्रश्न कुंडली में चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह स्थित से भी ज्ञात हो सकता है कि रोगी को दवाईयों से उचित लाभ प्राप्त होगा या नहीं।

प्रश्न कुंडली देखते समय शरीर के विभिन्न अंगों पर ग्रहों के प्रभाव एवं बिमारीयों को जानना भी आवश्यक होता है।

ज्योतिषी सिद्धांतों के अनुसार कुंडली के बारह भाव शरीर के विभिन्न अंगों को दर्शाते हैं।

- ❖ प्रथम भाव : सिर, मस्तिष्क, स्नायु तंत्र.
- ❖ द्वितीय भाव : चेहरा, गला, कंठ, गर्दन, आंख.
- ❖ तीसरा भाव : कंधे, छाती, फेफड़े, श्वास, नसे और बाहें.
- ❖ चतुर्थ भाव : स्तन, ऊपरी आन्त्र, ऊपरी पाचन तंत्र
- ❖ पंचम भाव : हृदय, रक्त, पीठ, रक्तसंचार तंत्र.
- ❖ षष्ठम भाव : निम्न उदर, निम्न पाचन तंत्र, आतें, अंतडियाँ, कमर, यकृत.
- ❖ सप्तम भाव : उदरीय गुहिका, गुर्दे.
- ❖ अष्टम भाव : गुप्त अंग, स्त्रावी तंत्र, अंतडियां, मलाशय, मूत्राशय और मेरुदण्ड.
- ❖ नवम भाव : जोंघें, नितम्ब और धमनी तंत्र.
- ❖ दशम भाव : घुटने, हडियां और जोड़.
- ❖ एकादश भाव : टांगे, टखने और श्वास.
- ❖ द्वादश भाव : पैर, लसीका तंत्र और आंखे.

प्रश्न कुण्डली में रोग से संबंधित भाव

- ❖ प्रश्न ज्योतिष के अनुसार प्रश्न कुंडली में लग्न स्थान चिकित्सक भाव होता है। अतः शुभ ग्रह प्रश्न कुंडली के लग्न में शुभ ग्रह की स्थिति से ज्ञात होता है कि रोगी को किसी कुशल चिकित्सक की सलाह प्राप्त हो रही है या होगी।
- ❖ यदि अशुभ ग्रह स्थित हो तो समझले की रोगी को किसी कुशल चिकित्सक की आवश्यकता है।
- ❖ प्रश्न ज्योतिष के अनुसार प्रश्न कुंडली में चतुर्थ स्थान उपचार और औषधियों अर्थात् दवाईयों का स्थान है। चतुर्थ भाव में यदि शुभ ग्रह या शुभ ग्रहों की दृष्टि या युति हो तो समझे की रोग सामान्य उपचार से शीघ्र ठीक हो सकता है।
- ❖ कुंडली में छठा एवं सातवां भाव रोग का स्थान होता है।
- ❖ कुंडली में दशम भाव रोगी का माना जाता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुंडली में षष्ठम एवं सप्तम भाव पर शुभ ग्रहों का प्रभाव हो और षष्ठेश और सप्तमेश निर्बल हों तो स्वास्थ्य लाभ धीरे धीरे होने का संकेत मिलता है।

नोट: प्रश्न कुंडली का विश्लेषण सावधानी से करना उचित रहता है। विद्वानों के अनुसार प्रश्न कुंडली का विश्लेषण करते समय संबंधित भाव एवं भाव के स्वामी ग्रह अर्थात्: भावेश एवं भाव के कारक ग्रह को ध्यान में रखते हुए आंकलन कर किया गया विश्लेषण स्पष्ट होता है। प्रश्न कुंडली का फलादेश करते समय हर छोटी छोटी बातों का ख्याल रखना आवश्यक होता है अन्यथा विश्लेषण किये गये प्रश्न का उत्तर स्टिक नहीं होता।



प्रश्न कुण्डली से परिजनो के स्वास्थ्य लाभ के योग

चिंतन जोशी, स्वस्तिक.ऐन.जोशी

सामान्यतः ज्योतिष शास्त्र के अनुशार कुण्डली में स्वास्थ्य का सम्बन्ध लग्न से होता है क्योंकि ज्योतिष में लग्न को शरीर माना गया है।

- ❖ इस लिए उत्तम स्वास्थ्य के लिए लग्न व लग्नेष की स्थिति बहुत महत्वपूर्ण होती है।
- ❖ उत्तम स्वास्थ्य का कारक ग्रह सूर्य एवं मन का कारक चन्द्र माने जाते हैं यदि सूर्य और चन्द्र दोनो उत्तम स्थिति में हों तो तो प्रश्न कर्ता से संबंधित व्यक्ति अथवा प्रियजन के पूर्णतः स्वस्थ रहने के योग प्रबल हो जाते हैं।
- ❖ यदि सूर्य और चन्द्र दोनो ग्रहों में से किसी के भी कमजोर होने पर उस ग्रह से सम्बन्धित सुख का अभाव होता है।
- ❖ ज्योतिष में षष्ठम (छठा) भाव रोग स्थान कहा जाता है। इस लिये प्रश्न कुण्डली में भी रोग का विचार भी षष्ठम (छठा) भाव से करना चाहिए।
- ❖ उपरोक्त ग्रहों में से किसी के भी कमजोर होने पर उस ग्रह से सम्बन्धित सुख का अभाव होता है।
- ❖ विद्वानो के मतानुशार असाध्य रोग जैसे की मधुमेह (शुगर), कैंसर, एड्स इत्यादी गम्भीर बीमारियों की श्रेणी में आते हैं और इन असाध्य रोगो की उत्पत्ति के कारक ग्रह विशेष रूप से मंगल, शनि, राहू व केतु माने जाते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न और लग्नेश कमजोर स्थिति में हो और उपरोक्त अशुभ ग्रहों के विशेष प्रभाव से लग्न और लग्नेश पीडित हो तो गंभीर रोग से ग्रस्त होने की संभावना प्रबल हो जाती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न और लग्नेश और अन्य अशुभ ग्रह (मंगल, शनि, राहू व केतु) सामान्य स्थिति में हो! तो स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, प्रश्न कर्ता को किसी प्रकार की कोई गंभीर व असाध्य रोग होने की संभावना कम होती है। किसी बड़ी लापरवाही के कारण स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है अतः व्यक्ति को स्वास्थ्य सुख में वृद्धि के लिए अपने मन और इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना चाहिए। स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालने वाली वस्तुओं से दूर रहना चाहिए और संयम का पालन करने से व्यक्ति गंभीर रोग से मुक्त रहेगा।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा षष्ठम भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो, रोगी के स्वास्थ्य में जल्दी ही सुधार होने की संभावना बनती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा लग्नको सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो, रोगी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और रोगी निश्चित ही मानसिक रूप से भी मजबूत रहने की संभावना बनती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या षष्ठम (छठा) भाव में कोई शुभ ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो, तो रोगी के स्वास्थ्य के प्रति विशेष चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है यदि रोगी किसी छोटे-मोटे रोग से पीडित है तो, ग्रहों की यह स्थिति उसके भाग्य को बहुत ही बलवान बनाती है और दर्शाती है की उसे थोड़े ही दिनों में उपयुक्त चिकित्सा से अवश्य स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हो जायेगा है और यह ग्रह संकेत देता है कि रोगी को किसी गंभीर या असाध्य रोग से पीडित नहीं होना पड़ेगा।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो, तो रोगी का भाग्य को बहुत ही बलवान रहता है। जिससे रोगी का स्वास्थ्य भी बहुत ही अच्छा रहने की संभावना बनती है, और रोगी के



- स्वास्थ्य के प्रति अधिक चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न में कोई ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो, तो रोगी का स्वास्थ्य बहुत ही उत्तम रहेगा। उसे किसी गंभीर रोग से ग्रस्त नहीं होना पड़ेगा। यदि आपको अपने प्रियजन के स्वास्थ्य से लेकर मन में अगर किसी प्रकार की आशंका है तो चिकित्सक से मिलकर इसका निवारण करलें व्यर्थ का वहम मन में नहीं पालें।
 - ❖ लग्न से स्वास्थ्य, सेहत, शरीर, दादी, नाना एवं व्यक्ति की स्थिति का पता लगाया जा सकता है।
 - ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न अशुभ प्रभाव में होने के कारण कमजोर स्थिति में हो, तो इस प्रकार की स्थिति के कारण व्यक्ति की इच्छापूर्ति में बाधा का संकेत मिलता है। इस लिए रोगी के स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना चाहिए। रोगी के अस्वस्थ होने पर घबराएं नहीं बल्कि तुरंत चिकित्सक से सम्पर्क कर उचित ईलाज और परहेज से उसके स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है। उक्त ग्रह स्थिति होने पर रोगी के स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही बिल्कुल भी नहीं करें।

प्रियजन के स्वास्थ्य सम्बन्धित प्रश्न

आपरेशन करवाना ठीक रहेगा या नहीं?

कुछ लोगों की जीवन में अनेकों बार एसी स्थिति आजाती है की उनका या उनके किसी प्रियजन का स्वास्थ्य आकस्मिक रूप से बिगड़ने लगता है। कुछ बीमारियों का दावाइयों और परहेज से ठीक होना संभव है लेकिन कुछ बीमारियों में आपरेशन कराना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। तो लोगो के मन में प्रश्न उठने स्वाभाविक होते हैं की क्या इस आपरेशन से बीमारी पूर्णतः ठीक हो जायेगी? क्या इस समय आपरेशन करवाना ठीक रहेगा?

- ❖ जिस प्रकार कुण्डली में रोग के लिए षष्ठम भाव को देखा जाता है। उसी प्रकार किसी भी प्रकार के अस्रोपचार अर्थात आपरेशन का कारक मंगल ग्रह होता है। इस लिए आपरेशन से संबंधित विचार करने से पूर्व मंगल ग्रह की स्थिति का सूक्ष्म अवलोकन अवश्य कर लेना चाहिए।
- ❖ आपरेशन से पूर्व प्रश्न कुण्डली में आयु भाव अर्थात अष्टम भाव का भी आंकलन अवश्य कर लेना चाहिए।
- ❖ प्रश्न कुण्डली में लग्न/लग्नेश बलवान स्थिति में हों, छठे भाव पर भी शुभ ग्रह का प्रभाव हो और आयु स्थान भी शुभ ग्रहों के प्रभाव में हो तो ही आपरेशन के लिए समय उत्तम होता है। विद्वानों के मतानुसार ग्रहों की विपरीत स्थिति होने पर **आपात काल** को छोड़कर आपरेशन नहीं करवाना चाहिए।
- ❖ क्योंकि अबतक हुवे शोध के आधार पर विद्वानों का अनुभव रहा है की शुभ ग्रह स्थिति इत्यादी का सूक्ष्म अवलोकन कर के शुभ परिस्थिति होने पर किया गया आपरेशन पूरी तरह सफल होता है जिससे रोगी को निश्चित रूप से स्वास्थ्य लाभ मिलता है, रोगी को विशेष तकलीफ नहीं होती और आपरेशन में किसी प्रकार का व्यवधान और परेशानी नहीं होती है।

विशेष नोट: यदि ग्रहों की विपरीत स्थिति हो तो चिकित्सक से मिलकर उचित सलाह-मशवरा कर के इस दिशा में कदम उठाने चाहिए।

गणेश लक्ष्मी यंत्र: प्राण-प्रतिष्ठित गणेश लक्ष्मी यंत्र को अपने घर-दुकान-ओफिस-फैक्टरी में पूजन स्थान, गल्ला या अलमारी में स्थापित करने व्यापार में विशेष लाभ प्राप्त होता है। यंत्र के प्रभाव से भाग्य में उन्नति, मान-प्रतिष्ठा एवं व्यापार में वृद्धि होती है एवं आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। गणेश लक्ष्मी यंत्र को स्थापित करने से भगवान गणेश और देवी लक्ष्मी का संयुक्त आशीर्वाद प्राप्त होता है। **Rs.550 से Rs.8200 तक**



दादाजी के स्वास्थ्य सम्बन्धित प्रश्न:

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार कुण्डली में दादाजी कि स्थिति जानने के लिए सप्तम भाव का आकलन किया जाता है। इस लिए प्रश्न कुण्डली में भी दादाजी के स्वास्थ्य का विचार करते समय सप्तम से षष्ठम भाव अर्थात दादाजी का रोग स्थान द्वादश भाव से देखा जाता हैं। दादाजी का रोग कारक मंगल ग्रह है। इस लिए उक्त ग्रहों एवं भावों का सूक्ष्म अवलोकन करके अन्य रोग कार स्थिति पत विस्तृत जांच कर किसी निर्णय पर पहुंचे।

दादीजी के स्वास्थ्य सम्बन्धित प्रश्न:

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार कुण्डली में दादीजी कि स्थिति जानने के लिए लग्न का आकलन किया जाता है। इस लिए प्रश्न कुण्डली में भी दादीजी के स्वास्थ्य का विचार करते समय लग्न से षष्ठम भाव से दादाजी का रोग देखा जाता हैं। दादीजी का रोग कारक मंगल ग्रह है। इस लिए उक्त ग्रहों एवं भावों का सूक्ष्म अवलोकन करके अन्य रोग कार स्थिति पत विस्तृत जांच कर किसी निर्णय पर पहुंचे।

पिता के स्वास्थ्य सम्बन्धित प्रश्न:

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार कुण्डली में पिता कि स्थिति जानने के लिए दशम भाव का आकलन किया जाता है। इस लिए प्रश्न कुण्डली में भी पिता के स्वास्थ्य का विचार करते समय दशम से षष्ठम भाव अर्थात पिता का रोग स्थान तृतीय भाव से देखा जाता हैं। पिता का रोग कारक मंगल ग्रह है। इस लिए उक्त ग्रहों एवं भावों का सूक्ष्म अवलोकन करके अन्य रोग कार स्थिति पत विस्तृत जांच कर किसी निर्णय पर पहुंचे।

माता के स्वास्थ्य सम्बन्धित प्रश्न:

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार कुण्डली में माता कि स्थिति जानने के लिए चतुर्थ भाव का आकलन किया

जाता है। इस लिए प्रश्न कुण्डली में भी माता के स्वास्थ्य का विचार करते समय चतुर्थ से षष्ठम भाव अर्थात माता का रोग स्थान नवम भाव से देखा जाता हैं। माता का रोग कारक मंगल ग्रह है। इस लिए उक्त ग्रहों एवं भावों का सूक्ष्म अवलोकन करके अन्य रोग कार स्थिति पत विस्तृत जांच कर किसी निर्णय पर पहुंचे।

चाचा के स्वास्थ्य सम्बन्धित प्रश्न:

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार कुण्डली में चाचा कि स्थिति जानने के लिए द्वादश भाव का आकलन किया जाता है। इस लिए प्रश्न कुण्डली में भी चाचा के स्वास्थ्य का विचार करते समय द्वादश से षष्ठम भाव अर्थात चाचा का रोग स्थान पंचम भाव से देखा जाता हैं। चाचा का रोग कारक मंगल ग्रह होता है। इस लिए चाचा के स्वास्थ्य का विचार करते समय द्वादश से षष्ठम भाव में शुभ ग्रह स्थिति हो और मंगल भी शुभ स्थिति में हो, तो चाचा के स्वास्थ्य में तेजी से सुधार होता है। यदि उक्त ग्रह और भाव पीडित अवस्था में होने पर चाचा को स्वास्थ्य के सम्बन्ध में परेशानी का सामना करना पड़ सकता हैं।

चाची के स्वास्थ्य सम्बन्धित प्रश्न:

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार कुण्डली में चाची कि स्थिति जानने के लिए षष्ठम भाव का आकलन किया जाता है। इस लिए प्रश्न कुण्डली में भी चाचा के स्वास्थ्य का विचार करते समय षष्ठम से षष्ठम भाव अर्थात चाची का रोग स्थान एकादश भाव से देखा जाता हैं। चाची का रोग कारक मंगल ग्रह होता है। इस लिए चाची के स्वास्थ्य का विचार करते समय षष्ठ से षष्ठम भाव अर्थात एकादश भाव में शुभ ग्रह स्थिति हो और मंगल भी शुभ स्थिति में हो, तो चाची के स्वास्थ्य में तेजी से सुधार होता है। यदि उक्त ग्रह और भाव पीडित अवस्था में होने पर चाची को स्वास्थ्य के सम्बन्ध में परेशानी का सामना करना पड़ सकता हैं।



संतान के स्वास्थ्य सम्बन्धित प्रश्न:

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार कुण्डली में संतान कि स्थिति जानने के लिए पंचम भाव का आकलन किया जाता है। इस लिए प्रश्न कुण्डली में भी संतान के स्वास्थ्य का विचार करते समय पंचम से षष्ठम भाव अर्थात संतान का रोग स्थान दशम भाव से देखा जाता हैं। पंचम भाव का कारक ग्रह बृहस्पति और संतान का रोग कारक मंगल ग्रह है। इस लिए उक्त ग्रहों एवं भावों का सूक्ष्म अवलोकन करके अन्य रोग कार स्थिति पत विस्तृत जांच कर किसी निर्णय पर पहुंचे।

बड़े भाई के स्वास्थ्य सम्बन्धित प्रश्न:

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार कुण्डली में बड़े भाई कि स्थिति जानने के लिए एकादश भाव का आकलन किया जाता है। इस लिए प्रश्न कुण्डली में भी बड़े भाई के स्वास्थ्य का विचार करते समय एकादश से षष्ठम भाव अर्थात बड़े भाई का रोग स्थान चतुर्थ भाव से देखा जाता हैं। एकादश भाव का कारक ग्रह बृहस्पति हैं और बड़े भाई का रोग कारक मंगल ग्रह है। इस लिए उक्त ग्रहों एवं भावों का सूक्ष्म अवलोकन करके अन्य रोग कार स्थिति पत विस्तृत जांच कर किसी निर्णय पर पहुंचे।

बड़ी बहिन के स्वास्थ्य सम्बन्धित प्रश्न:

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार कुण्डली में बड़ी बहिन कि स्थिति जानने के लिए एकादश भाव का आकलन किया जाता है। इस लिए प्रश्न कुण्डली में भी बड़ी बहिन के स्वास्थ्य का विचार करते समय एकादश से षष्ठम भाव अर्थात बड़ी बहिन का रोग स्थान चतुर्थ भाव से देखा जाता हैं। एकादश भाव का कारक ग्रह बृहस्पति हैं और बड़ी बहिन का रोग कारक मंगल ग्रह है। इस लिए उक्त ग्रहों एवं भावों का सूक्ष्म अवलोकन करके अन्य रोग कार स्थिति पत विस्तृत जांच कर किसी निर्णय पर पहुंचे।

छोटे भाई/बहिन के स्वास्थ्य सम्बन्धित प्रश्न:

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार कुण्डली में छोटे भाई/बहिन कि स्थिति जानने के लिए तृतीय भाव का आकलन किया जाता है। इस लिए प्रश्न कुण्डली में भी छोटे भाई/बहिन के स्वास्थ्य का विचार करते समय तृतीय से षष्ठम भाव अर्थात छोटे भाई/बहिन का रोग स्थान अष्टम भाव से देखा जाता हैं। छोटे भाई/बहिन का रोग कारक मंगल ग्रह है। इस लिए उक्त ग्रहों एवं भावों का सूक्ष्म अवलोकन करके अन्य रोग कार स्थिति पत विस्तृत जांच कर किसी निर्णय पर पहुंचे।

पत्नी के स्वास्थ्य सम्बन्धित प्रश्न:

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार कुण्डली में पत्नी कि स्थिति जानने के लिए सप्तम भाव का आकलन किया जाता है। इस लिए प्रश्न कुण्डली में भी पत्नी के स्वास्थ्य का विचार करते समय सप्तम से षष्ठम भाव अर्थात पत्नी का रोग स्थान द्वादश भाव से देखा जाता हैं। पत्नी का रोग कारक मंगल ग्रह है। इस लिए उक्त ग्रहों एवं भावों का सूक्ष्म अवलोकन करके अन्य रोग कार स्थिति पत विस्तृत जांच कर किसी निर्णय पर पहुंचे।

नानाजी के स्वास्थ्य सम्बन्धित प्रश्न:

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार कुण्डली में नानाजी कि स्थिति जानने के लिए लग्न का आकलन किया जाता है। इस लिए प्रश्न कुण्डली में भी नानाजी के स्वास्थ्य का विचार करते समय लग्न से षष्ठम भाव से नानाजी का रोग देखा जाता हैं। नानाजी का रोग कारक मंगल ग्रह है। इस लिए उक्त ग्रहों एवं भावों का सूक्ष्म अवलोकन करके अन्य रोग कार स्थिति पत विस्तृत जांच कर किसी निर्णय पर पहुंचे।

**अपनी जन्म कुंडली से समस्याओं
का समाधान जानिये मात्र RS:- 450**

**संपर्क करें: Call us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785,**



नानीजी के स्वास्थ्य सम्बन्धित प्रश्न:

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार कुण्डली में नानीजी कि स्थिति जानने के लिए सप्तम भाव का आकलन किया जाता है। इस लिए प्रश्न कुण्डली में भी नानीजी के स्वास्थ्य का विचार करते समय सप्तम से षष्ठम भाव अर्थात नानीजी का रोग स्थान द्वादश भाव से देखा जाता हैं। नानीजी का रोग कारक मंगल ग्रह है। इस लिए उक्त ग्रहों एवं भावों का सूक्ष्म अवलोकन करके अन्य रोग कार स्थिति पत विस्तृत जांच कर किसी निर्णय पर पहुंचे।

मामा के स्वास्थ्य सम्बन्धित प्रश्न:

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार कुण्डली में मामा कि स्थिति जानने के लिए षष्ठम भाव का आकलन किया जाता है। इस लिए प्रश्न कुण्डली में भी मामा के स्वास्थ्य का विचार करते समय षष्ठम से षष्ठम भाव अर्थात मामा का रोग स्थान एकादश भाव से देखा जाता हैं। मामा का रोग कारक मंगल ग्रह होता है। इस लिए उक्त ग्रहों एवं भावों का सूक्ष्म अवलोकन करके अन्य रोग कार स्थिति पत विस्तृत जांच कर किसी निर्णय पर पहुंचे।

मामी के स्वास्थ्य सम्बन्धित प्रश्न:

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार कुण्डली में मामी कि स्थिति जानने के लिए द्वादश भाव का आकलन किया जाता है। इस लिए प्रश्न कुण्डली में भी मामी के स्वास्थ्य का विचार करते समय द्वादश से षष्ठम भाव अर्थात मामी का रोग स्थान पंचम भाव से देखा जाता हैं। मामी का रोग कारक मंगल ग्रह होता है। इस लिए उक्त ग्रहों एवं भावों का सूक्ष्म अवलोकन करके अन्य रोग कार स्थिति पत विस्तृत जांच कर किसी निर्णय पर पहुंचे।

मौसा के स्वास्थ्य सम्बन्धित प्रश्न:

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार कुण्डली में मौसा कि स्थिति जानने के लिए द्वादश भाव का आकलन किया जाता है। इस लिए प्रश्न कुण्डली में भी मौसा के स्वास्थ्य का विचार करते समय द्वादश से षष्ठम भाव अर्थात मौसा का रोग स्थान पंचम भाव से देखा जाता हैं। मौसा का रोग कारक मंगल ग्रह होता है। इस लिए उक्त ग्रहों एवं भावों का सूक्ष्म अवलोकन करके अन्य रोग कार स्थिति पत विस्तृत जांच कर किसी निर्णय पर पहुंचे।

दुर्गा बीसा यंत्र

शास्त्रोक्त मत के अनुशार दुर्गा बीसा यंत्र दुर्भाग्य को दूर कर व्यक्ति के सोये हुवे भाग्य को जगाने वाला माना गया हैं। दुर्गा बीसा यंत्र द्वारा व्यक्ति को जीवन में धन से संबंधित संस्याओं में लाभ प्राप्त होता हैं। जो व्यक्ति आर्थिक समस्यासे परेशान हों, वह व्यक्ति यदि नवरात्रों में प्राण प्रतिष्ठित किया गया दुर्गा बीसा यंत्र को स्थापि कर लेता हैं, तो उसकी धन, रोजगार एवं व्यवसाय से संबंधी सभी समस्याओं का शीघ्र ही अंत होने लगता हैं। नवरात्र के दिनों में प्राण प्रतिष्ठित दुर्गा बीसा यंत्र को अपने घर-दुकान-ओफिस-फैक्टरी में स्थापित करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं, व्यक्ति शीघ्र ही अपने व्यापार में वृद्धि एवं अपनी आर्थिक स्थिती में सुधार होता देखेंगे। संपूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य दुर्गा बीसा यंत्र को शुभ मुहूर्त में अपने घर-दुकान-ओफिस में स्थापित करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

मूल्य: Rs.730 से Rs.10900 तक

**GURUTVA KARYALAY: Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785,
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,**



प्रश्न कुण्डली में रोग में मंगल की भूमिका

श्रेया.एस.जोशी

ज्योतिष में छठे भाव का कारक मंगल ग्रह को माना जाता है। मंगल को रोग का भीकारक माना जाता है। ज्योतिष के विद्वानों ने अपने अनुभवों में पाया है कि यदि मंगल छठे भाव में स्थित हो, तो व्यक्ति को स्वास्थ्य सम्बन्धी अशुभ परिणाम प्राप्त होते हैं।

मंगल के छठे भाव में होने से व्यक्ति के जीवन में उत्पन्न होने वाले रोग को लेकर भारतीय ज्योतिष के जानकारों एवं विद्वानों के निजी अनुभव एवं शोध के कारण उनके मतों में अन्तर देखने को मिलता है।

❖ यदि प्रश्न कुण्डली में छठे भाव में शुभ ग्रह स्थित हो या शुभ ग्रह की दृष्टि छठे भाव पड़ रही हो तो यह

व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होती है। शुभ ग्रह की स्थिति या दृष्टि छठे भाव होने से रोग का शमन होता है।

- ❖ ठीक इससे विपरीत यदि अशुभ ग्रह स्थित हो या अशुभ ग्रह की दृष्टि छठे भाव पड़ रही हो तो यह स्थिति रोग में वृद्धि कर देने वाली होती है।
- ❖ कुछ विद्वानों एवं ग्रंथकारों ने मंगल को शुभ ग्रह माना है। यदि छठे भाव में शुभ ग्रह मंगल स्थित होने से रोग का कारण क्या है यह प्रश्न सहज रूप से उत्पन्न होता है?
- ❖ लेकिन इस विषय में कुछ विद्वानों एवं ग्रंथकारों का

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योंकि यह अत्यन्त शुभ फलदायी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यंत्रों से अधिक से अधिक लाभ देने में समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर में होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फलदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होती है। "श्री यंत्र" में समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने में समर्थ होती है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफलता से सफलता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन में समस्त भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण करने में समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि में न्यूनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है।

गुरुत्व कार्यालय में "श्री यंत्र" 12 ग्राम से 2250 Gram (2.25Kg) तक कि साइज में उपलब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 9.10 से Rs.28.00

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: <http://gk.yolasite.com/> and <http://gurutvakaryalay.blogspot.com/>



मत भिन्न हैं उन्होंने ने मंगल को अशुभ ग्रह माना हैं और उनका तो यहां तक कहना हैं की मंगल शुभ हो या अशुभ चाहे किसी भी स्थान में बैठा हो वह उस स्थान का नाश करता हैं। उनके मत से यह कारण हैं छठे भाव में मंगल से रोग उत्पन्न होने के पीछे !

- ❖ अन्य एक मत से समझे तो ज्योतिषी सिद्धान्त के अनुसार त्रिकभाव अर्थात 6,8,12 वें भाव में किसी ग्रह के स्थित होने से वह ग्रह के स्वामीत्व वाले भाव की हानि करता हैं। सरल भाषा में समझे तो त्रिकभाव अर्थात 6,8,12 वें भाव में जिस भाव का स्वामी चला जाता है उस भाव की हानि होती हैं।
- ❖ जन्म कुण्डली या प्रश्न कुण्डली में रोग भाव का सूक्ष्म अध्ययन करना अति आवश्यक होता हैं। इस लिए ग्रहों के अतिरिक्त नक्षत्र भी रोग की स्थिति दर्शाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- ❖ यदि लग्न और लग्नेश तथा छठे भाव और षष्ठेश का राहू के स्वामीत्व नक्षत्र आर्द्रा, स्वाति और शतभिषा तथा केतु के स्वामीत्व वाले नक्षत्र अश्वनी, मघा, मूल प्रभावित करें, अर्थात त्रिकभाव अर्थात 6,8,12 भाव एवं ग्रहों का उक्त नक्षत्रों से किसी भी प्रकार से सम्बन्ध होने पर व्यक्ति गंभीर रोग अथवा असाध्य रोग जैसे की मधुमेह (शुगर), कैंसर, एड्स इत्यादी से पीड़ित होता हैं।
- ❖ कुछ जानकारों का यहां तक मानना हैं की यदि लग्न और लग्नेश पीड़ित अथवा कमजोर स्थिति में हों तो

व्यक्ति की आसाध्य रोग के कारण मृत्यु भी संभव होती हैं। भारतीय ज्योतिष के अन्य सिद्धान्त के अनुसार यदि किसी एक त्रिकभाव का स्वामी दूसरे त्रिकभाव भाव में स्थित हो तो यह स्थिति विपरीत राजयोग बनाती हैं।

- ❖ उक्त सिद्धान्त के अनुसार यदि छठे भाव का स्वामी अष्टम भाव में स्थित हो, तो यह स्थिति रोग से मुक्ति का संकेत देती हैं अर्थात इस स्थिति में व्यक्ति को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त मिलता हैं।
- ❖ इसी प्रकार यदि अष्टम भाव का स्वामी द्वादश भाव में स्थित हो, तो यह स्थिति व्यक्ति की आयु को बढ़ाने वाली होती हैं अर्थात व्यक्ति दिर्घायु को प्राप्त होता हैं।
- ❖ कुछ अन्य ज्योतिषी का मत इससे भिन्न हैं, उनका मानना हैं की सूर्य और चन्द्र को छोड़ कर सभी ग्रह दो-दो राशियों के स्वामी होते हैं।
- ❖ इस कारण यदि अन्य ग्रहों की एक राशि त्रिकभाव में पड़ती हो, और दूसरी राशि त्रिक स्थान से बाहर पड़ती हो, तो इससे विपरीतराजयोग बनता हैं।
- ❖ विपरीत राजयोग होने से भी जिस भाव में ग्रह की दूसरी राशि होती है उस भावकी हानि हो जाती हैं।
- ❖ इस लिए जन्म कुण्डली या प्रश्न कुण्डली का अवलोकन करते समय रोग के सम्बन्ध में अत्यन्त सूक्ष्म अवलोकन करके ही फलादेश करना चाहिए उचित होता हैं।

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

हत्था जोड़ी- Rs- 370

सियार सिंगी- Rs- 370

बिल्ली नाल- Rs- 370

घोड़े की नाल- Rs.351

दक्षिणावर्ती शंख- Rs- 550

मोति शंख- Rs- 550

माया जाल- Rs- 251

इन्द्र जाल- Rs- 251

धन वृद्धि हकीक सेट Rs-251

GURUTVA KARYALAY

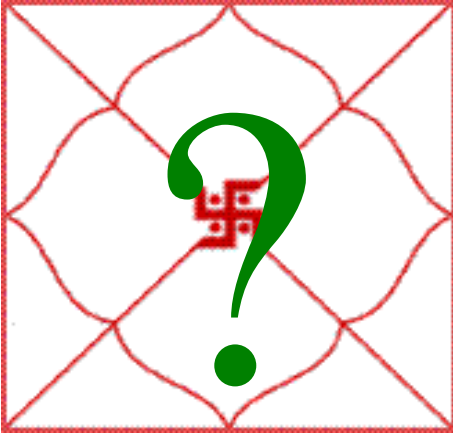
Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com



प्रश्न ज्योतिष से जाने विद्या प्राप्ति के योग

चिंतन जोशी



ज्योतिष शास्त्र में कुण्डली के पंचम भाव को महत्वपूर्ण माना जाता है। क्योंकि पंचम भाव जातक के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। क्योंकि पंचम भाव शिक्षा, बुद्धि और ज्ञान का भाव है, जिससे जातक के जीवन की दिशा निर्धारित होती है। ज्योतिष में पंचम भाव को त्रिकोण स्थान भी कहा जाता है। पंचम भाव को ज्योतिष में बहुत ही शुभ माना गया है। जातक के शिक्षा से सम्बन्ध में भी विचार पंचम भाव से ही किया जाता है। इस लिए प्रश्न ज्योतिष या प्रश्न कुंडली से शिक्षाका आंकलन करने हेतु भी पंचम भाव ही प्रमुख माना गया है।

प्रश्न ज्योतिष में शिक्षा का आंकलन करने हेतु लग्न में स्थित ग्रह एवं लग्नेश की स्थिति, पंचम भाव में स्थित ग्रह एवं पंचमेश की स्थिति तथा शिक्षा के कारक ग्रह बुध एवं बृहस्पति की स्थिति से विद्या का आंकल किया जासकता है।

प्रश्न कुंडली में लग्न, लग्नेश, पंचम भाव, पंचमेश, बुध और बृहस्पति यदि शुभ ग्रहों के साथ हो या शुभ ग्रहों से द्रष्ट हो तो शिक्षा के संबंधित कार्यों में बड़ी सफलता अवश्य मिलती है।

प्रश्न कुंडली में लग्न, लग्नेश, पंचम भाव, पंचमेश, बुध और बृहस्पति यदि कमजोर स्थिति में हों या या अशुभ ग्रहों से युक्त या द्रष्टी के कारण पीडित हो, तो शिक्षा संबंधित कार्यों में रूकावटों का सामना करना पड सकता है।

प्रश्न कुंडली का विश्लेषण करते समय अन्य शुभ, अशुभ ग्रहों का दृष्टि या युति संबंध एवं संबंधित ग्रह के मित्र एवं शत्रु ग्रहों का उनपर प्रभाव देखना भी अति आवश्यक होता है।

नोट: ज्योतिष शास्त्रों के अनुशार लग्न के साथ में भाव कारक भी बदल जाते हैं। इस लिए प्रश्न कुंडली का विश्लेषण सावधानी से करना उचित रहता है। विद्वानों के अनुशार प्रश्न कुंडली का विश्लेषण करते समय संबंधित भाव एवं भाव के स्वामी ग्रह अर्थात: भावेश एवं भाव के कारक ग्रह को ध्यान में रखते हुए आंकलन कर किया गया विश्लेषण स्पष्ट होता है। प्रश्न कुंडली का फलादेश करते समय हर छोटी छोटी बातों का ख्याल रखना आवश्यक होता है अन्यथा विश्लेषण किये गये प्रश्न का उत्तर स्टिक नहीं होता।

शिक्षा से संबंधित समस्या

क्या आपके लड़के-लड़की की पढ़ाई में अनावश्यक रूप से बाधा-विघ्न या रूकावटें हो रही हैं? बच्चों को अपने पूर्ण परिश्रम एवं मेहनत का उचित फल नहीं मिल रहा? अपने लड़के-लड़की की कुंडली का विस्तृत अध्ययन अवश्य करवाले और उनके विद्या अध्ययन में आनेवाली रूकावट एवं दोषों के कारण एवं उन दोषों के निवारण के उपायों के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करें।

GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785, Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com



प्रश्न ज्योतिष से जानिए विद्या प्राप्ति में ग्रहों की भूमिका

चिंतन जोशी

- ❖ यदि लग्न और पंचम भाव में कोई शुभ ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो, लग्न और पंचम भाव में ग्रहों के उच्च राशि में उपस्थिति के कारण शिक्षा प्राप्ति में किसी प्रकार की विशेष बाधा आने की संभावना नहीं बनती है। शिक्षा प्राप्ति हेतु तत्पर रह कर एकाग्र चित से विद्याध्ययन करने से शिक्षा पूरी होगी।
- ❖ यदि प्रश्न कुंडली में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित होकर पंचम भाव को अपनी सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो, तो शिक्षा के विषय में यह स्थिति शुभ मानी जाती है। इस ग्रह स्थिति से शिक्षा में किसी प्रकार की बाधा नहीं आती है।
- ❖ प्रश्न कुंडली में शैक्षणिक स्थिति जानने हेतु कुण्डली में पंचम भाव का विश्लेषण किया जाता है। पंचम भाव के कारक ग्रह बृहस्पति जो व्यक्ति की शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इसलिए पंचम भाव, पंचमेश तथा बृहस्पति शुभ स्थिति में हो और इन सबका लग्न और लग्नेश से शुभ सम्बन्ध स्थापित होता हो तो व्यक्ति की शिक्षा बिना किसी विशेष अड़चन से चलती रहती है, उसकी शिक्षा प्राप्ति में किसी प्रकार की परेशानी नहीं आती है।

विभिन्न ग्रहों की पंचम भाव में स्थिती से शिक्षा विचचार?

सूर्य पंचम भाव में

यदि प्रश्न कुंडली में सूर्य पंचम भाव में स्थित हों, तो सूर्य की यह स्थिति शिक्षा के लिए बहुत उत्तम संकेद दर्शाती है। पंचम भाव का सूर्य व्यक्ति को शिक्षा के हर क्षेत्र में सहयोग प्रदान करने वाला होता है। इस स्थिति

में व्यक्ति जिस विषय में रुचि रखता है उसमें सफलता प्राप्त कर लेता है।

चन्द्रमा पंचम भाव में

यदि प्रश्न कुंडली में पांचवे भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो यह व्यक्ति को बहुत से विषयों में भाग्यशाली बनाता है। विशेष कर व्यक्ति का रुझान कलाक्षेत्र की तरफ हो विशेष रूप से हो सकता है।

मंगल पंचम भाव में

यदि प्रश्न कुंडली में पांचवे भाव में मंगल स्थित हो तो यदि मंगल उपयुक्त राशि और ग्रहों के प्रभाव में स्थित हो तो यह व्यक्ति को अत्याधिक भाग्यशाली बनाता है। यदि मंगल अशुभ स्थिती में कमजोर अवस्था में होतो यह व्यक्ति को विद्याअध्ययन में विभिन्न तरह की समस्याएं संभव हैं। पंचम मंगल होने पर यह व्यक्ति का रुझान चिकित्सा, रसायन, इंजीनियरिंग इत्यादि क्षेत्र की ओर अधिक रहता है।

बुध पंचम भाव में

यदि प्रश्न कुंडली में पंचम भाव में बुध ग्रह स्थित हो, तो व्यक्ति गणित, वाणिज्य, पत्रकारिता, मीडिया व कम्प्यूटर से सम्बन्धित विषयों में अधिक रुचि रखता है। जिस व्यक्ति की कुण्डली में बुध मजबूत होता है वह इन विषयों के साथ अपनी पढ़ाई कूशलता से पूर्ण करलेता है।

गुरु पंचम भाव में

यदि प्रश्न कुंडली में पंचम भाव में गुरु ग्रह स्थित हो, तो यह स्थिती व्यक्ति को अति गुणी और भाग्यशाली



बनाती हैं। कोयोकिं पंचम भाव में गुरु अति शुभ प्रभाव देता है। यदि वृहस्पति शुभ ग्रहों के प्रभाव में हो तो शिक्षा उत्तम रहती है। इससे विपरित यदि वृहस्पति अशुभ ग्रहों के प्रभाव में हो तो शिक्षा के विषय में अधिक भाग्य शाली नहीं बनाता है।

शुक्र पंचम भाव में

यदि प्रश्न कुंडली में पंचम भाव में शुक्र ग्रह स्थित हो, तो व्यक्ति कि रुचि मनोरंजन या रचनात्मक शिक्षा के क्षेत्र में अधिक होती है। पंचम भाव में शुक्र प्रेम संबंधों के कारण शिक्षा में अवरोध या बाधा का कारण भी बन सकता है। अतः पंचम भाव में शुक्र स्थित होने वाले व्यक्ति को शिक्षा अध्ययन के दौरान अति सचेत और सावधान रहना चाहिए। यदि शुक्र पर किसी शुभ ग्रह का प्रभाव अधिक न हो और पाप ग्रहों का प्रभाव अधिक हो तो व्यक्ति को प्रेम प्रसंग के कारण उन पर जुठे आरोप लग सकते हैं जिस कारण शिक्षा में अवरोध एवं समाज में बदनामी से सम्मुखिन होना पड़ सकता है।

शनि पंचम भाव में

यदि प्रश्न कुंडली में पंचम भाव में शनि स्थित हो तो, यह स्थिति व्यक्ति को रहस्यमयी विषयों में रुचि लेने हेतु

प्रेरित करती है। जिस कारण व्यक्ति दर्शनशास्त्र, विदेशी भाषा एवं तकनीकी विषयों के अध्ययन में निपूण हो सकता है।

राहू पंचम भाव में

यदि प्रश्न कुंडली में पंचम भाव में राहू स्थित हो तो, यह स्थिति शिक्षा प्राप्ति के लिए उपयुक्त नहीं मानी जाती है। इस ग्रह स्थिति के कारण व्यक्ति की विद्या प्राप्ति में विघ्न-बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। पंचम राहू गूढ रहस्यमय विषयों जैसे मंत्र, तंत्र इत्यादि की शिक्षा हेतु प्रेरित करता है। यदि कोई शुभ ग्रह पंचम भाव में स्थित हो या किसी शुभ ग्रह की दृष्टि पंचम भाव हो, तो परिस्थिति में परिवर्तन संभव है।

केतु पंचम भाव में

यदि प्रश्न कुंडली में पंचम भाव में केतु स्थित हो तो, व्यक्ति को मन लगाकर अपनी पढ़ाई करनी अति आवश्यक होती है। अन्यथा मन भटकने की संभावनाएं अधिक प्रबल रहती हैं। कोयोकिं पंचम केतु होने पर शिक्षा के क्षेत्र में जो भी परिणाम आएगा वह केवल व्यक्ति की मेहनत व लगन पर ही निर्भर होगा।

श्री यंत्र

गुरुत्व कार्यालय में पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" 500 ग्राम, 750 ग्राम, 1000 ग्राम और 1250 ग्राम, 2250 ग्राम साइज़ में केवल लिमिटेड स्टॉक उपलब्ध हैं। श्री यंत्र के संबंध में अधिक जानकारी के लिए कार्यालय में संपर्क करें।

"श्री यंत्र" 12 ग्राम से 1250 ग्राम तक कि साइज़ में उपलब्ध है।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,



विद्या प्राप्ति से जुड़े अन्य महत्वपूर्ण योग

चिंतन जोशी, स्वस्तिक.ऐन.जोशी

हर माता-पिता अपने बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा देकर उनके जीवन को संवारने का हर संभव प्रयास करते हैं। किंतु अक्सर देखने में आता है कि सारे प्रयासों के बावजूद बच्चों की शिक्षा में तरह-तरह की बाधाएं आती रहती हैं। संभवतः यह बाधाएं और रुकावटें शिक्षा प्राप्ति हेतु उपयुक्त मार्ग न चुने जाने के कारण हो रही हो हैं। यदि बच्चे की जन्मपत्री या जन्म दिनांक और समय की जानकारी न होने पर बच्चे के लिए शिक्षा प्राप्ति हेतु कौनसा विकल्प उपयुक्त रहेगा यह प्रश्न ज्योतिष से जाना जा सकता है।

इसलिए यहां विद्या अध्ययन से जुड़े बच्चे की जीवन के कुछ महत्वपूर्ण पहलू जांचने और उससे जुड़े ग्रह योग के प्रभाव से आपको अवगत करवाया जा रहा है। जिससे बच्चे के अभिभावक यह सरलता से ज्ञात कर सकें कि बच्चे को शिक्षा प्राप्ति के इस रास्ते में भविष्य में किसी विशेष परेशानियों से सम्मुखित होना पड़ेगा या नहीं।

यदि उस रास्ते में रुकावटें या असफलता के योग हो तो बच्चे की शिक्षा प्राप्ति का अन्य माध्यम चुनना चाहिए। जिसमें उसे कम से कम दिक्कतों का सामना करना पड़े और अधिक सफलता प्राप्त होकर वह शिक्षा उसके जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। क्योंकि कुछ बार ऐसा हो जाता है, कि बच्चे या उसके अभिभावक एक दूसरे के बच्चों को देखकर शिक्षा प्राप्ति का ऐसा मार्ग चूने लेते हैं जिसमें ना तो बच्चे की रुचि नहीं होती, जिस का फल यह निकलता है उस मार्ग से शिक्षा प्राप्ति में बच्चे को उपयुक्त सफलता नहीं मिलती या असफलता से सम्मुखित होना पड़ सकता है।

इस लिए प्रश्न ज्योतिष के माध्यम से विद्या प्राप्ति के विशेष योगों का अध्ययन करते समय उससे जुड़े सभी महत्वपूर्ण पहलूओं को अवश्य जांच ले या किसी कृशाल

प्रश्न ज्योतिष विशेषज्ञ से संपर्क करें अथवा गुरुत्व कार्यालय में संपर्क कर हमारे अनुभवी प्रश्न ज्योतिष विशेषज्ञ से शिक्षा प्राप्ति से जुड़े प्रश्नों कि जांच करवा कर उपयुक्त मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

विदेश में शिक्षा प्राप्ति के योग

- ❖ प्रश्न कुंडली में विदेश का विचार नवम भाव से किया जाता है, इसी के साथ ही चतुर्थ भाव जो कि निवास स्थान का भाव है उसका भी सूक्ष्म अध्ययन करना अति आवश्यक होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुंडली में चर राशि का लग्न हो या चतुर्थ अथवा नवम भाव में चर राशि स्थित हो तथा लग्नेश भी चर राशि में ही स्थित हो उसी के साथ में गुरु (बृहस्पति) भी बलवान् स्थिती में हो, तो व्यक्ति के विदेश में रहकर उत्तम शिक्षा ग्रहण करने के योग बनते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुंडली में लग्नेश अथवा चतुर्थश अथवा नवमेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो, तो विदेश जाकर शिक्षा प्राप्त करने के प्रबल योग बनते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुंडली में लग्न अथवा चतुर्थ अथवा नवम भाव में कोई ग्रह अपनी उच्च राशि में स्थित हो, तो भी विदेश जाकर शिक्षा प्राप्त करने के योग बनते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुंडली में लग्नेश, चतुर्थश और नवमेश का आपस में शुभ सम्बन्ध हो, तो विदेश जाकर उच्चस्तरीय शिक्षा प्राप्त करने की संभावना प्रबल रहती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुंडली में चन्द्रमा चतुर्थ भाव अथवा नवम भाव को अपनी सप्तम दृष्टि से देखकर बल प्रदान कर रहा हो तो व्यक्ति के विदेश जाकर शिक्षा ग्रहण करने की प्रबल संभावना होती है।



- ❖ यदि विदेश जाने के योग बलवान हो लेकिन शिक्षा प्राप्ति के योग कम बलवान हो, तो विदेश में शिक्षा प्राप्ति की संभावना बहुत ही कम हो जाती हैं। एसी स्थिति में विदेश में शिक्षा प्राप्त करने में ग्रहों की बाध्यता व्यक्ति को परेशान कर सकती हैं। इसलिए व्यक्ति के लिए यही अच्छा रहेगा की वह स्वदेश में रहकर ही उच्च शिक्षा प्राप्त करने का प्रयास करें, जिससे उसे निश्चित सफलता मिल सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में उपरोक्त स्थिति अधिक बलवान नहीं हो, तो विदेश में शिक्षा प्राप्ति का योग प्रबल नहीं बनता है। यदि बनता भी है तो अल्प समय के लिये या शिक्षा अधूरी रह जाती है।
- ❖ यदि विदेश में शिक्षा के कारक ग्रह शुभ स्थान में बलवान स्थिति में हो, अशुभ ग्रहों का प्रभाव उन पर और संबंधित भाव नहीं हो और प्रश्न कुण्डली में शिक्षा के योग भी उत्तम हो, तो व्यक्ति उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करने में सफल रहते हैं। व्यक्ति के लिए विदेश जाकर उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त करना सफल होगा, यदि विदेश में शिक्षा प्राप्ति के मार्ग में अगर बाधाएं भी आएंगी तो, व्यक्ति की इच्छा पूर्ति के लिए ईश्वर से भी सहाता मिलने के पूरे योग बनेंगे। इसलिए प्रयासरत रह कर अपने लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ते रहे।

उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्ति के योग

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित होकर पंचम भाव को सप्तम दृष्टि देख रहा हो, उसे बल प्रदान कर रहा हो तो, यह ग्रह स्थिति शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही अच्छी स्थिति है। इस योग से व्यक्ति को उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त होने के पूर्ण योग बनते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न, लग्नेश, पंचम भाव या पंचमेश में से किसी भी कोई एक ग्रह अपनी उच्च

राशि में स्थित हो तो, इस योग से व्यक्ति उच्च उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सफल रहते हैं।

- ❖ यदि यदि प्रश्न कुण्डली में उपरोक्त भाव एवं ग्रह कमजोर स्थिति में हों तथा इन पर पाप ग्रहों का प्रभाव हो तो व्यक्ति को, शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है।
- ❖ जिस प्रकार ज्योतिष में शिक्षा के लिए पंचम भाव को देखा जाता है, और पंचम भाव का कारक बृहस्पति भी महत्वपूर्ण स्थान होता है, उसी प्रकार शिक्षा की पूर्णता के लिए लग्न और लग्नेश का बलवान होना भी अति आवश्यक है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में पंचम भाव, पंचमेश तथा बृहस्पति शुभ स्थिति में हो, तथा इनका लग्न या लग्नेश से शुभ सम्बन्ध स्थापित हो तो व्यक्ति को निश्चित रूप से उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त होती है।
- ❖ उपरोक्त भाव एवं ग्रह कमजोर स्थिति में हों तथा इन पर पापी ग्रहों का प्रभाव हो तो व्यक्ति को शिक्षा के क्षेत्र में बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

नौकरी करते हुए शिक्षा प्राप्ति के योग

- ❖ नौकरी करते हुए शिक्षा पूरी करने के योग जानने के लिए प्रश्न कुण्डली में लग्न, पंचम भाव, दशम भाव का सूक्ष्म निरीक्षण करना आवश्यक होता है।
- ❖ यदि में प्रश्न कुण्डली में लग्न, पंचम भाव, दशम भाव में कोई ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो, तो इस ग्रह स्थिति के कारण व्यक्ति को नौकरी करते हुए शिक्षा पूरी करने में सफलता मिल सकती है।
- ❖ पंचम भाव को शिक्षा का घर कहा जाता है इसलिए शिक्षा का विचार पंचम भाव से किया जाता है। व्यक्ति की शिक्षा कैसी होगी यह पंचम भाव के कारक बृहस्पति की स्थिति से ज्ञात किया जाता है, नौकरी के लिए दशम भाव को देखा जाता है। इस लिए पंचम भाव, पंचमेश, दशम भाव, दशमेश एवं बृहस्पति शुभ स्थिति में हो और इनका लग्न या लग्नेश से



शुभ सम्बन्ध हो, तो नौकरी करते हुए भी व्यक्ति की शिक्षा का स्तर उच्च होती का होता है।

- ❖ यदि नौकरी करते हुए शिक्षा प्राप्ति हेतु कारक ग्रह और भाव पाप प्रभाव में हों तो नौकरी करते हुए शिक्षा प्राप्ति में उत्तम परिणाम मिलने के योग अनुकूल नहीं माने जा सकते। एसी स्थिति में शिक्षा के मार्ग में बाधाएं बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं, क्योंकि कुण्डली में स्थित ग्रहों की स्थिति अच्छी नहीं है। ग्रहों के अशुभ स्थिति में होने से शिक्षा के मार्ग में कई प्रकार की परेशानियां आसकती हैं। जिसके कारण व्यक्ति को शिक्षा अथवा नौकरी के बीच में किसी एक का चुनाव करना पड़ सकता है। ऐसे व्यक्ति के लिए नौकरी करते हुए शिक्षा पूरी कर पाना कठिन हो सकता है।
- ❖ प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा पंचम भाव या दशम भावको सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो, तो शुभ प्रभाव के कारण नौकरी करते हुए शिक्षा पूरी करने में व्यक्ति सफल होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश, पंचमेश और दशमेश का आपस में शुभ सम्बन्ध हो तो व्यक्ति नौकरी करते हुए अपनी शिक्षा पूरी करने में सफल होता है।

विदेशी भाषा की शिक्षा प्राप्ति के योग

- ❖ जिस प्रकार कुण्डली में पंचम भाव से शिक्षा से सम्बन्धित विचार किया जाता है और ज्योतिष में शनि, राहू और केतु को विदेशी भाषा के कारक ग्रह माने जाते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में विदेशी भाषा के कारक ग्रह शनि, राहू और केतु का पंचम भाव या पंचमेश अथवा लग्न या लग्नेश से शुभ सम्बन्ध हो, तो व्यक्ति को निश्चित रूप से विदेशी भाषा सीखने में सफलता प्राप्त होती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश व पंचमेश का उच्च राशि में या दोनों के आपस में शुभ सम्बन्ध हो, तो इस

योग के शुभ प्रभाव से व्यक्ति विदेशी भाषा का ज्ञान प्राप्त करने में सफल रहते हैं।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न व पंचम भाव में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो, तो व्यक्ति को विदेशी भाषा प्राप्त हो सकता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में उपरोक्त भाव एवं ग्रह कमजोर स्थिति में हो, तो व्यक्ति की विदेशी भाषा सीखने की इच्छा अधूरी रहती है या कई प्रकार की कठिनाईयों और कष्ट से व्यक्ति विदेशी भाषा अधूरी ही सीख पाता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा पंचम भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो, तो यह योग व्यक्ति को विदेशी भाषा का ज्ञान प्राप्त करने में विशेष रूप से सहायक सिद्ध हो सकता है।

परीक्षा में सफलता प्राप्ति के योग

- ❖ परीक्षा में सफल प्राप्त होगी या नहीं इस का विचार पंचम भाव से किया जाता है। परीक्षा में सफल के लिए शिक्षा के कारक ग्रह बुध और बृहस्पति की स्थिति अत्याधिक महत्वपूर्ण होती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न, लग्नेश, पंचम भाव और पंचमेश तथा कारक बुध एवं बृहस्पति बलवान स्थिति में हो, तो व्यक्ति को परीक्षा में सफलता मिलती है। यदि उपरोक्त भाव एवं ग्रह की स्थिति इससे विपरीत हो, तो व्यक्ति को परीक्षा में असफलता मिलने की संभावना आधिक रहती है। एसी अवस्था में हताशा, निराशा, लापरवाही और चंचलता को त्यागकर परीक्षा में सफलता के लिए व्यक्ति को कठिन परिश्रम करना होगा।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश और पंचमेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो, तो परीक्षा में सफलता मिलने के योग उत्तम रहते हैं।



- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश और पंचमेश पर कमजोर अथवा पीड़ित ग्रहों का प्रभाव पड़ रहा है तो प्रतिकूल परिणाम संभव है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित हो कर पंचम भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर बल प्रदान कर रहा हो, तो व्यक्त को परीक्षा में सफलता मिलती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में सभी कारक ग्रह एवं भाव शुभ स्थिति में और बलवान स्थिति में हो तो व्यक्ति को उच्च श्रेणी की सफलता या उच्च क्रमांक की प्राप्ति होने के प्रबल योग बनते हैं।

शिक्षा सम्बन्धी कारोबार सफलता प्राप्ति के योग

- ❖ जिस प्रकार कुण्डली में शिक्षा से सम्बन्धित विषयों में सफलता के लिए पंचम भाव पंचम भाव का कारक बृहस्पति की स्थिति को देखा जाता है और व्यवसाय के लिए सप्तम भाव को देखा जाता है। इस के अलावा शिक्षा सम्बन्धी कारोबार में सफलता के लिए लग्न/लग्नेश का बलवान होना भी आवश्यक होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली पंचम भाव, पंचमेश, सप्तम भाव, सप्तमेश एवं बृहस्पति शुभ स्थिति में हो और उनका शुभ सम्बन्ध लग्न/लग्नेश से हो तो व्यक्ति को शिक्षा सम्बन्धी कारोबार में लाभ के अच्छे योग बनते हैं।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में उपरोक्त भाव व ग्रह कमजोर स्थिति में हों तथा इन पर पापी ग्रहों का प्रभाव हो तो शिक्षा सम्बन्धी कारोबार में सफलता मिलने की संभावना अधिक प्रबल नहीं होती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा पंचम भाव या सप्तम भाव को भाव को सप्तम दृष्टि से देख रहा हो और उसे प्रदान कर रहा हो, तो शुभ ग्रह स्थिति से शिक्षा सम्बन्धी कारोबार में व्यक्ति सफलता के आसमान को छूता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश, पंचमेश और सप्तमेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो, तो शिक्षा सम्बन्धी कारोबार करने से व्यक्ति को अत्याधिक लाभ की प्राप्ति के योग बनते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न, पंचम और सप्तम भाव में ग्रह उच्च राशि में स्थित हो, तो शिक्षा सम्बन्धी कारोबार करने से व्यक्ति को विशेष लाभ की प्राप्ति के योग बनते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश, पंचमेश और सप्तमेश का आपस में शुभ सम्बन्ध हो, तो शिक्षा सम्बन्धी कारोबार करने पर व्यक्ति को विशेष सफलता मिलने की प्रबल संभावना होती है।

विद्या प्राप्ति हेतु सरस्वती कवच और यंत्र

आज के आधुनिक युग में शिक्षा प्राप्ति जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। हिन्दू धर्म में विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती को माना जाता है। बच्चों की बुद्धि को कुशाग्र एवं तीव्र हो, बच्चों की बौद्धिक क्षमता और स्मरण शक्ति का विकास हो इस लिए सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक हो सकता है।

सरस्वती कवच को देवी सरस्वती के परम दुर्लभ तेजस्वी मंत्रों द्वारा पूर्ण मंत्रसिद्ध और पूर्ण चैतन्ययुक्त किया जाता है। जिसे जो बच्चे मंत्र जप अथवा पूजा-अर्चना नहीं कर सकते वह विशेष लाभ प्राप्त कर सकें और जो बच्चे पूजा-अर्चना करते हैं, उन्हें देवी सरस्वती की कृपा शीघ्र प्राप्त हो इस लिये सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक होता है।

सरस्वती कवच : मूल्य: 460 और 550

सरस्वती यंत्र : मूल्य : 370 से 1900 तक

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call Us - 9338213418, 9238328785

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com



प्रश्न ज्योतिष और यात्रा के योग

चिंतन जोशी

छोटी दूरी की यात्रा के योग

- ❖ प्रश्न ज्योतिष के अनुशार छोटी दूरी की यात्राओं का अवलोकन करने के लिए तृतीय भाव को देखा जाता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के तृतीय भाव में चर राशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) हों तो यह योग यात्रा के लिए अति उत्तम होता है। इसके अलावा छोटी दूरी की यात्रा के लिए तृतीयेश एवं यात्रा के कारक ग्रह चन्द्रमा की स्थिति भी अति महत्व का स्थान रखती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में यात्रा से सम्बन्धित ग्रह और भाव शुभ प्रभाव में हों तो यात्रा सदैव लाभप्रद होती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में उक्त ग्रह एवं भावों की स्थिति पाप पीडित हों तो यात्रा कम लाभप्रद या नुकसानदेह होती है। एसी अवस्था में विशेष परिस्थितियों को छोड़कर व्यक्ति को ग्रह शुभ स्थिति में आने तक यात्रा को टाल दें तो उत्तम रहता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा नवम भाव में स्थित हो और तृतीय भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हों तो व्यक्ति की छोटी दूरी यात्रा लाभप्रद होती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश और तृतीय भाव का शुभ सम्बन्ध हो व अन्य ग्रह भी शुभ स्थिति में हो तो यह छोटी दूरी यात्रा के लिए शुभ संकेत देता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो यात्रा से सम्बन्धित अन्य ग्रह और भाव शुभ स्थिति में हो तो छोटी दूरी यात्रा व्यक्ति को उत्तम लाभ प्रदान करती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो यात्रा से सम्बन्धित अन्य ग्रह और

भाव शुभ स्थिति में हो तो छोटी दूरी यात्रा व्यक्ति को उत्तम लाभ प्रदान करती है।

हवाई यात्रा के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में हवाई यात्रा से सम्बन्धित विचार करने में बृहस्पति एवं शनि की स्थिति महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न, लग्नेश शुभ प्रभाव में बलवान स्थिति में हो तो व्यक्ति को हवाई यात्रा में किसी तरह के कष्ट या परेशानी से सामना नहीं करना पड़ेगा।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न, अष्टम या नवम भाव में मिथुन, तुला या कुम्भ राशि स्थित हो और बृहस्पति या शनि इन स्थानों में स्थित हो तो व्यक्ति के लिए हवाई यात्रा अत्यंत लाभकारी रहती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश और नवमेश का शुभ सम्बन्ध स्थापित हो रहा हों तो व्यक्ति की हवाई यात्रा लाभकारी रहती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा तृतिया भाव में स्थित हो कर नवम भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर बल प्रदान कर रहा हो तो व्यक्ति को हवाई यात्रा में किसी तरह की परेशानी नहीं होती। यात्रा सुखदायक पूर्ण होती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश/नवमेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो और अन्य योग भी अनुकूल हो तो यात्रा लाभप्रद होती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में हवाई यात्रा से सम्बन्धित भाव और ग्रह बृहस्पति व शनि पाप प्रभाव से पीडित हो तो व्यक्ति को हवाई यात्रा के दौरान कई प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इस लिए



अति आवश्यक नहीं हो तो व्यक्ति को हवाई जहाज से यात्रा करने का विचार ग्रह स्थिति सुधरने तक त्याग देना चाहिए।

जलयात्रा के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में जलयात्रा से सम्बन्धित विचार अष्टम भाव से किया जाता है। ज्योतिष में जलयात्रा का कारक ग्रह चन्द्रमा होता है।
- ❖ यदि कुण्डली में लग्न, लग्नेश, अष्टम भाव, अष्टमेश और चन्द्रमा शुभ होकर बलवान् स्थिति में हो तो व्यक्ति कि लिए जलयात्रा निश्चितरूप से लाभकारी रहती है।
- ❖ यदि कुण्डली में लग्न, लग्नेश, अष्टम भाव, अष्टमेश और चन्द्रमा अशुभ होकर पाप ग्रहों के प्रभाव में हो तो व्यक्ति कि लिए जलयात्रा विशेष लाभकारी नहीं रहती है।
- ❖ यदि कुण्डली में लग्नेश, अष्टमेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो और अन्य ग्रह स्थिति अनुकूल हो तो व्यक्ति के लिए जलयात्रा लाभप्रद होती है।
- ❖ यदि कुण्डली के लग्न या अष्टम भाव में ग्रह अपनी उच्च राशि में स्थित हो एवं अन्य ग्रह स्थिति अनुकूल हो तो व्यक्ति के लिए जलयात्रा लाभप्रद होती है।
- ❖ यदि कुण्डली में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित होकर अष्टम भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर बल प्रदान कर रहा हो तो व्यक्ति के लिए जलयात्रा लाभदायक रहती है।

यात्रा में लाभ के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में यात्रा के दौरान लाभ होगा या नहीं इससे सम्बन्धित विचार एकादश भाव से किया जाता है। चर लग्न हों तो यह योग यात्रा के लिए अति उत्तम होता है और लग्नेश भी यदि चर राशि में

स्थित हो तो यह स्थिति अति उत्तम लाभ प्राप्ति का संकेत देती है।

- ❖ प्रश्न कुण्डली में एकादश भाव, एकादशेश, लग्न, लग्नेश का आपस में शुभ सम्बन्ध बन रहा हो और ग्रहों का प्रभाव भी शुभ हो तो व्यक्ति को यात्रा में अवश्य लाभ की प्राप्ति होती है।
- ❖ प्रश्न कुण्डली में एकादश भाव, एकादशेश, लग्न, लग्नेश आशुभ ग्रहों के प्रभाव में हो तो व्यक्ति को यात्रा में विशेष लाभ की प्राप्ति नहीं होती है।
- ❖ प्रश्न कुण्डली में लग्नेश व एकादशेश का आपस में शुभ सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो व्यक्ति के लिए यात्रा लाभप्रद ही होती है।
- ❖ प्रश्न कुण्डली में लग्नेश व एकादशेश अपनी उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति के लिए यात्रा लाभप्रद ही होती है।
- ❖ प्रश्न कुण्डली के लग्न या एकादश भाव में ग्रह अपनी उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति के लिए यात्रा लाभप्रद ही होती है।
- ❖ प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित हो और एकादश भाव को सप्तम दृष्टि से देख कर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो यात्रा में व्यक्ति को निश्चित रूप से लाभ प्राप्त होने के प्रबल योग बनते हैं।

विदेश यात्रा

- ❖ प्रश्न कुण्डली में विदेश का विचार नवम भाव से किया जाता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या लग्नेश व चतुर्थ भाव या चतुर्थेश का सम्बन्ध नवम भाव से होता है तो व्यक्ति को विदेश यात्रा का अवसर अवश्य प्राप्त होता है।
- ❖ यदि लग्न या चतुर्थ भाव में चर राशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) हों तो व्यक्ति जीवन में विदेश यात्रा अवश्य करता है।



- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न या चतुर्थ भाव में चर राशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) हो और उस पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो व्यक्ति के जीवन में विदेश यात्रा का मौका शीघ्र आता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में विदेश यात्रा से सम्बन्धित ग्रह एवं भाव पाप प्रभाव में हो और शुभ ग्रहों के प्रभाव से वन्धित हो तो व्यक्ति को विदेश यात्रा जाने में कई बाधाएं आएंगी जिसके कारण उसका ख्वाब अधूरा रह सकता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा तृतीय भाव से नवम भाव को सप्तम दृष्टि से देख कर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो व्यक्ति के जीवन में विदेश यात्रा का मौका जल्द प्राप्त होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश या नवमेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति अधिक भाग्यवान हो जाता है, जिससे व्यक्ति को जीवन में विदेश यात्रा का अवसर अवश्य मिलता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश एवं नवमेश का आपस में शुभ सम्बन्ध हो तो व्यक्ति के विदेश यात्रा पर जाने के योग निश्चित रूप से बनते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न एवं नवम भाव में ग्रह अपनी उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति के विदेश यात्रा पर जाने के योग निश्चित रूप से बनते हैं।

विदेश में निवास

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्नेश या द्वादशेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति का भाव्य अधिक

बलवान होता है और विवाह के पश्चात् व्यक्ति के विदेश में निवास करने के योग बनते हैं।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्नेश या द्वादशेश अपनी नीच राशि में स्थित हो या अशुभ ग्रहों के प्रभाव में हो तो व्यक्ति के विदेश में निवार करने के ख्वाब अधूरे रह जाते हैं या विदेश में व्यक्ति को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है

सरकारी यात्रा

- ❖ प्रश्न कुण्डली में सरकारी क्षेत्र का विचार दशम भाव से किया जाता है। सूर्य को सरकारी क्षेत्र का कारक ग्रह माना जाता है। यात्रा का विचार नवम भाव से किया जाता है। सरकारी यात्रा का विचार करते समय लग्न या लग्नेश का बलवान होने अति आवश्यक होता है अन्यथा व्यक्ति को सरकारी यात्रा में विशेष लाभ की प्राप्ति होने में संदेह रहता है या लाभ की प्राप्ति नहीं होती।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में नवम भाव और दशम भाव का युति या दृष्टि संबंध हो तो व्यक्ति को सरकारी यात्रा से निश्चित लाभ मिलने के योग बनते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश उच्च राशि में स्थित हो या लग्न में कोई ग्रह उच्च राशि का स्थित हो तो व्यक्ति को सरकारी यात्रा में लाभ प्राप्त हो सकता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में स्थित होकर दशम भाव को सप्तम दृष्टि से देख कर बल प्रदान कर रहा हो तो सरकारी यात्रा लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

प्रश्न कुण्डली से अपने किसी भी प्रश्नों का स्टिक उत्तर प्राप्त किजिए।

क्या आप अत्याधुनिक ज्योतिष प्रणाली से अपने भविष्य से संबंधित प्रश्नों का स्टिक उत्तर प्राप्त करना चाहते हैं तो आप गुरुत्व कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं। हमारे प्रश्न ज्योतिष विशेषज्ञ आपके द्वारा पूछे गये प्रश्न का ग्रहों के आधार पर उनकी सूक्ष्म गणना कर उसके स्टिक फलादेश से आपको अवगत कराने का प्रयास करेंगे। 3 प्रश्न मात्र :550

GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785, Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com



सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और नवग्रहों के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दुःख-दारिद्र्य का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन में सभी प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार में वृद्धि होती है और यदि नौकरी करता होतो उसमें उन्नति होती है।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण करता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता है।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर मां महा सदा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता है। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रूप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)-धैरीय लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रूपों का अशीर्वाद प्राप्त होता है।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाएँ दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियों का कोई कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्ष्या-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावों से रक्षाहोती है।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानियों से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता है। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नहीं बिगड सकते।

अन्य कवच के बारे में अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करें:

किसी व्यक्ति विशेष को **सर्व कार्य सिद्धि कवच** देने नहीं देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित है।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call Us - 9338213418, 9238328785

Our Website:- <http://gk.yolasite.com/> and <http://gurutvakaryalay.blogspot.com/>

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)



पत्रिका सदस्यता (Magazine Subscription)

आप हमारी मासिक पत्रिका निशुल्क प्राप्त करें।

यदि आप गुरुत्व ज्योतिष मासिक पत्रिका अपने ई-मेल पते पर प्राप्त करना चाहते हैं! तो आपना ई-मेल पता नीचे दर्ज करें या इस लिंक पर क्लिक करें **[GURUTVA JYOTISH](#)** Groups yahoo के साथ जुड़ें.

If You Like to Receive Our GURUTVA JYOTISH Monthly Magazine On Your E-mail, Enter Your E-mail Below or Join **[GURUTVA JYOTISH](#)** Groups yahoo



[Click to join gurutvajyotish](#)

आप हमारे साथ जुड सकते हैं।

आप हमारे साथ विभिन्न सामाजिक नेटवर्किंग साइट के माध्यम से भी जुड सकते हैं।

हमारे साथ जुडने के लिए संबंधित लिंक पर क्लिक करें।

We Are Also @

- [Google Group](#)
- [Google Plus](#)
- [Yahoo Group](#)
- [Orkut Community](#)
- [Twitter](#)
- [Facebook](#)
- [Wordpress](#)
- [Scribd](#)

उत्पाद सूची

आप हमारे सभी उत्पादों की सूची एक साथ देख सकते हैं और डाउनलोड कर सकते हैं।

मूल्य सूची डाउनलोड करने के लिए कृपया इस लिंक पर क्लिक करें। [Link](#)

Please click on the link to download Price List. [Link](#)

हमारी सेवाएं

आप हमारी सभी भुगतान सेवाएं की जानकारी एवं सेवा शुल्क सूची की जानकारी देख सकते और डाउनलोड कर सकते हैं।

मूल्य सूची डाउनलोड करने के लिए कृपया इस लिंक पर क्लिक करें। [Link](#)

Please click on the link to download Price List. [Link](#)



प्रश्न ज्योतिष और धन से संबंधित योग

चिंतन जोशी, स्वस्तिक.ऐन.जोशी, दिपक.ऐस.जोशी

आर्थिक स्थिति का आंकलन

- ❖ प्रश्न कुण्डली से आर्थिक स्थिति का विचार द्वितीय भाव, द्वितीयेश, एकादश भाव व एकादशेश की स्थिति से किया जाता है। धन का कारक बृहस्पति ग्रह होता है। आर्थिक स्थिति मजबूत होने के लिए प्रश्न कुण्डली में सम्बन्धित भाव के साथ-साथ बृहस्पति, लग्न और लग्नेश का बलवान होना अति आवश्यक होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में बृहस्पति के अलावा अन्य सम्बन्धित भाव एवं ग्रह शुभ प्रभाव में हो तो व्यक्ति कि आर्थिक स्थिति मजबूत होती है। व्यक्ति को आने वाले समय में उत्तम मात्रा में धन लाभ प्राप्त होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में बृहस्पति के अलावा अन्य सम्बन्धित भाव एवं ग्रह अशुभ एवं पाप प्रभाव में हो तो व्यक्ति कि आर्थिक स्थिति कमजोर होती है। व्यक्ति को आने वाले समय में धन हानी होने की सम्भावना होती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में सम्बन्धित भाव और ग्रह सामान्य स्थिति में हो तो व्यक्ति अपनी आवश्यकता के अनुसार धन कमा लेता है। लेकिन आने वाले कुछ

समय तक बहुत अधिक मात्रा में धन प्राप्ति की सम्भावना कम ही रहती है।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश का द्वितीयेश अथवा एकादशेश से शुभ सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो यह व्यक्ति की आर्थिक स्थिति उत्तम होने का संकेत देता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा द्वितीय अथवा एकादश भाव को अपनी सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होता है। उसे भविष्य में किसी प्रकार के बड़े आर्थिक संकट से नहीं गुजरना पड़ेगा।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश या द्वितीयेश अथवा एकादशेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो यह स्थिति व्यक्ति को उत्तम धन प्राप्त होने के संकेत देती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या द्वितीय भाव या एकादश भाव में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति अपने प्रयासों से उत्तम धन प्राप्त कर लेता है।



भाग्य लक्ष्मी दिब्बी

सुख-शान्ति-समृद्धि की प्राप्ति के लिये भाग्य लक्ष्मी दिब्बी :- जिस्से धन प्राप्ति, विवाह योग, व्यापार वृद्धि, वशीकरण, कोर्ट कचेरी के कार्य, भूतप्रेत बाधा, मारण, सम्मोहन, तान्त्रिक बाधा, शत्रु भय, चोर भय जेसी अनेक परेशानियों से रक्षा होती है और घर में सुख समृद्धि कि प्राप्ति होती है, भाग्य लक्ष्मी दिब्बी में लघु श्री फल, हस्तजोडी (हाथा जोडी), सियार सिन्गी, बिल्लि नाल, शंख, काली-सफ़ेद-लाल गुंजा, इन्द्र जाल, माय जाल, पाताल तुमडी जेसी अनेक दुर्लभ सामग्री होती है।

मूल्य:- Rs. 910 से Rs. 8200 तक उपलब्ध

गुरुत्व कार्यालय संपर्क : 91+ 9338213418, 91+ 9238328785



धन लाभ के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में धन लाभ का विचार एकादश भाव से किया जाता है। धन के कारक बृहस्पति की स्थिति भी काफी महत्वपूर्ण होती है। धन का कारक बृहस्पति ग्रह होता है। उत्तम धन की प्राप्ति के लिए प्रश्न कुण्डली में सम्बन्धित भाव के साथ-साथ बृहस्पति, लग्न और लग्नेश का बलवान होना अति आवश्यक होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या लग्नेश का एकादश या एकादशेश के साथ शुभ सम्बन्ध हो तो व्यक्ति को अपने कार्य से बड़ी मात्रा में धन लाभ होने के योग बनते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या लग्नेश का एकादश या एकादशेश के साथ अशुभ सम्बन्ध हो तो व्यक्ति को अपने कार्य में कठिन परिश्रम करने के उपरान्त धन लाभ के योग बनते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश अथवा लग्न में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो और अन्य सम्बन्धित ग्रह और भाव शुभ सम्बन्धों में हो तो यह व्यक्ति को

शीघ्र उत्तम धन लाभ प्राप्त होने के संकेत देता है।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा एकादश भाव को अपनी सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो व्यक्ति को अपने कार्यों से विशेष लाभ प्राप्त होने के योग बनते हैं। उसे भविष्य में किसी प्रकार के बड़े आर्थिक संकट से नहीं गुजरना पड़ेगा।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में बृहस्पति के अलावा अन्य सम्बन्धित भाव एवं ग्रह अशुभ एवं पाप प्रभाव में हो तो व्यक्ति को धन लाभ के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है, जिस में उसे उम्मीद से कम लाभ की प्राप्ति हो सकती है। इस लिए व्यक्ति को ग्रह स्थिति बदलने तक अपने महत्वपूर्ण कार्यों को स्थगित कर देना चाहिए।

कार्य से धन प्राप्ति के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में कार्य का विचार दशम भाव से किया जाता है तथा धन लाभ के लिए एकादश भाव से विचार करना चाहिए।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में एकादश भाव या एकादशेश का

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों ओर यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता है। सभी रत्नों को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत ऐश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। व्यक्ति को ऐसा आभास होता है जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारण करने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता है। गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता है एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता है। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता है। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं है एसा शास्त्रोक्त वचन है। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरुत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,



दशम भाव या दशमेश के साथ शुभ सम्बन्ध बन रहा हो तो व्यक्ति को अपने कार्य से अवश्य धन लाभ प्राप्त होता है।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में एकादश भाव या एकादशेश का दशम भाव या दशमेश का आपस में अशुभ सम्बन्ध बन रहा हो तो व्यक्ति को अपने कार्य में धन लाभ के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ सकता है। जिसमें उसे अपेक्षा कृत कम धनलाभ प्राप्त हो सकता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश का एकादशेश के साथ शुभ सम्बन्ध बन रहा हो तो व्यक्ति को अपने कार्यों में अपने प्रयासों के अनुरूप धन प्राप्त होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश अथवा लग्न में ग्रह अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति को अपने कार्यों में विशेष रूप से धनलाभ प्राप्त होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित हो कार एकादश भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा व्यक्ति को अपने कार्यक्षेत्र में विशेष धनलाभ की प्राप्ति होती है।

साझेदारी के कार्य से धनलाभ

- ❖ प्रश्न कुण्डली में साझेदारी से सम्बन्धित विचार सप्तम भाव से किया जाता है और धन लाभ के लिए एकादश भाव का आंकलन किया जाता है। सप्तम भाव का कारक शुक्र ग्रह होता है। इस लिए साझेदारी से सम्बन्धित कार्यों पर विचार करते समय शुक्र की स्थिति का आंकलन करना अति महत्वपूर्ण होता है इस के साथ ही बुध की स्थिति भी महत्वपूर्ण होती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में शुक्र या बुध का सप्तम या सप्तमेश, एकादश भाव या एकादशेश, लग्न या लग्नेश के साथ में किसी भी प्रकार युति या दृष्टि सम्बन्ध स्थापित होता हो तो व्यक्ति को साझेदारी से धनलाभ मिलता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में उक्त भावों एवं ग्रहों पर चन्द्रमा की शुभ दृष्टि हो तो यह व्यक्ति को साझेदारी के कार्य में शीघ्र ही धनलाभ प्राप्त होने के संकेत देता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश या लग्न में ग्रह अपनी

कनकधारा यंत्र

आज के युग में हर व्यक्ति अतिशीघ्र समृद्ध बनना चाहता है। धन प्राप्ति हेतु प्राण-प्रतिष्ठित कनकधारा यंत्र के सामने बैठकर कनकधारा स्तोत्र का पाठ करने से विशेष लाभ प्राप्त होता है। इस कनकधारा यंत्र की पूजा अर्चना करने से ऋण और दरिद्रता से शीघ्र मुक्ति मिलती है। व्यापार में उन्नति होती है, बेरोजगार को रोजगार प्राप्ति होती है।

श्री आदि शंकराचार्य द्वारा कनकधारा स्तोत्र की रचना कुछ इस प्रकार की है, जिसके श्रवण एवं पठन करने से आस-पास के वायुमंडल में विशेष अलौकिक दिव्य उर्जा उत्पन्न होती है। ठीक उसी प्रकार से कनकधारा यंत्र अत्यंत दुर्लभ यंत्रों में से एक यंत्र है जिसे मां लक्ष्मी की प्राप्ति हेतु अचूक प्रभावा शाली माना गया है। कनकधारा यंत्र को विद्वानों ने स्वयंसिद्ध तथा सभी प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करने में समर्थ माना है। जगद्गुरु शंकराचार्य ने दरिद्र ब्राह्मण के घर कनकधारा स्तोत्र के पाठ से स्वर्ण वर्षा कराने का उल्लेख ग्रंथ शंकर दिग्विजय में मिलता है। कनकधारा

मंत्र:- ॐ वं श्रीं वं ऐं ह्रीं-श्रीं क्लीं कनक धारयै स्वाहा

मूल्य: Rs.550 से Rs.8200 तक

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,



उच्च राशि में स्थित हो और अन्य सम्बन्धित ग्रह और भाव अनुकूल स्थिति में हो तो व्यक्ति को साझेदारी के कार्य में धनलाभ प्राप्त मिलता है।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित हो कर एकादश भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो इस योग से व्यक्ति को साझेदारी के कार्य में अवश्य धन लाभ मिलता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में एकादश भाव में ग्रह बलवान हो कर स्थित हो और अन्य सम्बन्धित ग्रह और भाव अनुकूल स्थिति में हो तो व्यक्ति के लिए साझेदारी फलदायक रहती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में ग्रहों का प्रभाव विपरित हो तो व्यक्ति को साझेदारी से कार्य करने पर धन लाभ मिलने की संभावना बहुत कम रहती है। इस लिए व्यक्ति जो भी कार्य करे वह स्वयं के बल पर करें तो उत्तम रहेगा उसे साझेदारी से कार्य करने का विचार त्याग देना चाहिए।

स्त्री से धन प्राप्ति

- ❖ प्रश्न कुण्डली में स्त्री पक्ष के धन प्राप्ति का विचार अष्टम भाव से किया जाता है। ज्योतिष के अनुशार स्त्री का कारक चन्द्रमा और शुक्र ग्रह होते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या लग्नेश या अष्टम भाव या अष्टमेश के साथ में चन्द्र, शुक्र और मंगल के बिचमें शुभ सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो व्यक्ति को स्त्री पक्ष से धन लाभ मिलने की पूर्ण संभावना रहती है।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या लग्नेश या अष्टम भाव या अष्टमेश के साथ में चन्द्र, शुक्र और मंगल के अशुभ सम्बन्ध हो या पाप प्रभाव में हो तो व्यक्ति को स्त्री पक्ष से उत्तम धन लाभ मिलने की संभावना नहीं बनती व्यक्ति को धन प्राप्ति के लिए विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या अष्टम भाव में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो और अन्य सम्बन्धित ग्रहों एवं भावों भी अनुकूल स्थिति में हो तो व्यक्ति को स्त्री पक्ष से धन लाभ होने की प्रबल सम्भावना रहती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित हो कर अष्टम भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो व्यक्ति को स्त्री पक्ष से धन की प्राप्ति अवश्य हो सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश या अष्टमेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो और अन्य सम्बन्धित ग्रहों एवं भावों भी अनुकूल स्थिति में हो तो व्यक्ति को स्त्री पक्ष से धन लाभ होने की प्रबल सम्भावना रहती है।

विवाह के पश्चात धन लाभ

- ❖ प्रश्न कुण्डली में विवाह के सम्बन्ध में सप्तम भाव से विचार किया जा है। ज्योतिष के अनुशार सप्तम के कारक ग्रह का विचार पुरुष के लिए शुक्र से किया जाता है और स्त्री के लिए बृहस्पति से किया जाता है। धन लाभ के लिए एकादश भाव का आंकलन किया जाता है। धन लाभ के कारक ग्रह बुध की

धन वृद्धि डिब्बी

धन वृद्धि डिब्बी को अपनी अलमारी, कैश बॉक्स, पूजा स्थान में रखने से धन वृद्धि होती है जिसमें काली हल्दी, लाल- पीला-सफेद लक्ष्मी कारक हकीक (अकीक), लक्ष्मी कारक स्फटिक रत्न, 3 पीली कौड़ी, 3 सफेद कौड़ी, गोमती चक्र, सफेद गुंजा, रक्त गुंजा, काली गुंजा, इंद्र जाल, माया जाल, इत्यादी दुर्लभ वस्तुओं को शुभ महूर्त में तेजस्वी मंत्र द्वारा अभिमंत्रित किय जाता है।

मूल्य मात्र Rs-730



स्थिति महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में सप्तम भाव, सप्तमेश, बृहस्पति, शुक्र या बुध का लग्न या लग्नेश के साथ युति या दृष्टि द्वारा किसी भी प्रकार से शुभ सम्बन्ध बन रहा हो तो व्यक्ति को विवाह के बाद में धन लाभ मिलने के संकेत मिलते हैं। यदि सम्बन्धित भावों एवं ग्रहों पर चन्द्रमा की शुभ दृष्टि हो तो व्यक्ति को शीघ्र ही धन लाभ मिलने के योग बनते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा एकादश भाव को सप्तम दृष्टि से देख कर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो व्यक्ति को विवाह के पश्चात् निश्चित रूप से धन की प्राप्ति होती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में सप्तम भाव, सप्तमेश, बृहस्पति, शुक्र या बुध का लग्न या लग्नेश पाप ग्रहों के प्रभाव में हो अशुभ सम्बन्ध बना रहे हो तो व्यक्ति को विवाह के बाद में धन लाभ प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है। यदि सबन्धित भावों एवं ग्रहों पर शुभ ग्रहों की दृष्टि नहीं हो तो व्यक्ति को कठिन परिश्रम के उपरांत अल्प धनलाभ की प्राप्ति होती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश का एकादशेश से शुभ सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो व्यक्ति को विवाह के बाद में आकस्मिक रूप से प्रचुर मात्रा में धन लाभ होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश अथवा लग्न में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति को विवाह के पश्चात् उपयुक्त धन लाभ होता है।

पिता से धन लाभ (पैतृक सम्पत्ति)

- ❖ प्रश्न कुण्डली में पिता से सम्बन्धित विचार दशम भाव से किया जाता है और धन लाभ के लिए एकादश भाव से विचार करना चाहिए।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या लग्नेश, दशम भाव या दशमेश तथा एकादश भाव या एकादशेश का आपस में शुभ सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो व्यक्ति को

पिता से धन लाभ या पैतृक सम्पत्ति निश्चित रूप से प्राप्त होता है।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या लग्नेश, दशम भाव या दशमेश तथा एकादश भाव या एकादशेश का आपस में अशुभ सम्बन्ध हो या पाप प्रभाव में हो तो व्यक्ति को पिता से धन लाभ प्राप्त होने की सम्भावना प्रबल नहीं होती है।
- ❖ प्रश्न कुण्डली के लग्न, दशम भाव या एकादश भाव अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति को पिता से धन का लाभ मिलता है।
- ❖ प्रश्न कुण्डली में लग्नेश, दशमेश या एकादश एकादशेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति को पिता से धन का लाभ मिलने के पूर्ण योग बनते हैं।
- ❖ प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा एकादश भाव या दशम भाव को अपनी सप्तम दृष्टि से देख रहा हो तो व्यक्ति को अपने पिता से अवश्य अपने पिता से धन प्राप्त होता है।

मातृ पक्ष से धन लाभ के योग (ननिहाल)

- ❖ प्रश्न कुण्डली में माता के विषय में चतुर्थ भाव का विचार किया जाता है और धन लाभ के लिए एकादश भाव का आंकलन किया जाता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या लग्नेश का, चतुर्थ भाव या चतुर्थेश का एवं एकादश भाव या एकादशेश का युति अथवा दृष्टि द्वारा शुभ सम्बन्ध बन रहा हो तो व्यक्ति को मातृपक्ष के लोगों से धन लाभ अवश्य प्राप्त होता है। यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या लग्नेश का, चतुर्थ भाव या चतुर्थेश का एवं एकादश भाव या एकादशेश पाप प्रभाव में हो या अशुभ सम्बन्ध बना रहे हो तो व्यक्ति को मातृपक्ष के लोगों से धन लाभ मिलने की सम्भावना कम हो जाती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश या चतुर्थेश या एकादशेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति का भाग्य



अति उत्तम होता है इस कारण व्यक्ति को मातृपक्ष के लोगों से धन लाभ मिलता है।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या चतुर्थ भाव या एकादश भाव में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति को मातृपक्ष के लोगों से धन लाभ मिलता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित हो कर चतुर्थ भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो व्यक्ति को मातृ पक्ष से प्रचुर मात्रा में धनलाभ मिलने की सम्भावनाएं बनती हैं।

भाइयों से धन सम्बन्धी विवाद के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में धन का विचार द्वितीय भाव से किया जाता है और भाइयों के सम्बन्ध में तृतीय भाव का अवलोकन किया जाता है। तृतीय भाव का कारक मंगल ग्रह की स्थिति भाई से सम्बन्धित प्रश्न के विषय में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में द्वितीय भाव का तृतीय भाव से शुभ सम्बन्ध बन रहा हो तो व्यक्ति का अपने भाइयों से धन सम्बन्धित विषय में वाद-विवाद होने की सम्भावना कम होती है। क्योंकि ग्रह स्थिति उत्तम होने के कारण भाइयों के बीच आपसी प्रेम बना रहता है। जिस कारण उनके बिच में धन से सम्बन्धित मामले विशेष महत्वपूर्ण नहीं रह जाते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में द्वितीय भाव का तृतीय भाव से अशुभ सम्बन्ध बन रहा हो तो व्यक्ति का अपने भाइयों से धन सम्बन्धित विषय में वाद-विवाद होने की सम्भावना प्रबल रहती है। ऐसे में व्यक्ति को अपनी सुझबूझ से कार्य करना चाहिए और कोई महत्वपूर्ण निर्णय को लेना चाहिए। यदि सम्भव हो तो ग्रह स्थिति में उपयुक्त परिवर्तन होने तक व्यक्ति को भाई से धन सम्बन्धित कार्यों को स्थगित कर देना चाहिए।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश, द्वितीयेश और तृतीयेश का आपस में शुभ सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो

भाइयों के बिचमें धन को लेकर विवाद होने की सम्भावना बहुत ही कम रह जाती है।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा द्वितीय भाव या तृतीय भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो ग्रह की इस उत्तम स्थिति के कारण भाइयों से धन के कारण विवाद होने की सम्भावना क्षीण हो जाती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश या द्वितीयेश या तृतीयेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति का भाग्य अधिक बलवान हो जाता है जिस कारण उसके अपने भाई से धन के कारण विवाद होने की सम्भावना कम हो जाती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या द्वितीय भाव या तृतीय भाव में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति का भाग्य अधिक बलवान हो जाता है जिस कारण उसके अपने भाई से धन के कारण विवाद होने की सम्भावना कम हो जाती है।

ससुराल पक्ष से धन लाभ के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में ससुराल पक्ष का विचार अष्टम भाव से किया जाता है और धन लाभ के लिए एकादश भाव का आंकलन किया जाता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में अष्टम भाव या अष्टमेश का एकादश भाव एकादशेश से शुभ सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो व्यक्ति को तो व्यक्ति को ससुराल से धन लाभ प्राप्त होता है। इससे विपरित यदि दोनो भावों के बिचमें किसी प्रकार से सम्बन्ध न बन रहा हो या दोनों भाव पाप प्रभाव में होत व्यक्ति को ससुराल से विशेष धन लाभ मिलने की सम्भावना प्रबल नहीं होती। ऐसे में व्यक्ति को ससुराल से धन प्राप्ति कि अपेक्षा छोड़ देनी चाहिए।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या लग्नेश बलवान स्थिति में हो और बुध भी शुभ स्थिति में हो तो व्यक्ति को ससुराल से प्रचुर मात्रा में धन की प्राप्ति सम्भव है।



- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित हो कर एकादश भाव को सप्तम दृष्टि से देख कर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो यह व्यक्ति को बिना किसी अड़चन के ससुराल पक्ष से धन मिलने की सम्भावना बनाता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में अष्टम भाव का स्वामी अपने ही भाव में स्थित हो तो यह व्यक्ति के ससुराल से अच्छे संबंधों को दर्शाता है जिससे व्यक्ति को भारी मात्रा में अपने ससुराल से धन मिलने की सम्भावनाओं को दर्शाता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश या लग्न में ग्रह अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो तथा अन्य सम्बन्धित ग्रह और भाव शुभ स्थिति में हो तो व्यक्ति का भाग्य अधिक बलशाली होता है जिस कारण उसे अपने ससुराल से अवश्य धन लाभ प्राप्त होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश और एकादश भाव के बिच में शुभ सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो व्यक्ति को ससुराल से धन की प्राप्ति हो सकती है।

मित्रों से धन लाभ के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में मित्रों और धन सम्बन्ध में अर्थात् दोनों के सम्बन्ध में एकादश भाव से विचार किया जाता है। एकादश भाव का कारक बुध ग्रह होता है। इस लिए मित्रों से धन लाभ का विचार करते समय बुध ग्रह की स्थिति विशेष महत्व रखती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में एकादश भाव और बुध का लग्न या लग्नेश के साथ युति या दृष्टि द्वारा शुभ सम्बन्ध बन रहा हो तो व्यक्ति को मित्रों से विशेष रूप से धन लाभ या सहयोग प्राप्त होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में उक्त स्थिति बन रही है और उक्त ग्रह और भावों पर चन्द्रमा की शुभ दृष्टि से ग्रह हो भाव को बल प्राप्त हो रहा हो तो यह ग्रह स्थिति व्यक्ति को शीघ्र मित्रों से धनलाभ प्राप्त होने का संकेत देती है।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में एकादश भाव का लग्नेश से शुभ सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो व्यक्ति को मित्रों से अवश्य धनलाभ होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्नेश या लग्न में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो और अन्य सम्बन्धित ग्रह और भाव शुभ प्रभाव में हो तो व्यक्ति को मित्र से निश्चित लाभ प्राप्त हो सकता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में मित्रों से धन लाभ की स्थिति से सम्बन्धित भाव एवं ग्रह अनुकूल नहीं हो तो व्यक्ति को मित्रों से विशेष धन लाभ नहीं मिलता इस लिए एसी स्थिति में व्यक्ति को मित्रों से धन लाभ की उम्मीद किए बिना स्वयं के आत्मविश्वास और परिश्रम के बल पर धन प्राप्त करना अति उत्तम होगा।

विदेश में धन लाभ के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में विदेश का विचार नवम भाव से किया जाता है और धन लाभ के लिए एकादश भाव का अवलोकन किया जाता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में नवम भाव का एकादश भाव से किसी प्रकार भी शुभ सम्बन्ध होता है तो व्यक्ति को विदेश में धन लाभ की संभावना विशेष बनती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में नवम भाव का एकादश भाव से कोई सम्बन्ध नहीं बन रहा हो तो व्यक्ति को विदेश में धन लाभ नहीं होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश, नवमेश और एकादश भाव का आपस में शुभ सम्बन्ध बन रहा हो तो व्यक्ति के लिए विदेश से विशेष धन की प्राप्ति के योग बनते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा नवम या एकादश भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो व्यक्ति के लिए विदेश से धन प्राप्ति की सम्भावना प्रबल बनती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश, नवमेश और एकादश भाव अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति विदेश में विशेष धन लाभ प्राप्त कर सकते हैं।



- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न, नवम भाव और एकादश भाव में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति विदेश में विशेष धन लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

मित्रों से धन लाभ के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में मित्रों और धन सम्बन्ध में अर्थात् दोनों के सम्बन्ध में एकादश भाव से विचार किया जाता है। एकादश भाव का कारक बुध ग्रह होता है। इस लिए मित्रों से धन लाभ का विचार करते समय बुध ग्रह की स्थिति विशेष महत्व रखती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में एकादश भाव और बुध का लग्न या लग्नेश के साथ युति या दृष्टि द्वारा शुभ सम्बन्ध बन रहा हो तो व्यक्ति को मित्रों से विशेष रूप से धन लाभ या सहयोग प्राप्त होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में उक्त स्थिति बन रही है और उक्त ग्रह और भावों पर चन्द्रमा की शुभ दृष्टि से ग्रह हो भाव को बल प्राप्त हो रहा हो तो यह ग्रह स्थिति व्यक्ति को शीघ्र मित्रों से धनलाभ प्राप्त होने का संकेत

देती हैं।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में एकादश भाव का लग्नेश से शुभ सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो व्यक्ति को मित्रों से अवश्य धनलाभ होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्नेश या लग्न में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो और अन्य सम्बन्धित ग्रह और भाव शुभ प्रभाव में हो तो व्यक्ति को मित्र से निश्चित लाभ प्राप्त हो सकता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में मित्रों से धन लाभ की स्थिति से सम्बन्धित भाव एवं ग्रह अनुकूल नहीं हो तो व्यक्ति को मित्रों से विशेष धन लाभ नहीं मिलता इस लिए एसी स्थिति में व्यक्ति को मित्रों से धन लाभ की उम्मीद किए बिना स्वयं के आत्मविश्वास और परिश्रम के बल पर धन प्राप्त करना अति उत्तम होगा।

सरकार से धनलाभ के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में सरकारी क्षेत्र का विचार दशम भाव से किया जाता है और धन लाभ के लिए एकादश भाव

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रों के संकलन से हमारे वर्षों के अनुसंधान द्वारा बनाया गया है।

- परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- भाग्योदय यंत्र
- मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- गृहस्थ सुख यंत्र
- शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- सहस्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- रोग निवृत्ति यंत्र
- साधना सिद्धि यंत्र
- शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रों को द्वादश महा यंत्र के रूप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापित कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,



का आंकलन किया जाता हैं।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में दशम भाव या दशमेश का एकादश भाव या एकादशेश से शुभ सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो व्यक्ति को तो व्यक्ति को सरकार से धन लाभ प्राप्त हो सकता हैं। इससे विपरित यदि दोनो भावो के बिचमें किसी प्रकार से सम्बन्ध न बन रहा हो या दोनों भाव पाप प्रभाव में होत व्यक्ति को सरकार से धन लाभ मिलने की सम्भावना प्रबल नहीं होती। एसे में व्यक्ति को सरकारी क्षेत्र की अपेक्षा निजी क्षेत्र से धन लाभ प्राप्त होने की संभावना बन सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश या दशमेश या एकादशेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति को सरकार से धन लाभ मिलने की सम्भावना प्रबल बनती हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या दशम भाव या एकादश भाव में ग्रह अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति को सरकार से विशेष धन लाभ मिलने की सम्भावना बनती हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा दशम भाव अथवा एकादश भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो व्यक्ति को अपने कार्य के बल पर सरकारी क्षेत्र से निश्चित रूप से लाभ प्राप्त होता हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में दशमेश और एकादशेश के बिच में शुभ सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो व्यक्ति को सरकार से धन लाभ मिलने के योग बनते हैं।

लॉटरी से धनलाभ के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में लॉटरी का विचार पंचम भाव से किया जाता हैं। लॉटरी के लिए पंचम भाव के कारक बृहस्पति ग्रह की स्थिति महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में पंचम भाव या पंचमेश का लग्न या लग्नेश के साथ किसी भी प्रकार युति सम्बन्ध या दृष्टि सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो व्यक्ति को लॉटरी से धन लाभ मिलता है।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में पंचम भाव या लग्न में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति को लॉटरी से धन लाभ मिलने की सम्भावनाएँ बनती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में पंचमेश या लग्नेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो यह योग व्यक्ति को लॉटरी से धन लाभ मिलने की सम्भावनाएँ बनाता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित हो कर पंचम भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो व्यक्ति को शीघ्र ही लॉटरी इत्यादि माध्यम से आकस्मिक रूप से धनलाभ मिलने की सम्भावनाएँ बनती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लॉटरी से सम्बन्धित ग्रह एवं भाव शुभ स्थिति में न हो उन पर पार ग्रहो का प्रभाव हो तो व्यक्ति का लॉटरी में धन हानी होने के संकेत देता हैं। इस लिए व्यक्ति का लॉटरी में इत्यादि आकस्मिक धन देने वाले कार्यों में पैसा लगाना जोखिम भरा कार्य हो सकता है। जिसमें उसे लाभ के स्थान पर हानी होने कि विशेष सम्भावना रहती हैं। इस लिए व्यक्ति के लिए यह उत्तम रहेगा के वह लॉटरी में पैसा नहीं लगाएं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश और पंचमेश का आपस में शुभ सम्बन्ध बन रहा हो तो व्यक्ति को लॉटरी से धन लाभ मिलने की सम्भावना बनती हैं।

संतान की आर्थिक स्थिति दर्शाते योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में संतान का विचार पंचम भाव से किया जाता हैं और आर्थिक स्थिति का विचार द्वितीय भाव से किया जाता हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या लग्नेश का द्वितीय भाव या द्वितीयेश, पंचम भाव या पंचमेश से शुभ सम्बन्ध हो तो व्यक्ति के संतान की आर्थिक स्थिति उत्तम रहती हैं।
- ❖ इससे विपरित यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या लग्नेश का द्वितीय भाव या द्वितीयेश, पंचम भाव या पंचमेश से अशुभ सम्बन्ध हो तो या यह भाव पाप प्रभाव में



हो तो व्यक्ति के संतान की आर्थिक स्थिति कमजोर होती हैं। संतान को धन प्राप्ति के लिए कठि परिश्रम और सन्घर्ष करना पड़ सकता हैं।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा द्वितीय भाव या पंचम भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो व्यक्ति के संतान का आर्थिक पक्ष उत्तम होता हैं उसे निकट के भविष्य में किसी भी प्रकार से धन की कमी नहीं होगी।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश, द्वितीयेश, पंचमेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति की संतान भाग्यशाली होती हैं इस योग से संतान के पास प्रचुर मात्रा में धन होने का संकेत मिलता हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न, द्वितीय, पंचम भाव में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति की संतान का भाग्य बलशाली होता हैं व्यक्ति की संतान को धन की कमी नहीं होगी हैं।

प्रश्न कुण्डली में धन व्यय के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में धन व्यय के लिए द्वादश भाव का विचार किया जाता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या लग्नेश का द्वादश भाव या द्वादशेश के साथ शुभ सम्बन्ध बन रहा हो तो व्यक्ति का धन शुभ कार्यों में खर्च होता हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या लग्नेश का द्वादश भाव या द्वादशेश के साथ अशुभ सम्बन्ध बन रहा हो या उक्त भाव या सम्बन्धित ग्रह पाप प्रभाव में हो तो व्यक्ति का धन व्यर्थ के कार्यों में या अशुभ कार्यों में खर्च हो सकता हैं।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति को धन सोच समझकर निवेश/खर्च करने से लाभ मिलता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति का धन शुभ कार्यों में खर्च होता हैं। ऐसे में व्यक्ति किसी अनावश्यक कार्यों में अपना धन खर्च नहीं करते क्योंकि वह धन व्यय करने से पहले उस कार्य पर अच्छी तरह सोच विचार कर लेते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश का एकादशेश से शुभ सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो व्यक्ति की आर्थिक स्थिति मजबूत होती हैं। उसे आने वाले समय में धन की कमी नहीं रहेगी। व्यक्ति का धन भी केवल आवश्यक चीजों पर ही होता हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित हो कर एकादश भाव को सप्तम दृष्टि से बल प्रदान कर रहा हो तो व्यक्ति द्वारा किया गया खर्च उसे भविष्य में लाभ देने वाला होता हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में सम्बन्धित भाव और ग्रह सामान्य स्थिति में हो तो व्यक्ति अपनी आय के अनुपात में व्यय करने वाला होता हैं, इस लिए व्यक्ति को किसी चीज पर बड़ी मात्रा में खर्च करने से पूर्व उस पर आवश्यक सोच विचार कर लेना चाहिए, अन्यथा किसी विशेष परिस्थिति में गलत निर्णयों से अनावश्यक चीज वस्तु पर धन भारी मात्रा में खर्च होने की सम्भावना बनी रहती हैं।



मंत्र सिद्ध मूंगा गणेश

मूंगा गणेश को विध्वेश्वर और सिद्धि विनायक के रूप में जाना जाता हैं। इस के पूजन से जीवन में सुख सौभाग्य में वृद्धि होती हैं। रक्त संचार को संतुलित करता हैं। मस्तिष्क को तीव्रता प्रदान कर व्यक्ति को चतुर बनाता हैं। बार-बार होने वाले गर्भपात से बचाव होता हैं। मूंगा गणेश से बुखार, नपुंसकता, सन्निपात और चेचक जैसे रोग में लाभ प्राप्त होता हैं।

मूल्य Rs: 550 से Rs: 10900 तक



Coming Soon.....

Shortly **GURUTVA JYOTISH**
Weekly E-Magazine Re-Publishing In English

Power By: **GURUTVA KARYALAY**



**Don't Miss to Collect Your Copy Book Your Copy Now
For More Information Email Us**

Dear Reader

We are **Thanking everyone**, Who Would Like Read Our Monthly & Weekly E-Magazine. We would like to thanks Again to everyone for their incredible support. Our Readers Are eagerly waiting to Get Latest Issue of **GURUTVA JYOTISH** E-magazine. But Some Technical Reason, We had to stopped Publishing of Weekly E-Magazine For Few Week or Month. For Some technical reasons, Some time Our readers getting delayed receiving our monthly issue.

We apology for delay Publishing of Monthly Magazine.

Our Team Member Work Hard to short out this issue. Dear Readers We appreciate your Patience.

Very Soon.. We Re-Publish Our Weekly E-Magazine Without any Interruption.

Thank You
Editor

For More Information Contact:

GURUTVA KARYALAY

gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com



प्रश्न ज्योतिष और विवाह योग

चिंतन जोशी

प्रश्न कुंडली द्वारा व्यक्ति का विवाह कब होगा इस प्रश्न का विचार करने के लिये कुंडली में द्वितीय, सप्तम और एकादश भाव में कौन से ग्रह उपस्थित हैं, उसी ग्रह की स्थिति से विवाह का विचार किया जाता है।

ज्योतिष में विवाह का विचार सप्तम भाव के साथ-साथ कुंडली में द्वितीय भाव और एकादश भाव से भी विचार किया जाता है। सप्तम भाव जीवनसाथी एवं साझेदारी का भाव होता है। अतः विवाह से संबंधित प्रश्न का विचार इस भाव से किया जाता है। भारतीय ज्योतिष में वैवाहिक सम्बन्ध में शुभता का विचार एकादश भाव से किया जाता है।

इस भावों के नक्षत्र कौन सा नक्षत्र स्थित हैं, इस भावों के स्वामी के नक्षत्र में ग्रह की स्थिति एवं इस भावों के स्वामी एवं उन ग्रह के मध्य दृष्टि और युति सम्बन्ध को भी देखा जाता है। प्रश्न ज्योतिष में सबसे अधिक महत्व नक्षत्रों को दिया जाता है।

प्रश्न ज्योतिष द्वारा विवाह के लिए शुभ योग

ज्योतिष में विवाह का कारक ग्रह पुरुष की कुंडली में शुक्र और कन्या की कुंडली में गुरु होता है। प्रश्न ज्योतिष से विवाह का विचार करते समय पुरुष की कुंडली में चन्द्र और शुक्र की स्थिति को देखा जाता है और कन्या की कुंडली में सूर्य और मंगल की स्थिति को देखा जाता है।

❖ प्रश्न कुंडली के अनुसार चन्द्रमा तृतीय, पंचम, षष्ठम, सप्तम और एकादश भाव में स्थित हैं और चन्द्रमा पर गुरु, सूर्य एवं बुध की द्रष्टी होतो विवाह की स्थिति उत्तम होती है।

असली 1 मुखी से 14 मुखी रुद्राक्ष

गुरुत्व कार्यालय में संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं असली 1 मुखी से 14 मुखी तक के रुद्राक्ष उपलब्ध हैं। ज्योतिष कार्य से जुड़े बंधु/बहन व रत्न व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिये विशेष मूल्य पर रत्न, उपरत्न यंत्र, रुद्राक्ष व अन्य दुर्लभ सामग्रीयां एवं अन्य सुविधाएं उपलब्ध हैं। रुद्राक्ष के विषय में अधिक जानकारी के लिए कार्यालय में संपर्क करें।

विशेष यंत्र

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र सोने-चांदि-ताम्बे में आपकी आवश्यकता के अनुसार किसी भी भाषा/धर्म के यंत्रों को आपकी आवश्यक डिजाइन के अनुसार २२ गेज शुद्ध ताम्बे में अखंडित बनाने की विशेष सुविधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी के लिए कार्यालय में संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

BHUBNESWAR-751018, (ORISSA), Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com



- ❖ प्रश्न कुंडली के अनुशार त्रिकोण स्थान अथवा केन्द्र स्थान अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम एवं दशम भाव शुभ प्रभाव में हो तो विवाह शीघ्र होने के योग बनते हैं।
- ❖ प्रश्न कुंडली के लग्न में यदी स्त्री ग्रह स्थित हो अथवा लग्न और नवम भाव में स्त्री राशि हो या चन्द्र एवं शुक्र इन भावों में स्थित होकर एक दूसरे को देखते हों, तो विवाह योग बनते हैं।
- ❖ प्रश्न कुंडली में लग्नेश एवं चंद्र या शुक्र सप्तम भाव में स्थित हो और सप्तमेश लग्न में स्थित हो, तो शीघ्र विवाह योग होते हैं।
- ❖ प्रश्न कुंडली के लग्न में गुरु और सप्तम भाव में बुध स्थित हो अथवा चंद्रमा स्वागृही हो, सूर्य दशम भाव में और शुक्र द्वितीय भाव में स्थित हो, तो जल्द विवाह के योग बनते हैं।

प्रेम विवाह से प्रश्न कुंडली का विचार

- ❖ प्रश्न कुंडली में चन्द्रमा तृतीय, षष्ठम, सप्तम, दशम या एकादश भाव में शुभ स्थिति में हो और चन्द्रमा पर सूर्य, बुध और गुरु कि शुभ द्रष्टी हों, तो प्रेम विवाह में सफलता के योग प्रबल होते हैं।
- ❖ प्रश्न कुंडली में लग्नेश और सप्तमेश राशि परिवर्तन कर रहे हो, तो प्रेम विवाह के लिये शुभ संकेत हैं।
- ❖ प्रश्न कुंडली में लग्नेश और द्वादश राशि परिवर्तन कर रहे हो, तो प्रेम विवाह के लिये शुभ संकेत हो सकता हैं।

शीघ्र विवाह योग

- ❖ प्रश्न कुंडली में शनि सम भाव में अर्थात (2, 4, 6, 8, 10, 12) भाव में हो तो लड़के का विवाह शीघ्र होता हैं।
- ❖ प्रश्न कुंडली में शनि विषम भाव में अर्थात (1, 3, 5, 7, 9, 11) भाव में हो तो कन्या का विवाह शीघ्र होता हैं।
- ❖ प्रश्न कुंडली में चन्द्रमा तृतीय, षष्ठम, सप्तम भाव में स्थित हो और चन्द्रमा पर गुरु, सूर्य एवं बुध कि द्रष्टी होतो विवाह शीघ्र होता हैं।
- ❖ प्रश्न कुंडली में चन्द्रमा द्वितीय स्थान में स्थित होकर शुक्र से द्रष्ट हो, तो विवाह शीघ्र होता हैं।
- ❖ प्रश्न कुंडली में लग्न या सप्तम भाव में चंद्र और शुक्र एक साथ होकर स्थित हो तो लड़के का विवाह शीघ्र होता हैं।

शादी संबंधित समस्या

क्या आपके लड़के-लड़की कि आपकी शादी में अनावश्यक रूप से विलम्ब हो रहा हैं या उनके वैवाहिक जीवन में खुशियां कम होती जा रही हैं और समस्या अधिक बढ़ती जा रही हैं। एसी स्थिती होने पर अपने लड़के-लड़की कि कुंडली का अध्ययन अवश्य करवाले और उनके वैवाहिक सुख को कम करने वाले दोषों के निवारण के उपायो के बार में विस्तार से जनकारी प्राप्त करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,



- ❖ प्रश्न कुंडली में तृतीय, सप्तम, नवम या दशम स्थान में शुक्र स्थित हो और उस पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो लड़के का विवाह शीघ्र होता है।
- ❖ प्रश्न कुंडली में चन्द्र सप्तम भाव, द्वितीय भाव, तृतीय भाव, पंचम, छठे भाव, दशम भाव अथवा एकादश भाव में स्थित हो और बृहस्पति उसे देख रहा हो तो शीघ्र विवाह का योग बनता है।
- ❖ प्रश्न कुंडली में लग्नेश या चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हो तो विवाह शीघ्र होता है।
- ❖ प्रश्न कुंडली में सप्तम भाव में लग्नेश या चन्द्रमा एकसाथ स्थित हो तो विवाह शीघ्र होता है।
- ❖ प्रश्न कुंडली में चन्द्र या शुक्र उच्च राशि में स्थित हो तो विवाह शीघ्र होता है।
- ❖ प्रश्न कुंडली में त्रिकोण स्थान अथवा केन्द्र स्थान अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम एवं दशम भाव शुभ ग्रहों के प्रभाव में हो तो विवाह शीघ्र होने के योग बनते हैं।
- ❖ प्रश्न कुंडली में लग्नेश एवं चंद्र या शुक्र सप्तम भाव में स्थित हो और सप्तमेश लग्न में स्थित हो, तो शीघ्र विवाह योग होते हैं।

विवाह में विलम्ब के योग

- ❖ प्रश्न कुंडली में सप्तम स्थान में राहू स्थित हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो विवाह में विलंब होने के योग बनते हैं।
- ❖ प्रश्न कुंडली में केन्द्र, त्रिकोण या अष्टम स्थान में चन्द्रमा और पापग्रह स्थित हो तो विवाह में विलंब होने के योग बनते हैं।
- ❖ प्रश्न कुंडली में सप्तमेश अष्टम स्थान में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो विवाह में विलंब होने के योग बनते हैं।
- ❖ प्रश्न कुंडली के लग्न और सप्तम भाव में पाप ग्रह स्थित हो तो विवाह में विलंब होने के योग बनते हैं।
- ❖ प्रश्न कुंडली में लग्नेश, सप्तमेश या चन्द्रमा पाप ग्रहों से पीडित हो तो विवाह में विलंब होने के योग बनते हैं।
- ❖ प्रश्न कुंडली में सप्तमेश और अष्टमेश का राशि परिवर्तन योग अर्थात् सप्तमेश अष्टम स्थान में और अष्टमेश सप्तम स्थान में स्थित हो तो विवाह में विलंब होने के योग बनते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) और गोल्ड (सोने) में उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) और गोल्ड (सोने) में बनवाए जाते हैं। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, डिजाइन) के अनुरूप यंत्र भी बनवाए जाते हैं। गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) में बनवाए जाते हैं। यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: <http://gk.yolasite.com/> and <http://gurutvakaryalay.blogspot.com/>



प्रश्न ज्योतिष से शत्रु का विचार

चिंतन जोशी

शत्रु पीड़ा के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में शत्रु का विचार छठे भाव से किया जाता है। छठे भाव का कारक मंगल ग्रह होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में षष्ठम भाव शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो और लग्न व लग्नेश बलवान् स्थिति में हो तो व्यक्ति को शत्रु से विशेष पीड़ा नहीं होती और यदि शत्रु पक्ष से विवाद चल रहा है तो विजय प्राप्ति के योग बनते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न व लग्नेश कमजोर और पाप प्रभाव में हो तथा षष्ठेश से दृष्ट हो तो व्यक्ति को शत्रु से विशेष हानि होने की संभावना प्रबल रहती है। यदि लम्बे समय से विवाद चल रहा है तो उसमें विलम्ब हो सकता है या आपकी पराजय संभव है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति को शत्रु से विशेष हानि नहीं होती है। यदि पहले से शत्रु पीड़ा हो रही है तो जल्द ही शत्रु पीड़ा से मुक्ति मिलने के संकेत हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति को शत्रु से विशेष हानि नहीं होती है। यह ग्रह स्थिति से विवाद में विजय प्राप्ति के संकेत मिलते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न में ग्रह नीच राशि का हो या अशुभ ग्रहों के प्रभाव में हो, तो व्यक्ति को शत्रु से पीड़ा हो सकती है। ऐसे में व्यक्ति को अधिक सचेत

रह कर रहना चाहिए, अन्यथा पराजय या बड़ा नुकसान संभव है।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश बलवान् स्थिति में हो और छठे भाव पर दृष्टि डाल कर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो व्यक्ति का प्रभाव अपने शत्रु पक्ष पर हावी रहेगा यदि विवाद चल रहे हैं तो विजय प्राप्ति होगी और यदि कोई कोई शत्रु व्यक्ति को कष्ट पहुंचाने का प्रयास करता है तो शत्रु स्वयं अपनी हानि करेगा।

शत्रु से समझौते के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में शत्रु का विचार छठे भाव से किया जाता है। छठे भाव का कारक मंगल ग्रह होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में षष्ठम भाव शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो और लग्न व लग्नेश बलवान् स्थिति में हो तो व्यक्ति को शत्रु से समझौते की पूर्ण सम्भावना बनती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न व लग्नेश कमजोर और पाप प्रभाव में हो तथा षष्ठेश से दृष्ट हो तो व्यक्ति को शत्रु से समझौते की सम्भावना प्रबल नहीं बनती है। ऐसे में व्यक्ति को शत्रुओं से समझौता करने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। ग्रहों के अनुकूल होने तक इंतजार करना अनोकरा रहेगा या सोच विचार कर और सावधानी पूर्वक समझौता करने का प्रयास करें।

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित 22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

पुरुषाकार शनि यंत्र

मूल्य: 1050 से 8200

GURUTVA KARYALAY, Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com



प्रश्न कुण्डली से जाने नौकरी के विभिन्न योग

चिंतन जोशी, स्वस्तिक.ऐन.जोशी

सरकारी विभाग में नौकरी के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में सरकारी क्षेत्र में नौकरी का विचार दशम भाव से किया जाता है। सरकारी क्षेत्र का कारक ग्रह सूर्य माना जाता है। इसके साथ ही प्रश्न कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति में से किसी भी ग्रह का युति या दृष्टि सम्बन्ध दशम भाव या दशमेश से बन रहा हो तो व्यक्ति को सरकारी क्षेत्र में नौकरी प्राप्त होने की प्रबल सम्भावनाएं बनती हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या लग्नेश उच्च राशि या बलवान् स्थिति में होत तो व्यक्ति को सरकारी क्षेत्र में नौकरी मिलने की संभावनाएं प्रबल हो जाती हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश और दशमेश का आपस

में शुभ सम्बन्ध हो तो व्यक्ति को थल सरकारी क्षेत्र में नौकरी मिल सकती है।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश या दशमेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति को थल सरकारी क्षेत्र में नौकरी मिल सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न या दशम भाव में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति को सरकारी क्षेत्र में नौकरी मिल सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के चतुर्थ भाव से चन्द्रमा स्थित हो और दशम भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो और अन्य ग्रह स्थिति अनुकूल हो तो व्यक्ति को सरकारी क्षेत्र में नौकरी शीघ्र मिल सकती है।

❖ क्या आपको उच्च अधिकारी से परेशानी हैं?

❖ क्या आपकी अपने सहकर्मचारी से अनबन होती है?

❖ क्या आपके अधिनस्थ कर्मचारी आपकी बात नहीं मानते?

यदि आपको अपने उच्च अधिकारी, सहकर्मचारी, अधिनस्थ कर्मचारी से परेशानी है। आपके अनुकूल कार्य नहीं करते या आपको करने नहीं देते? वह आपकी बात नहीं मानते? बिना वजह आपको परेशान करते हैं? अन आवश्यक कार्य आपसे करवाते हैं। आपका प्रमोशन रुकवा देते हैं। उचित कार्य करने पर भी आपके कार्य में नुकश निकालते हैं? यदि आप इसी तरह कि किसी समस्या से ग्रस्त हैं तो आप उन अधिकारी, सहकर्मी, अधिनस्थकर्मी या अन्य किसी व्यक्ति विशेष के नाम से गुरुत्व कार्यालय द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर-ओफिस में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,



❖ यदि प्रश्न कुण्डली में सम्बन्धित भाव और ग्रह कमजोर स्थिति में हो उन पर पाप ग्रहों का प्रभाव हो तो व्यक्ति को सरकारी क्षेत्र में नौकरी मिलने में विभिन्न कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है इस लिए व्यक्ति को किसी निजी क्षेत्र में नौकरी हेतु प्रयास करना चाहिए या व्यक्ति को सरकारी क्षेत्र में नौकरी प्राप्ति हेतु उपयुक्त प्रयास और उपायों को आजमाना चाहिए।

थल सेना में नौकरी के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में थल सेना में नौकरी प्राप्ति का विचार चतुर्थ भाव और चतुर्थेश से किया जाता है। वायु सेना के कारक ग्रह मंगल माना जाता है। इस लिए थल सेना में सफलता प्राप्ति के लिए मंगल की स्थिति शुभ होना महत्वपूर्ण होती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चतुर्थ भाव या चतुर्थेश तथा मंगल बलवान स्थिति में हो तथा अन्य ग्रह स्थिति अनुकूल हो तो व्यक्ति को थल सेना में नौकरी प्राप्त होने की सम्भावनाएं बनती हैं। इस इसके साथ ही प्रश्न कुण्डली का लग्न या लग्नेश शुभ प्रभाव में हो तथा अन्य ग्रह स्थिति अनुकूल हो तो व्यक्ति को थल सेना में नौकरी अवश्य प्राप्त हो सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश और दशमेश का आपस में शुभ सम्बन्ध हो तो व्यक्ति को थल सेना में नौकरी मिल सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश या दशमेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति को थल सेना में नौकरी मिल सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न या दशम भाव में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति को थल

सेना में नौकरी मिल सकती है।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के चतुर्थ भाव से चन्द्रमा स्थित हो और दशम भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो और अन्य ग्रह स्थिति अनुकूल हो तो व्यक्ति को थल सेना में नौकरी मिल सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में सम्बन्धित भाव और ग्रह कमजोर स्थिति में हो उन पर पाप ग्रहों का प्रभाव हो तो व्यक्ति को थल सेना में नौकरी मिलने में विभिन्न कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है इस लिए व्यक्ति को किसी और विभाग में नौकरी हेतु प्रयास करना चाहिए या व्यक्ति को थल सेना में नौकरी प्राप्ति हेतु उपयुक्त प्रयास करने चाहिए।

वायु सेना में नौकरी के योग

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में वायु सेना में नौकरी का विचार दशम भाव और दशमेश से किया जाता है। वायु सेना के कारक ग्रह बृहस्पति और शनि ग्रह माने जाते हैं। इस लिए वायु सेना में सफलता प्राप्ति के लिए बृहस्पति या शनि की स्थिति शुभ होना महत्वपूर्ण होती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में दशम भाव या दशमेश का बृहस्पति या शनि से शुभ सम्बन्ध बन रहा हो तो व्यक्ति को अपने प्रयासों के अनुरूप वायु सेना में नौकरी मिल सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न या दशम भाव में मिथुन, तुला या कुम्भ राशि स्थित हो तो व्यक्ति को वायु सेना में नौकरी मिलने के योग बनते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के चतुर्थ भाव से चन्द्रमा स्थित हो और दशम भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो और अन्य ग्रह स्थिति अनुकूल हो

सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान हेतु संपर्क करें।

गुरुत्व कार्यालय: Call Us : 91+ 9338213418, 91+ 9238328785,

E-mail Us:- gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva.karyalay@yahoo.in,



- तो व्यक्ति को वायु सेना में नौकरी मिल सकती हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश और दशमेश का आपस में शुभ सम्बन्ध हो तो व्यक्ति को वायु सेना में नौकरी मिल सकती हैं।
 - ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश या दशमेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति को वायु सेना में नौकरी मिल सकती हैं।
 - ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न या दशम भाव में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति को वायु सेना में नौकरी मिल सकती हैं।
 - ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में सम्बन्धित भाव और ग्रह कमजोर स्थिति में हो उन पर पाप ग्रहों का प्रभाव हो तो व्यक्ति को वायु सेना में नौकरी मिलने में विभिन्न कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है इस लिए व्यक्ति को किसी और विभाग में नौकरी हेतु प्रयास करना चाहिए या व्यक्ति को वायु सेना में नौकरी प्राप्त करने के लिए पूर्ण मेहनत और लगन से इसकी प्रस्तुति करने पर सफलता मिल सकती है।

जल सेना में नौकरी के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में नौकरी की स्थिति जानने के लिए दशम भाव और दशमेश से विचार किया जाता है।

जल सेना की नौकरी का कारक मंगल तथा चन्द्र ग्रह होते हैं।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में मंगल के साथ चन्द्रमा की युति बन रही हो तो यह उत्तम फलदाय होती हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में दशम भाव या दशमेश पर बलशाली चन्द्रमा का शुभ प्रभाव पड़ रहा हो तो व्यक्ति को जल सेना में नौकरी मिल सकती हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न या दशम भाव में कर्क या वृश्चिक अथवा मीन राशि हो तो व्यक्ति को निश्चित ही प्रयास करने पर जल सेना में नौकरी मिल सकती हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के चतुर्थ भाव से चन्द्रमा स्थित हो और दशम भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो और अन्य ग्रह स्थिति अनुकूल हो तो व्यक्ति को जल सेना में नौकरी मिल सकती हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश और दशमेश का आपस में शुभ सम्बन्ध हो तो व्यक्ति को जल सेना में नौकरी मिल सकती हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश या दशमेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति को जल सेना में नौकरी मिल सकती हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न या दशम भाव में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति को जल

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातों में पति-पत्नी के बिच में कलह होता रहता है, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालय द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,



सेना में नौकरी मिल सकती हैं।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में सम्बन्धित भाव और ग्रह कमजोर स्थिति में हो उन पर पाप ग्रहों का प्रभाव हो तो व्यक्ति को जल सेना में नौकरी मिलने में विभिन्न कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है इस लिए व्यक्ति को किसी और विभाग में नौकरी हेतु प्रयास करना चाहिए या व्यक्ति को जल सेना में नौकरी प्राप्त करने के लिए पूर्ण मेहनत और लगन से इसकी प्रस्तुति करने पर सफलता मिल सकती है।

पुलिस विभाग में नौकरी के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में नौकरी की स्थिति जानने के लिए दशम भाव और दशमेश से विचार किया जाता है। पुलिस की नौकरी का कारक मंगल ग्रह होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लगन या लग्नेश का दशम भाव या दशमेश और मंगल से शुभ सम्बन्ध बना रहा हो तो व्यक्ति को पुलिस विभाग में नौकरी मिलने की पूर्ण सम्भावनाएं बनती हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लगन या लग्नेश का दशम भाव या दशमेश और मंगल से अशुभ सम्बन्ध बना रहा

हो सम्बन्धित ग्रह और भाव पाप ग्रहों के प्रभाव में हो तो व्यक्ति को पुलिस विभाग में नौकरी मिलने की सम्भावनाएं नहीं बनती हैं, यदि मिल भी जाएं तो ग्रहों के प्रतिकूल होने के कारण नौकरी पुलिस विभाग में स्थायी नहीं हो पाती है।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश या दशमेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति को पुलिस विभाग में नौकरी मिल सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश और दशमेश का आपस में शुभ सम्बन्ध हो तो व्यक्ति को पुलिस विभाग में नौकरी मिल सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के चतुर्थ भाव से चन्द्रमा स्थित हो और दशम भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो और अन्य ग्रह स्थिति अनुकूल हो तो व्यक्ति को पुलिस विभाग में नौकरी मिल सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश और दशमेश का आपस में शुभ सम्बन्ध हो तो व्यक्ति को पुलिस विभाग में नौकरी मिल सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लगन या दशम भाव में ग्रह

❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?

❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?

❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुड़ाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालय द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA),

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,



उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति को पुलिस विभाग में नौकरी मिल सकती हैं।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में सम्बन्धित भाव और ग्रह कमजोर स्थिति में हो उन पर पाप ग्रहों का प्रभाव हो तो व्यक्ति को पुलिस विभाग में नौकरी मिलने में विभिन्न कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है इस लिए व्यक्ति को किसी और विभाग में नौकरी हेतु प्रयास करना चाहिए या व्यक्ति को पुलिस विभाग में नौकरी प्राप्त करने के लिए पूर्ण मेहनत और लगन से इसकी प्रस्तुति करने पर सम्भवतः सफलता मिल सकती है।

गुप्तचर विभाग में नौकरी के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में व्यक्ति के स्वभाव का आंकलन पंचम भाव एवं अष्टम भाव से किया जाता है। गुप्तचर विभाग के कार्यों के कारक शनि, राहू और केतु ग्रहों को माना गया है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में शनि, राहू और केतु में से किसी भी ग्रह का सम्बन्ध पंचम भाव या पंचमेश अथवा अष्टम भाव या अष्टमेश से अथवा दोनों भावों से स्थापित हो रहा हो तो व्यक्ति को गुप्तचर विभाग से सम्बन्धित कार्यों में सफलता प्राप्त हो सकती है। यदि प्रश्न कुण्डली में दशम भाव या दशमेश बलवान स्थिति में हो तो व्यक्ति चाहे हो उसे निश्चित ही गुप्तचर विभाग में नौकरी प्राप्त हो सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न या पंचम भाव या अष्टम भाव में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति को गुप्तचर विभाग में नौकरी मिल सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में पंचमेश और अष्टमेश का आपस में शुभ सम्बन्ध हो तो व्यक्ति को गुप्तचर विभाग में कार्य करने का मौका मिल सकता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के चन्द्रमा पंचम भाव या अष्टम भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर

रहा हो और अन्य ग्रह स्थिति अनुकूल हो तो व्यक्ति को गुप्तचर विभाग में नौकरी मिल सकती है।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश या पंचमेश या अष्टमेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति को गुप्तचर विभाग में नौकरी मिल सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में सम्बन्धित भाव और ग्रह कमजोर स्थिति में हो उन पर पाप ग्रहों का प्रभाव हो तो व्यक्ति को गुप्तचर विभाग में नौकरी मिलने में विभिन्न कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है इस लिए व्यक्ति को किसी और विभाग में नौकरी हेतु प्रयास करना चाहिए या व्यक्ति को गुप्तचर विभाग में नौकरी प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम और अन्य उपायों का सहारा लेना पड़ सकता है।

मार्केटिंग के क्षेत्र में नौकरी के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में मार्केटिंग क्षेत्र का विचार दशम भाव, दशमेश एवं एकादश भाव, एकादशेश से किया जाता है। मार्केटिंग क्षेत्र से जुड़े कार्यों का कारक बुध ग्रह माना गया है। मार्केटिंग क्षेत्र का अवलोकन करते समय लग्न और लग्नेश की भूमिका महत्वपूर्ण स्थान रखती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली का लग्न चर राशि में हो तो यह उत्तम सफलता मिलने का संकेत देता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में दशम भाव या दशमेश एवं एकादश भाव या एकादशेश का आपस में शुभ सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो व्यक्ति को मार्केटिंग के काम में सफलता मिलती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न, लग्नेश, दशम भाव, दशमेश, एकादश भाव, एकादशेश भाव में बुध बलवान स्थिति में शुभ अवस्था में स्थित हो और अशुभ ग्रह या पाप प्रभावों से मुक्त हो तो व्यक्ति को मार्केटिंग के काम में सफलता मिलती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न, लग्नेश, दशम भाव, दशमेश, एकादश भाव, एकादशेश भाव में बुध



कमजोर स्थिति में हो शुभ ग्रह से की युति या दृष्टि से वन्धित हो तो व्यक्ति को मार्केटिंग के काम में असफलता मिलती हैं या कठिन परिश्रम और संघर्ष करना पड़ता है।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न या दशम भाव या एकादश भाव में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति को मार्केटिंग के क्षेत्र में सफलता मिल सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्नेश या दशमेश भाव या एकादशेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति को मार्केटिंग के क्षेत्र में वाञ्छित सफलता मिल सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्नेश, दशमेश भाव, एकादशेश का आपस में शुभ सम्बन्ध बन रहा हो तो व्यक्ति को मार्केटिंग के क्षेत्र में सफलता मिलती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के चन्द्रमा दशम भाव या एकादश भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो और अन्य ग्रह स्थिति अनुकूल हो तो व्यक्ति को मार्केटिंग के क्षेत्र में सफलता मिल सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में सम्बन्धित भाव और ग्रह कमजोर स्थिति में हो उन पर पाप ग्रहों का प्रभाव हो तो व्यक्ति को मार्केटिंग के क्षेत्र में विभिन्न कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है इस लिए व्यक्ति को किसी और कार्य क्षेत्र का चुनाव करना चाहिए या व्यक्ति को मार्केटिंग के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है।

नौकरी बदलने के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में नौकरी की स्थिति जानने के लिए दशम भाव से विचार किया जाता है। नौकरी परिवर्तन का विचार करते समय बृहस्पति एवं शनि ग्रह का सूक्ष्म का अवलोकन करना महत्वपूर्ण होता है।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के तृतीय भाव या तृतीयेश एवं दशम भाव या दशमेश बलवान स्थिति में हो तो नौकरी बदलना लाभदायक होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में दशम भाव में चर राशि में हो और उसमें शुभ ग्रह स्थित हो या शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार नौकरी की शीघ्र प्राप्ति होने की संभावना बनती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश का दशमेश या तृतीयेश का आपस में शुभ सम्बन्ध हो तो व्यक्ति के लिए नौकरी बदलना लाभदायक हो सकता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा तृतीय भाव या दशम भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो और अन्य ग्रह स्थिति अनुकूल हो तो व्यक्ति के लिए नौकरी बदलना लाभप्रद हो सकता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न या दशम भाव या तृतीय भाव में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति के लिए नौकरी में परिवर्तन करना लाभप्रद होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश या दशमेश या तृतीयेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति के लिए नौकरी में परिवर्तन करना लाभदायक होता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में सम्बन्धित भाव और ग्रह कमजोर स्थिति में हो उन पर पाप ग्रहों का प्रभाव हो तो व्यक्ति के नौकरी में परिवर्तन करने पर विभिन्न कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है जिस कारण सम्भवत उसकी नौकरी अस्थायी हो सकती है या उसे पुनः नई नौकरी की तलाश करनी पड़ सकती है। इस लिए व्यक्ति के लिए उपयुक्त रहेगा की वह ग्रह स्थिति के सामान्य होने तक नौकरी में परिवर्तन का विचार छोड़ कर मौजूदा नौकरी में बने रहें।

नौकरी में तबादले के योग (ट्रान्सफर/स्थानांतर)

- ❖ प्रश्न कुण्डली में नौकरी की स्थिति जानने के लिए दशम भाव से विचार किया जाता है।



- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न और दशम भाव में चर राशि में हो और उसमें शुभ ग्रह स्थित हो या शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो व्यक्ति का स्थानांतर शीघ्र होने की संभावना बनती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में दशम भाव का तृतीय भाव से शुभ सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो व्यक्ति का पदोन्नति के साथ स्थानांतर हो सकता है।
- ❖ इस से विपरित यदि प्रश्न कुण्डली में दशम भाव का तृतीय भाव से अशुभ सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो व्यक्ति का अवनति अथवा बिना पदोन्नति के तबादला होता है। इसी स्थिति में यदि शुभ ग्रहों की दृष्टि संबंधित भाव पर नहीं पड़ रही हो तो यदि व्यक्ति अपना तबादला रुकवाने का प्रयास करे तो उसमें भी उसे असफलता मिलने के योग बनते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में सम्बन्धित ग्रह और भाव सामान्य स्थिति में हो ग्रह ना ही अधिक अशुभ हो और ना ही अधिक शुभ हो अर्थात् ग्रहों का प्रभाव मध्यम हो, तो व्यक्ति का स्थानांतर होने की संभावना कम बनती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न या तृतीय भाव या दशम भाव में ग्रह उच्च राशि का हो कर स्थित हो तो व्यक्ति का तबादला शीघ्र होने की संभावना नहीं बनती।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश का तृतीयेश या दशमेश के साथ में शुभ सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो व्यक्ति का तबादला शीघ्र होने की संभावना नहीं बनती। यदि किसी कारण से तबादला हो भी जाता है तो प्रयासों से रोका जा सकता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा तृतीय भाव या दशम भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो व्यक्ति का तबादला शीघ्र होने की संभावना नहीं बनती।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश का तृतीयेश या दशमेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति का तबादला होने की संभावना नहीं बनती।

नोट: यदि ग्रहों और भावों का प्रभाव प्रश्न कुण्डली में शुभ हो या ग्रह उच्च स्थिति में स्थित हो तो तबादले की स्थिति नहीं बनने का अर्थ है व्यक्ति का तबादला कष्ट या कम लाभ देने वाले स्थानों पर नहीं होता किन्तु ग्रहों के शुभ प्रभाव में होने से लाभदायक स्थानों पर तबादला होने की संभावना बन सकती है।

पदोन्नति (प्रमोशन) के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में नौकरी और उसमें तरक्की के का विचार दशम भाव और दशमेश से किया जाता है। पदोन्नति के कारक सूर्य एवं बृहस्पति ग्रह की स्थिति भी पदोन्नति का विचार करते समय विशेष महत्व रखती हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या लग्नेश, दशम भाव या दशमेश एवं सूर्य अथवा बृहस्पति की स्थिति उत्तम हो तो व्यक्ति को नौकरी में पदोन्नति प्राप्त होती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्न या लग्नेश, दशम भाव या दशमेश एवं सूर्य अथवा बृहस्पति पाप प्रभाव में हो तो व्यक्ति को पदोन्नति में विभिन्न रुकावटों का सामना कर पड़ सकता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश या दशमेश उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति को पदोन्नति मिलने के योग बनते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न या दशम भाव में ग्रह उच्च राशि का हो कर स्थित हो तो व्यक्ति की पदोन्नति हो सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा सप्तम दृष्टि से दशम भाव को देख कर उसे बल प्रदान कर रहा हो और अन्य सभी सम्बन्धित ग्रह एवं भाव अनुकूल स्थिति में हो तो व्यक्ति को शीघ्र पदोन्नति मिलने की संभावना बन सकती है।



मुकदमे में सफलता के योग

स्वस्तिक.ऐन.जोशी

मुकदमे में सफलता के योग

- ❖ प्रश्न कुण्डली में मुकदमें का विचार सप्तम भाव से किया जाता है। प्रश्न कुण्डली में लग्न व लग्नेश की स्थिति भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यदि लग्नेश बलवान हो तो व्यक्ति का भाग्य उत्तम होता है जिस कारण उसे शीघ्र सफलता मिलने की संभावनाएं बनती हैं। इससे विपरित यदि लग्न व लग्नेश कमजोर या पाप प्रभाव में हो तो व्यक्ति का भाग्य दुर्बल होता है, जिस कारण जल्द कोई भी फैसला व्यक्ति के पक्ष में नहीं आता है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में सप्तम भाव शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो व्यक्ति को मुकदमे में सफलता मिलने के योग बनते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में सप्तम भाव अशुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो व्यक्ति को मुकदमे में पराजय या विलम्ब का सामना करना पड़ सकता है। ऐसी स्थिति में हताशा और निराशा का छोड़ कर विजय प्राप्ति की दिशा में प्रयास करने चाहिए। आपके प्रयासों एवं ग्रहों के अनुकूल होने तक सम्भवतः आपको विजय की प्राप्ति हो सकती है, इस लिए अपना प्रयास जारी रखें।

- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में ग्रहों का प्रभाव मध्यम हो अर्थात् अधिक बलशाली या दुर्बल न हो तो ग्रह स्थिति यह संकेत देती है कि व्यक्ति को मुकदमे में जीत के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए भले ही उसे फैसला अपने हक में नज़र आ रहा हो लेकिन जीत मिलने तक उसके लिए प्रयास नहीं छोड़ने चाहिए।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्न या सप्तम भाव में ग्रह उच्च राशि का होकर स्थित हो तो व्यक्ति को मुकदमे में सफलता मिल सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली के लग्नेश या सप्तमेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो व्यक्ति को मुकदमे में सफलता मिलने के योग बनते हैं।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में लग्नेश और सप्तमेश का आपस में शुभ सम्बन्ध बन रहा हो तो व्यक्ति को मुकदमे में सफलता मिल सकती है।
- ❖ यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा लग्न या सप्तम भाव को सप्तम दृष्टि से देखकर उसे बल प्रदान कर रहा हो तो व्यक्ति को मुकदमे में सफलता मिलने की सम्भावनाएं प्रबल बनती हैं।

संपूर्ण जन्म कुंडली परामर्श

जन्म कुंडली में उपस्थित अच्छे-बुरे योगों तथा दोषों के बारे में संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर इन योगों अथवा दोषों से होने वाले लाभ-हानि के बारे में जानकारी प्राप्त कर उन दोषों के निवारण के उपाय से संबंधित विस्तृत जानकारी प्राप्त करने हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com



शनि प्रदोष व्रत का महत्व

चिंतन जोशी

सनातन धर्म में प्रदोष व्रत का विशेष महत्व माना जाता है। प्रत्येक माह के शुक्ल और कृष्ण दोनों पक्षों के तेरहवें दिन अर्थात् त्रयोदशी को प्रदोष व्रत कहा जाता है।

इस दिन किए जाने वाले व्रत को प्रदोष व्रत कहा जाता है। प्रदोष व्रत के दिन भगवान शिव और माता पार्वती की आराधना करने का विधान है। विद्वानों के मतानुसार प्रदोष व्रत से व्यक्ति को सफलता, शान्ति प्रदान करने वाला एवं उसकी समस्त इच्छाओं की पूर्ति करने वाला है।

एसी धार्मिक मान्यता है कि प्रदोष के दिन भगवान शिव के किसी भी रूप का दर्शन करने मात्र से व्यक्ति की सारी अज्ञानता का नाश कर देता है और भक्त को शिव की कृपा का भागी बनाता है।

जब शनिवार के दिन प्रदोष व्रत पड़ता है, तो उसे शनि प्रदोष व्रत के नाम से जाना जाता है। शनिदेव नवग्रहों में से एक महाग्रह है। शनिदेव के बारे में शास्त्रों में वर्णन है कि शनि का कोप अत्यन्त भयंकर होता है। भयंकर कोप शान्त करने हेतु पुराणों में उल्लेख है कि शनि प्रदोष व्रत करने से शनि देव का प्रकोप स्वतः शान्त हो जाता है। जिन लोगों पर शनि की साढ़ेसाती और ढैया का प्रभाव हो, उनके लिए शनि प्रदोष व्रत करना विशेष हितकारी माना गया है।

पूर्ण विधि-विधान व निष्ठा से किया गया प्रदोष व्रत शनिदेव की कृपा प्राप्त करने का एक शास्त्रोक्त व आसान उपाय है। प्रदोष व्रत के प्रभाव से शनि से संबंधित पीडा दूर होती है, और शनिदेव का आशीर्वाद भी मिलता है जिससे व्यक्ति की सभी मनोकामनाएँ पूरी होती जाती हैं।

शनि प्रदोष के दिन शनि की कारक वस्तुओं जैसे लोहा, तैल, काले तिल, काली उड़द, कोयला और कम्बल आदि का दान करना शुभ फलप्रद होता है, और शनि-मंदिर में जाकर तैल का दिया जलाता है तथा उपवास करता है, शनिदेव उससे प्रसन्न होकर उसके सारे दुःखों को दूर कर देते हैं। विद्वानों के अनुशार शास्त्रों में वर्णित है कि उत्तम संतान की कामना रखने वाले दम्पति को शनि प्रदोष व्रत अवश्य करना चाहिए। शास्त्रों में शनि प्रदोष व्रत शीघ्र ही संतान देने वाला माना गया है।

संतान-प्राप्ति के हेतु शनि प्रदोष वाले दिन सुबह स्नानादी करने के पश्चात् पति-पत्नी को मिलकर शिव-पार्वती और गणेश की का विधि-विधान से पूजन-अर्चन करना चाहिए और शिवलिंग पर जलाभिषेक करना चाहिए। इसके पश्चात् शनिदेव की कृपा प्राप्त करने हेतु पीपल के वृक्ष की जड़ में जल चढ़ाना चाहिए। साथ ही दम्पति को पूरे दिन उपवास करना चाहिए। ऐसा करने से जल्दी ही संतान की प्राप्ति होती है।

शनि प्रदोष व्रत के दिन साधक को संध्या-काल में भगवान का भजन-पूजन करना चाहिए और शिवलिंग का जल और बिल्व की पत्तियों से अभिषेक करना चाहिए। साथ ही इस दिन महामृत्युंजय-मंत्र के जाप का भी विधान है। इस दिन प्रदोष व्रत कथा का पाठ करना चाहिए और पूजा के बाद भभूत को मस्तक पर लगाना चाहिए। शास्त्रों के अनुसार जो साधक इस तरह शनि प्रदोष व्रत का पालन करता है, उसके सभी कष्ट समाप्त हो जाते हैं और सम्पूर्ण इच्छाएँ पूरी होती हैं।

22 जून
प्रातः 4.15 से
सूर्योदय तक



गुरु पुष्यामृत योग

चिंतन जोशी

हर दिन बदलने वाले नक्षत्र मे पुष्य नक्षत्र भी एक नक्षत्र है, एवं अन्दाज से हर २७वें दिन पुष्य नक्षत्र होता है। यह जिस वार को आता है, इसका नाम भी उसी प्रकार रखा जाता है।

इसी प्रकार गुरुवार को पुष्य नक्षत्र होने से गुरु पुष्य योग कहाजात है।

गुरु पुष्य योग के बारे में विद्वान ज्योतिषियों का कहना हैं कि पुष्य नक्षत्र में धन प्राप्ति, चांदी, सोना, नये वाहन, बही-खातों की खरीदारी एवं गुरु ग्रह से संबंधित वस्तुएं अत्याधिक लाभ प्रदान करती है।

हर व्यक्ति अपने शुभ कार्यों में सफलता हेतु इस शुभ मूर्त का चयन कर सबसे उपयुक्त लाभ प्राप्त कर सकता है और अशुभता से बच सकता है।

अपने जीवन में दिन-प्रतिदिन सफलता की प्राप्ति के लिए इस अद्भुत मूर्त वाले दिन किसी भी नये कार्य को जैसे नौकरी, व्यापार या परिवार से जुड़े कार्य, बंध हो चुके कार्य शुरू करने के लिये एवं जीवन के कोई भी अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र में कार्य करने से 99.9% निश्चित सफलता की संभावना होती है।

- गुरुपुष्यामृत योग बहुत कम बनता है जब गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र होता है । तब बनता है गुरु पुष्य योग।
- गुरुवार के दिन शुभ कार्यों एवं आध्यात्म से संबंधित कार्य करना अति शुभ एवं मंगलमय होता है।
- पुष्य नक्षत्र भी सभी प्रकार के शुभ कार्यों एवं आध्यात्म से जुड़े कार्यों के लिये अति शुभ माना गया है।

- जब गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र होता तब यह योग बन जाता है अद्भुत एवं अत्यंत शुभ फल प्रद अमृत योग।
- एक साधक के लिए बेहद फायदेमंद होता हैं **गुरुपुष्यामृत योग**।
- इस दिन विद्वान एवं गुढ रहस्यों के जानकार मां महालक्ष्मी की साधना करने की सलाह देते हैं।
- यह योग विशेष साधना के लिये अति शुभ एवं शीघ्र परीणाम देने वाला होता है।
- मां महालक्ष्मी का आह्वान करके अत्यंत सरलता से उनकी कृपा द्रष्टि से समृद्धि और शांति प्राप्त कि जासकती है।

पुष्य नक्षत्र का महत्व क्यों हैं?

शास्त्रों में पुष्य नक्षत्र को नक्षत्रों का राजा बताया गया हैं। जिसका स्वामी शनि ग्रह हैं। शनि को ज्योतिष में स्थायित्व का प्रतीक माना गया हैं। अतः पुष्य नक्षत्र सबसे शुभ नक्षत्रों में से एक हैं।

यदि रविवार को पुष्य नक्षत्र हो तो रवि पुष्य योग और गुरुवार को हो तो और गुरु पुष्य योग कहलाता हैं।

शास्त्रों में पुष्य योग को 100 दोषों को दूर करने वाला, शुभ कार्य उद्देश्यों में निश्चित सफलता प्रदान करने वाला एवं बहुमूल्य वस्तुओं कि खरीदारी हेतु सबसे श्रेष्ठ एवं शुभ फलदायी योग माना गया है।

गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र के संयोग से सर्वार्थ अमृतसिद्धि योग बनता है। शनिवार के दिन पुष्य नक्षत्र के संयोग से सर्वार्थसिद्धि योग होता है। पुष्य नक्षत्र को ब्रह्माजी का श्राप मिला था। इसलिए शास्त्रोक्त विधान से पुष्य नक्षत्र में विवाह वर्जित माना गया है।

22 जून
प्रातः 4.15 से
सूर्योदय तक



नवरत्न जड़ित श्री यंत्र



शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों ओर यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नों को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत ऐश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को ऐसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं ऐसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरुत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,



मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथों में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता है। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रूप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण ने अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हों!, अनावश्यक वाहन को नुक्सान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्सपोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुड़े हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योंकि, इसी व्यवसाय से जुड़े सैकड़ों लोगों का अनुभव रहा है की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चों से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानों का अनुभव रहा है, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया है, उन लोगों के वाहन बड़ी से बड़ी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक़शान इत्यादि नहीं होता है और नाहीं अनावश्यक रूप से उसमें खराबी आति है।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वह जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता है। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। **मूल्य Rs- 255 से 10900 तक**

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुशार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात् यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता है। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, चूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता है और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम है।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। **मूल्य Rs- 730 से 10900 तक**

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,

BHUBNESWAR-751018, (ORISSA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,



मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	शमशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयै श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस
(Gold Plated)

ताम्र पत्र पर रजत पोलीस
(Silver Plated)

ताम्र पत्र पर
(Copper)

साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	460	1" X 1"	370	1" X 1"	255
2" X 2"	820	2" X 2"	640	2" X 2"	460
3" X 3"	1650	3" X 3"	1090	3" X 3"	730
4" X 4"	2350	4" X 4"	1650	4" X 4"	1090
6" X 6"	3600	6" X 6"	2800	6" X 6"	1900
9" X 9"	6400	9" X 9"	5100	9" X 9"	3250
12" X 12"	10800	12" X 12"	8200	12" X 12"	6400

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Our Website:- <http://gk.yolasite.com/> and <http://gurutvakaryalay.blogspot.com/>



राशि रत्न

मूंगा



हीरा



पन्ना



मोती



माणक



पन्ना

Red Coral
(Special)Diamond
(Special)Green Emerald
(Special)Naturel Pearl
(Special)Ruby
(Old Berma)
(Special)Green Emerald
(Special)

5.25" Rs. 1050
6.25" Rs. 1250
7.25" Rs. 1450
8.25" Rs. 1800
9.25" Rs. 2100
10.25" Rs. 2800

10 cent Rs. 4100
20 cent Rs. 8200
30 cent Rs. 12500
40 cent Rs. 18500
50 cent Rs. 23500

5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 28000

5.25" Rs. 910
6.25" Rs. 1250
7.25" Rs. 1450
8.25" Rs. 1900
9.25" Rs. 2300
10.25" Rs. 2800

2.25" Rs. 12500
3.25" Rs. 15500
4.25" Rs. 28000
5.25" Rs. 46000
6.25" Rs. 82000

5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 28000

** All Weight In Rati

All Diamond are Full
White Colour.

** All Weight In Rati

** All Weight In Rati

** All Weight In Rati

** All Weight In Rati

तुला राशि:

वृश्चिक राशि:

धनु राशि:

मकर राशि:

कुंभ राशि:

मीन राशि:

हीरा



मूंगा



पुखराज



नीलम



नीलम



पुखराज

Diamond
(Special)Red Coral
(Special)Y.Sapphire
(Special)B.Sapphire
(Special)B.Sapphire
(Special)Y.Sapphire
(Special)

10 cent Rs. 4100
20 cent Rs. 8200
30 cent Rs. 12500
40 cent Rs. 18500
50 cent Rs. 23500

5.25" Rs. 1050
6.25" Rs. 1250
7.25" Rs. 1450
8.25" Rs. 1800
9.25" Rs. 2100
10.25" Rs. 2800

5.25" Rs. 30000
6.25" Rs. 37000
7.25" Rs. 55000
8.25" Rs. 73000
9.25" Rs. 91000
10.25" Rs.108000

5.25" Rs. 30000
6.25" Rs. 37000
7.25" Rs. 55000
8.25" Rs. 73000
9.25" Rs. 91000
10.25" Rs.108000

5.25" Rs. 30000
6.25" Rs. 37000
7.25" Rs. 55000
8.25" Rs. 73000
9.25" Rs. 91000
10.25" Rs.108000

5.25" Rs. 30000
6.25" Rs. 37000
7.25" Rs. 55000
8.25" Rs. 73000
9.25" Rs. 91000
10.25" Rs.108000

All Diamond are Full
White Colour.

** All Weight In Rati

** All Weight In Rati

** All Weight In Rati

** All Weight In Rati

** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,



मंत्र सिद्ध रुद्राक्ष

Rudraksh List	Rate In Indian Rupee	Rudraksh List	Rate In Indian Rupee
एकमुखी रुद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	2800, 5500	आठ मुखी रुद्राक्ष (नेपाल)	820,1250
एकमुखी रुद्राक्ष (नेपाल)	750,1050, 1250,	आठ मुखी रुद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	1900
दो मुखी रुद्राक्ष (हरिद्रार, रामेश्वर)	30,50,75	नौ मुखी रुद्राक्ष (नेपाल)	910,1250
दो मुखी रुद्राक्ष (नेपाल)	50,100,	नौ मुखी रुद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	2050
दो मुखी रुद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	450,1250	दस मुखी रुद्राक्ष (नेपाल)	1050,1250
तीन मुखी रुद्राक्ष (हरिद्रार, रामेश्वर)	30,50,75,	दस मुखी रुद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	2100
तीन मुखी रुद्राक्ष (नेपाल)	50,100,	ग्यारह मुखी रुद्राक्ष (नेपाल)	1250,
तीन मुखी रुद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	450,1250,	ग्यारह मुखी रुद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	2750,
चार मुखी रुद्राक्ष (हरिद्रार, रामेश्वर)	25,55,75,	बारह मुखी रुद्राक्ष (नेपाल)	1900,
चार मुखी रुद्राक्ष (नेपाल)	50,100,	बारह मुखी रुद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	2750,
पंच मुखी रुद्राक्ष (नेपाल)	25,55,	तेरह मुखी रुद्राक्ष (नेपाल)	3500, 4500,
पंच मुखी रुद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	225, 550,	तेरह मुखी रुद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	6400,
छह मुखी रुद्राक्ष (हरिद्रार, रामेश्वर)	25,55,75,	चौदह मुखी रुद्राक्ष (नेपाल)	10500
छह मुखी रुद्राक्ष (नेपाल)	50,100,	चौदह मुखी रुद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	14500
सात मुखी रुद्राक्ष (हरिद्रार, रामेश्वर)	75, 155,	गौरीशंकर रुद्राक्ष	1450
सात मुखी रुद्राक्ष (नेपाल)	225, 450,	गणेश रुद्राक्ष (नेपाल)	550
सात मुखी रुद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	1250	गणेश रुद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	750

रुद्राक्ष के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY,

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA),

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

हत्था जोड़ी- Rs- 370

सियार सिंगी- Rs- 370

बिल्ली नाल- Rs- 370

घोड़े की नाल- Rs.351

दक्षिणावर्ती शंख- Rs- 550

मोति शंख- Rs- 550

माया जाल- Rs- 251

इन्द्र जाल- Rs- 251

धन वृद्धि हकीक सेट Rs-251

GURUTVA KARYALAY

Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com



श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता है जब उसके चारों ओर का माहोल उसके अनुरूप उसके वश में हो। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दूसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता है, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी ओर खींचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता है। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिक एवं दिव्य चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता है।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती है, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता है।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती है उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता है।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती है जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती है।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता है, जो एक प्राकृति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम है।

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।
- विद्वानो के मतानुशार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती है ।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी ओर आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता है।
- पति-पत्नी में आपसी प्रेम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता है।

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहूर्त में निर्माण किया जाता है। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राह्मणों द्वारा शुभ मुहूर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता है। जिस के फल स्वरूप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता है। कवच को गले में धारण करने से वह अत्यंत प्रभाव शाली होता है। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता है जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र जात होने लगता है।

मूल्य मात्र: 1900

मूल्य:- Rs. 730 से Rs. 10900 तक उप्लब्ध

GURUTVA KARYALAY

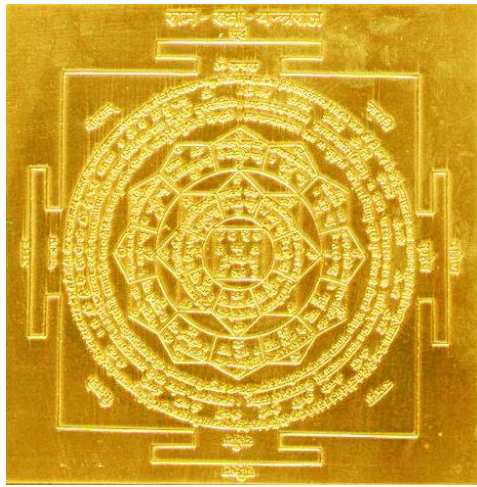
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

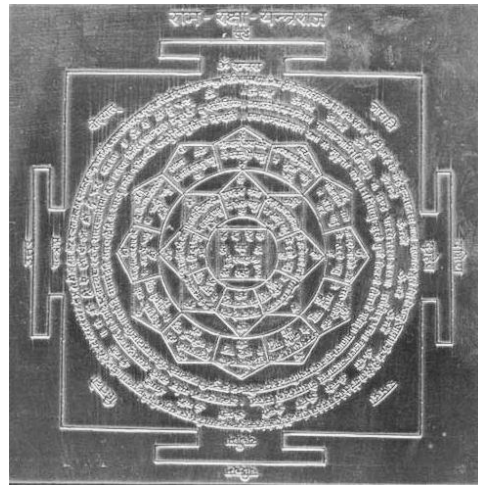


राम रक्षा यंत्र

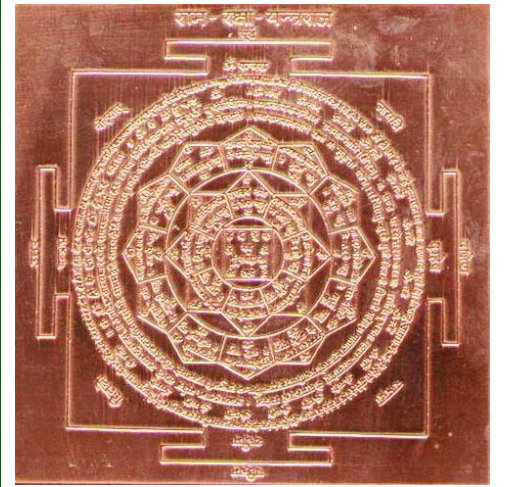
राम रक्षा यंत्र सभी भय, बाधाओं से मुक्ति व कार्यो में सफलता प्राप्ति हेतु उत्तम यंत्र हैं। जिसके प्रयोग से धन लाभ होता हैं व व्यक्ति का सर्वांगी विकार होकर उसे सुख-समृद्धि, मानसम्मान की प्राप्ति होती हैं। राम रक्षा यंत्र सभी प्रकार के अशुभ प्रभाव को दूर कर व्यक्ति को जीवन की सभी प्रकार की कठिनाइयों से रक्षा करता हैं। विद्वानो के मत से जो व्यक्ति भगवान राम के भक्त हैं या श्री हनुमानजी के भक्त हैं उन्हें अपने निवास स्थान, व्यवसायीक स्थान पर राम रक्षा यंत्र को अवश्य स्थापीत करना चाहिये जिससे आने वाले संकटो से रक्षा हो उनका जीवन सुखमय व्यतीत हो सके एवं उनकी समस्त आदि भौतिक व आध्यात्मिक मनोकामनाएं पूर्ण हो सके।



ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस
(Gold Plated)



ताम्र पत्र पर रजत पोलीस
(Silver Plated)



ताम्र पत्र पर
(Copper)

साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	460	1" X 1"	370	1" X 1"	255
2" X 2"	820	2" X 2"	640	2" X 2"	460
3" X 3"	1650	3" X 3"	1090	3" X 3"	730
4" X 4"	2350	4" X 4"	1650	4" X 4"	1090
6" X 6"	3600	6" X 6"	2800	6" X 6"	1900
9" X 9"	6400	9" X 9"	5100	9" X 9"	3250
12" X 12"	10800	12" X 12"	8200	12" X 12"	6400

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Our Website:- <http://gk.yolasite.com/> and <http://gurutvakaryalay.blogspot.com/>



जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चौबीस तीर्थकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रुत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,



श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)



घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापित करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता है। जहरीले और हिंसक प्राणी से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती है। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती है।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यों पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गये हों तो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता है तो रक्षण होता है।

कुछ जानकारों के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुड़े अद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया है और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म

करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता है तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही है, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा है।

मूल्य:- Rs. 1650 से Rs. 10900 तक उपलब्ध

संपर्क करें। **GURUTVA KARYALAY**

Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Our Website:- <http://gk.yolasite.com/> and <http://gurutvakaryalay.blogspot.com/>



अमोघ महामृत्युंजय कवच

अमोघ महामृत्युंजय कवच व उल्लेखित अन्य सामग्रीयों को शास्त्रोक्त विधि-विधान से विद्वान् ब्राह्मणों द्वारा सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र जप एवं दशांश हवन द्वारा निर्मित कवच अत्यंत प्रभावशाली होता है।

अमोघ महामृत्युंजय कवच
कवच बनवाने हेतु:

अपना नाम, पिता-माता का नाम,
गोत्र, एक नया फोटो भेजे

अमोघ महामृत्युंजय
कवच

दक्षिणा मात्र: 10900

राशी रत्न एवं उपरत्न



सभी साईज एवं मूल्य व क्वालिटी के
असली नवरत्न एवं उपरत्न भी उपलब्ध हैं।

विशेष यंत्र

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र सोने-चांदि-ताम्बे में आपकी आवश्यकता के अनुसार किसी भी भाषा/धर्म के यंत्रों को आपकी आवश्यक डिजाईन के अनुसार २२ गेज शुद्ध ताम्बे में अखंडित बनाने की विशेष सुविधाएं उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के रत्न एवं उपरत्न व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं। ज्योतिष कार्य से जुड़े बंधु/बहन व रत्न व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिये विशेष मूल्य पर रत्न व अन्य सामग्रीया व अन्य सुविधाएं उपलब्ध हैं।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,



मासिक राशि फल

चिंतन जोशी

मेष: 1 से 15 जून 2012 : महत्वपूर्ण कार्यों को करने में आप सफल होंगे। भूमि-भवन के क्रय विक्रय से धन लाभ होगा। नौकरी, व्यवसाय में धन प्राप्ति होगी जिसे आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आंखों से संबंधित समस्या हो सकती है अतः आंखों का विशेष ध्यान रखे। सामाजिक मान-सम्मान और पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। व्यवसायिक यात्रा लाभदायक सिद्ध होगी।



16 से 30 जून 2012 : नये लोगों की मित्रता से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। ऋण देने से बचें अन्यथा धन की पुनः प्राप्ति में विलंब हो सकता है। जीवन साथी से सहयोग प्राप्त होगा। शुभ समाचार कि प्राप्ति हो सकती है। इस अवधि में आपके ऊपर कार्य के दबावों के चलते सुस्ती का असर देखने को मिल सकता है। प्रकृति में बदलाव से आपका

स्वास्थ्य नरम रह सकता है।

वृषभ: 1 से 15 जून 2012 : यदि आप नौकरी में हैं तो पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी प्राप्त हो सकती है, व्यवसाय में हैं तो उन्नति कि मार्ग प्रसस्त होंगे। शत्रु एवं विरोधी पक्ष आपका नाम और प्रतिष्ठा को दूषित करने का प्रयास कर सकते हैं। वाहन सावधानी से चलाये या वाहन से सावधान रहे आकस्मिक दुर्घटना हो सकती है। जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।



16 से 30 जून 2012 : कार्यक्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम एवं मेहनत के उपरांत लाभदायक परिणाम प्राप्त होंगे। इस दौरान सतर्क रहें धन हानि भी हो सकती है। आपके भौतिक सुख साधनों में वृद्धि होने के योग हैं। जीवन साथी से सुख कि प्राप्ति होगी। व्यसनों दूर रहें अन्यथा आपका स्वास्थ्य अत्याधिक प्रभावित होने के योग हैं। संतान से लेकर कोई परेशानी हो सकती है।

मिथुन: 1 से 15 जून 2012 : अपने महत्व पूर्ण कार्यों में अतिरिक्त सावधानी बरते अन्यथा बने बनाए कार्य बिगड़ सकते हैं। इस लिए आपको पूर्ण योजनाबद्ध तरिके से कार्य करना चाहिये। आपकी रुचि इष्ट आराधना में अधिक हो सकती है। परिवार में किसी सदस्य के जिद्दी स्वभाव के कारण आपके परिवार में मानसिक अशांति का माहोल हो सकता है।

16 से 30 जून 2012 : आपके महत्वपूर्ण कार्य एवं योजनाओं में रुकावटे आसकती हैं। उच्च अधिकारी एवं सहकर्मी के कार्य परेशानियों संभव हैं। सावधान रहें। समय प्रतिकूल हैं अतः थोड़े समय के लिए कार्य को स्थगित करना उचित रहेगा। अपने खाने- पीने का

ध्यान रखे अन्यथा आपका का स्वास्थ्य नरम हो सकता है। परिवार की सुख-शान्ति को बनाये रखने का प्रयास करें।





कर्क: 1 से 15 जून 2012 : नौकरी-व्यवसाय में उन्नति व आयके नए स्रोत मिलने के योग हैं। इष्ट मित्रों व परिजनो से से धन लाभ प्राप्ति के योग हैं। भौतिक सुख-सुविधा के साधन बढ़ने के योग हैं। आपका सामाजिक मान-सम्मान बढ़ेगा। जिससे शत्रु एवं विरोधी पक्ष परास्त होंगे। वाहन सावधानी से चलाये या वाहन से सावधान रहे आकस्मिक दुर्घटना हो सकती हैं।

16 से 30 जून 2012 : आपके द्वारा किए गए शुभ कार्यों का धनलाभ आपको आने भविष्य में प्राप्त होगा। मौसम के परिवर्तन से आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल आसकता हैं। दूरस्थ स्थानो या विदेश से धन प्राप्ति के योग हैं। कार्य की व्यस्तता के कारण परिवार में अशांति का वातावरण हो सकता हैं। अपने खाने-पीने की आदतों को बिगडने नहीं दे।



सिंह: 1 से 15 जून 2012 : पूंजि निवेश इत्यादि के लिए समय प्रतिकूल हैं इस लिए निवेश करने से परहेज करें। आपके कार्यक्षेत्र में महत्वपूर्ण बदलाव होंगे। आपकी कार्य करने की शैली सुधरेगी। आपकी आर्थिक स्थिती में सुधार होगा। संतान संबंधित चिंताओं का निवारण होगा। दूरस्थ स्थानो की यात्राएं संभव हैं। प्रेम संबंधो में सफलता प्राप्त होगी। स्वास्थ्य संबंधित परेशानीयां दूर होगी।



16 से 30 जून 2012 : आर्थिक पक्ष थोडा कमजोर हो सकता हैं। गलत निर्णयो के कारण आर्थिक पक्ष कमजोर हो सकता हैं। जीवनसाथी के साथ संबंधों में मधुरता आएगी। पारिवारिक सदस्यों के बीच में वाद-विवाद के कारण तनाव हो सकता हैं।

धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि रखने का प्रयास कर सकते हैं। परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य चिंताकारक हो सकता हैं।

कन्या: 1 से 15 जून 2012 : कार्यक्षेत्र में आपको मनोनुकूल लाभ प्राप्त होगा। आपके भौतिक सुख-साधनो में वृद्धि होगी। जिस कारण आपकी आय के अनुरूप खर्च के योग भी बन सकते हैं। परिवार के किसी सदस्या का स्वास्थ्य चिंता का विषय हो सकता हैं। आपके सामाजिक मान-सम्मान और पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। प्रेम संबंधित मामलो में अनबन हो सकती हैं।

16 से 30 जून 2012 : नौकरी में हैं तो स्थानांतर हो सकता हैं या नई नौकरी प्राप्त हो सकती हैं, व्यवसाय में हैं तो उन्नती के नए मार्ग प्राप्त होंगे। मित्र एवं परिवार के लोगो का सहयोग प्राप्त होगा। अपने कार्य क्षेत्र में विपरीत लिंग के प्रति आपका आकर्षण आपके लिए परेशानी खडी कर सकता हैं अतः अपने विचारों को शुद्ध रखे। आपको पेट के रोग के कारण पीडा हो सकती हैं।





तुला: 1 से 15 जून 2012 : आपके भौतिक सुख-साधनों में वृद्धि होगी। किये गये पूंजि निवेश या भूमि-भवन से संबंधित मामलों में सतर्क रहे भारी नुकसान हो सकता है। आपके व्यवसायिक कार्यों में विलंब हो सकता है। परिवार में खुशियों का माहोल रहेगा और परिवार में किसी नये सदस्य की वृद्धि होने के योग बन रहे हैं।



16 से 30 जून 2012 : यदि आप नौकरी में हैं तो पदोन्नति हो सकती है। भूमि-भवन के क्रय विक्रय से धन लाभ होगा। कार्यक्षेत्र में आपके जोश एवं उत्साह में वृद्धि होने से आपको मनोनुकूल लाभ प्राप्त होगा। आपके विरोधी एवं शत्रु पक्ष परास्त होंगे। परिवार में मांगलिक कार्य हो सकते हैं एवं शुभ समाचार की प्राप्ति हो सकती है।

अपने खाने-पीने का विशेष ध्यान रखे अन्यथा आपका स्वास्थ्य नरम हो सकता है।

वृश्चिक: 1 से 15 जून 2012 : आपकी महत्वपूर्ण योजनाएँ पूर्ण हो सकती हैं। अपने कार्यक्षेत्र से आप विशेष धनलाभ प्राप्त करने में सफल रहेंगे। किसी व्यक्ति विशेष से वाद-विवाद करने से बचे अन्यथा कोर्ट-कचहरी के चक्करों में उलझना पड़ सकता है। अपने क्रोध पर नियंत्रण रखें। प्रियजनों से वाद-विवाद के कारण कष्ट उठाना पड़ सकता है। प्रेम संबंधित मामलों में सफलता प्राप्त हो सकती है।



16 से 30 जून 2012 : इस अवधि में आपको प्रयासों से अधिक धनलाभ प्राप्त हो सकते हैं। पूंजि निवेश से संबंधित कार्यों से बचना लाभदायक रहेगा। पारिवारिक रिश्तों के लिए समय थोड़ा प्रतिकूल हो सकता है। इस लिए परिवार के लोगों के साथ व्यवहार कृशल रहने का प्रयास करें। दूरस्थ स्थानों की धार्मिक यात्राएँ सफल हो सकती हैं। जीवनसाथी के साथ संबंधों में सुधार होने के योग हैं।

धनु: 1 से 15 जून 2012 : पूर्व काल से रुके हुये कार्य के पूर्ण होने से आपको आकस्मिक धन लाभ प्राप्त हो सकता है। भूमि-भवन-वाहन से संबंधित कार्यों से लाभ प्राप्त हो सकता है। प्रेम प्रसंगों में भी सफलता के योग बन रहे हैं। परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य कमजोर हो सकता है। परिवार के साथ धार्मिक यात्रा पर जाना उत्तम सिद्ध रहेगा। जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।



16 से 30 जून 2012 : नौकरी-व्यवसाय में आपको महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति हो सकती है। भूमि-भवन इत्यादि कार्यों में सतर्क रहें धन हानि हो सकती है। सरकारी कार्य या कोर्ट-कचहरी के कार्यों के लिए समय अनुकूल है। व्यय पर नियंत्रण रखने से

लाभ प्राप्त होगा। थोड़े समय के लिये परिवार में अशान्ति हो सकती है। अत्याधिक भागदौड़ से आपको थकावट हो सकती है। पर्याप्त विश्राम करना आवश्यक होगा।



मकर: 1 से 15 जून 2012 : नौकरी-व्यवसाय से संबंधित कार्यों से जुड़े लोगों के लिए समय मध्यम लाभ देने वाला रहेगा। चल-अचल संपत्ति में पूंजिनिवेश करने के लिए समय उत्तम सिद्ध हो सकता है। परिवार में किसी सदस्य के जिद्दी स्वभाव के कारण आपके परिवार में मानसिक अशांति का माहोल हो सकता है। जीवन साथी से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।



16 से 30 जून 2012 : किये गये पूंजि निवेश द्वारा आकस्मिक धन प्राप्ति के योग बन रहे हैं। महत्वपूर्ण कार्य एवं योजनाओं को पूर्ण करने हेतु समय उत्तम हैं। कार्यक्षेत्र की समस्याओं दूर करने में आप पूर्ण रूप से समर्थ होंगे हैं। घर परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होने के अच्छे योग हैं। खान-पान का विशेष ध्यान रखें अन्यथा पुराने रोगों के

कारण लंबे समय के लिए कष्ट संभव हैं।

कुंभ: 1 से 15 जून 2012 : नौकरी-व्यवसाय से संबंधित कार्यों के लिए यह समय आर्थिक लाभदेने वाला रहेगा। पूर्व काल में किये गये कार्य एवं रुके हुये कार्य से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होगा। आपके सामाजिक मान-सम्मान और पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य आपको चिंतित कर सकता है। जीवन साथी से पूर्णसहयोग प्राप्त होगा।



16 से 30 जून 2012 : आपकी महत्वपूर्ण योजनाएं पूर्ण हो सकती हैं। नौकरी में उच्च अधिकारि एवं सहकर्मच का सहयोग प्राप्त होगा। भूमि-भवन-वाहन से संबंधित कार्यों में लाभ प्राप्त होगा। आपके भौतिक सुख साधनों में वृद्धि होगी। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह के उत्तम योग बन रहे हैं। स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं संभव हैं। दांपत्य सुख में वृद्धि होगी।

मीन: 1 से 15 जून 2012 : नौकरी-व्यवसाय से संबंधित कार्यों से जुड़े लोगों के लिए समय मध्यम लाभ देने वाला रहेगा। किये गये पूंजि निवेश द्वारा आकस्मिक धन प्राप्ति के योग बन रहे हैं। परिवार में किसी सदस्य के कारण परिवार में अशांति का माहोल हो सकता है। खान-पान का विशेष ध्यान रखें अन्यथा पुराने रोगों के कारण लंबे समय के लिए कष्ट संभव हैं।



16 से 30 जून 2012 : महत्वपूर्ण कार्य एवं योजनाओं को पूर्ण करने हेतु समय उत्तम हैं। चल-अचल संपत्ति में पूंजिनिवेश करने के लिए समय उत्तम सिद्ध हो सकता है। जीवन साथी से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। आपके विरोधी एवं शत्रु पक्ष परास्त होंगे। मौसम के बदलाव से परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। जीवन साथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।



जून 2012 मासिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	शुक्र	ज्येष्ठ	शुक्ल	एकादशी- द्वादशी	06:32:54	चित्रा	19:10:24	व्यतिपात	07:48:50	विष्टि	06:32:54	कन्या	08:19:00
2	शनि	ज्येष्ठ	शुक्ल	त्रयोदशी	23:55:12	स्वाती	16:36:27	परिग्रह	24:12:05	कौलव	13:40:12	तुला	
3	रवि	ज्येष्ठ	शुक्ल	चतुर्दशी	20:18:28	विशाखा	13:51:17	शिव	20:08:10	गर	10:06:17	तुला	08:33:00
4	सोम	ज्येष्ठ	शुक्ल	पूर्णिमा	16:41:46	अनुराधा	11:04:16	सिद्धि	16:06:08	विष्टि	06:29:34	वृश्चिक	
5	मंगल	आषाढ	कृष्ण	प्रतिपदा	13:15:23	जेष्ठा	08:22:53	साध्य	12:11:38	कौलव	13:15:23	वृश्चिक	08:24:00
6	बुध	आषाढ	कृष्ण	द्वितीया	10:07:47	मूल	06:00:17	शुभ	08:32:09	गर	10:07:47	धनु	
7	गुरु	आषाढ	कृष्ण	तृतीया	07:28:20	उत्तराषाढ	26:42:23	ब्रह्म	26:29:16	विष्टि	07:28:20	धनु	09:40:00
8	शुक्र	आषाढ	कृष्ण	चतुर्थी	05:25:27	श्रवण	26:02:57	इन्द्र	24:17:01	बालव	05:25:27	मकर	
9	शनि	आषाढ	कृष्ण	पंचमी- षष्ठी	27:31:59	धनिष्ठा	26:09:29	वैधृति	22:42:18	गर	15:42:18	मकर	14:00:00
10	रवि	आषाढ	कृष्ण	षष्ठी - सप्तमी	27:46:58	शतभिषा	27:03:51	विषकुंभ	21:46:02	विष्टि	15:32:54	कुंभ	
11	सोम	आषाढ	कृष्ण	अष्टमी	28:47:55	पूर्वाभाद्रपद	28:43:14	प्रीति	21:26:21	बालव	16:12:17	कुंभ	22:14:00
12	मंगल	आषाढ	कृष्ण	नवमी	30:28:15	उत्तराभाद्रपद	31:00:08	आयुष्मान	21:39:30	तैतिल	17:32:57	मीन	
13	बुध	आषाढ	कृष्ण	नवमी	06:28:18	उत्तराभाद्रपद	07:00:11	सौभाग्य	22:18:00	गर	06:28:18	मीन	
14	गुरु	आषाढ	कृष्ण	दशमी	08:39:38	रेवति	09:47:08	शोभन	23:15:15	विष्टि	08:39:38	मीन	09:47:00
15	शुक्र	आषाढ	कृष्ण	एकादशी	11:07:51	अश्विनी	12:50:58	अतिगंड	24:20:58	बालव	11:07:51	मेष	
16	शनि	आषाढ	कृष्ण	द्वादशी	13:44:31	भरणी	16:00:28	सुकर्मा	25:27:39	तैतिल	13:44:31	मेष	22:47:00
17	रवि	आषाढ	कृष्ण	त्रयोदशी	16:15:36	कृत्तिका	19:04:21	धृति	26:28:43	वणिज	16:15:36	वृष	
18	सोम	आषाढ	कृष्ण	चतुर्दशी	18:33:34	रोहिणि	21:56:04	शूल	27:15:45	विष्टि	05:27:00	वृष	



19	मंगल	आषाढ	कृष्ण	अमावस्या	20:32:48	मृगशिरा	24:27:10	गंड	27:47:48	चतुष्पाद	07:35:37	वृष	11:14:00
20	बुध	आषाढ	शुक्ल	प्रतिपदा	22:06:44	आद्रा	26:34:52	वृद्धि	28:00:11	किस्तुघ्न	09:22:41	मिथुन	
21	गुरु	आषाढ	शुक्ल	द्वितीया	23:14:27	पुनर्वसु	28:16:19	ध्रुव	27:51:01	बालव	10:44:27	मिथुन	21:54:00
22	शुक्र	आषाढ	शुक्ल	तृतीया	23:54:03	पुष्य	29:30:37	व्याघात	27:20:18	तैत्तिल	11:38:07	कर्क	
23	शनि	आषाढ	शुक्ल	चतुर्थी	24:05:33	पुष्य	05:30:52	हर्षण	26:28:03	वणिज	12:03:40	कर्क	
24	रवि	आषाढ	शुक्ल	पंचमी	23:48:56	अश्लेषा	06:17:04	वज्र	25:12:23	बव	12:01:08	कर्क	06:17:00
25	सोम	आषाढ	शुक्ल	षष्ठी	23:02:21	मघा	06:35:09	सिद्धि	23:33:17	कौलव	11:29:32	सिंह	
26	मंगल	आषाढ	शुक्ल	सप्तमी	21:48:35	पूर्वाफाल्गुनी	06:24:12	व्यतिपात	21:31:42	गर	10:28:53	सिंह	12:18:00
27	बुध	आषाढ	शुक्ल	अष्टमी	20:06:42	उत्तराफाल्गुनी	05:47:01	वरियान	19:07:38	विष्टि	09:01:05	कन्या	
28	गुरु	आषाढ	शुक्ल	नवमी	17:59:32	चित्रा	27:13:35	परिग्रह	16:22:58	बालव	07:06:05	कन्या	16:01:00
29	शुक्र	आषाढ	शुक्ल	दशमी	15:29:52	स्वाती	25:23:18	शिव	13:19:33	गर	15:29:52	तुला	
30	शनि	आषाढ	शुक्ल	एकादशी	12:40:32	विशाखा	23:16:10	सिद्धि	10:01:10	विष्टि	12:40:32	तुला	

शनि पीड़ा निवारक

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित 22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित पौरुषाकार शनि यंत्र

पुरुषाकार शनि यंत्र (स्टील में) को तीव्र प्रभावशाली बनाने हेतु शनि की कारक धातु शुद्ध स्टील(लोहे) में बनाया गया है। जिस के प्रभाव से साधक को तत्काल लाभ प्राप्त होता है। यदि जन्म कुंडली में शनि प्रतिकूल होने पर व्यक्ति को अनेक कार्यों में असफलता प्राप्त होती है, कभी व्यवसाय में घटा, नौकरी में परेशानी, वाहन दुर्घटना, गृह क्लेश आदि परेशानियां बढ़ती जाती है ऐसी स्थितियों में प्राणप्रतिष्ठित ग्रह पीड़ा निवारक शनि यंत्र की अपने को व्यपार स्थान या घर में स्थापना करने से अनेक लाभ मिलते हैं। यदि शनि की ढैया या साढ़ेसाती का समय हो तो इसे अवश्य पूजना चाहिए। शनियंत्र के पूजन मात्र से व्यक्ति को मृत्यु, कर्ज, कोर्टकेश, जोड़ो का दर्द, बात रोग तथा लम्बे समय के सभी प्रकार के रोग से परेशान व्यक्ति के लिये शनि यंत्र अधिक लाभकारी होगा। नौकरी पेशा आदि के लोगों को पदोन्नति भी शनि द्वारा ही मिलती है अतः यह यंत्र अति उपयोगी यंत्र है जिसके द्वारा शीघ्र ही लाभ पाया जा सकता है।

मूल्य: 1050 से 8200

GURUTVA KARYALAY

BHUBNESWAR-751018, (ORISSA), Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com



जून-2012 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्यौहार
1	शुक्र	ज्येष्ठ	शुक्ल	एकादशी- द्वादशी	06:32:54	निर्जला एकादशी व्रत (वैष्णव), चम्पक द्वादशी, त्रिविक्रम द्वादशी त्रिस्पृशा महाद्वादशी, श्यामबाबा द्वादशी, श्रीराम द्वादशी, रुक्मिणी विवाह
2	शनि	ज्येष्ठ	शुक्ल	त्रयोदशी	23:55:12	शनि प्रदोष व्रत, छत्रपति शिवाजी की राज्याभिषेक तिथि, शिवराज शक सम्बत् 339 प्रारंभ, वटसावित्री व्रत 3 दिन (मालवा, गुजरात, दक्षिण भारत), गौतमेश्वर दर्शन-यात्रा (काशी)
3	रवि	ज्येष्ठ	शुक्ल	चतुर्दशी	20:18:28	चम्पक चतुर्दशी, पूर्णिमा व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत कथा
4	सोम	ज्येष्ठ	शुक्ल	पूर्णिमा	16:41:46	स्नान-दान हेतु उत्तम ज्येष्ठी पूर्णिमा, वटसावित्री पूर्णिमा, देव स्नान पूर्णिमा, बिल्वत्रिरात्र व्रत प्रारंभ, सरयू जयंती, संत कबीर जयंती,
5	मंगल	आषाढ	कृष्ण	प्रतिपदा	13:15:23	विश्व पर्यावरण दिवस, गुरु गोलवलकर स्मृति दिवस
6	बुध	आषाढ	कृष्ण	द्वितीया	10:07:47	सूर्य-शुक्र समागम(ग्रहण) (अन्तरिक्ष की अद्भुत खगोलीय घटना)
7	गुरु	आषाढ	कृष्ण	तृतीया	07:28:20	संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (चं.उ.रा.9:38)
8	शुक्र	आषाढ	कृष्ण	चतुर्थी	05:25:27	कोकिला पंचमी, नाग पूजन (प.बं),
9	शनि	आषाढ	कृष्ण	पंचमी- षष्ठी	27:31:59	-
10	रवि	आषाढ	कृष्ण	षष्ठी - सप्तमी	27:46:58	भानु सप्तमी पर्व, (सूर्यग्रहण समान फलदायक),
11	सोम	आषाढ	कृष्ण	अष्टमी	28:47:55	शीतलाष्टमी, कालाष्टमी व्रत, भलभलाष्टमी, बोहराष्टमी,
12	मंगल	आषाढ	कृष्ण	नवमी	30:28:15	प्राचीन मतानुसार शीतलाष्टमी, इन्द्राणी पूजा
13	बुध	आषाढ	कृष्ण	नवमी	06:28:18	-
14	गुरु	आषाढ	कृष्ण	दशमी	08:39:38	मिथुन संक्रान्ति रात्रि 10.46 बजे, संक्रान्ति में स्नान-दान हेतु पुण्यकाल मध्याह्न से सूर्यास्त तक, रज संक्रान्ति (उ)
15	शुक्र	आषाढ	कृष्ण	एकादशी	11:07:51	योगिनी एकादशी व्रत,
16	शनि	आषाढ	कृष्ण	द्वादशी	13:44:31	शनि प्रदोष व्रत (संतान सुख हेतु उत्तम)
17	रवि	आषाढ	कृष्ण	त्रयोदशी	16:15:36	शिव चतुर्दशी, मासिक शिवरात्रि व्रत
18	सोम	आषाढ	कृष्ण	चतुर्दशी	18:33:34	सोमवारी व्रत, महारानी लक्ष्मीबाई दिवस,



19	मंगल	आषाढ	कृष्ण	अमावस्या	20:32:48	स्नान-दान-श्राद्ध हेतु उत्तम आषाढी अमावस्या, भौमवती अमावस, गंगास्नान करोड़ों सूर्यग्रहण समान फलदायक, हलहारिणी अमावस, वंशवर्द्धक अमावस्या व्रत,
20	बुध	आषाढ	शुक्ल	प्रतिपदा	22:06:44	गुप्त आषाढी नवरात्र प्रारंभ, कच्छ के नवसंवत्सर प्रारंभ, सूर्य सायन कर्क राशि में रात्रि 04:40 बजे, सौर वर्षा ऋतु प्रारंभ,
21	गुरु	आषाढ	शुक्ल	द्वितीया	23:14:27	नवीन चंद्र दर्शन, श्रीजगन्नाथ-सुभद्रा-बलराम रथयात्रा (जगन्नाथ पुरी), मनोरथ द्वितीया व्रत, स्वयंसिद्ध मुहूर्त
22	शुक्र	आषाढ	शुक्ल	तृतीया	23:54:03	नित्यलीलावास, गुण्डीचा महोत्सव (जगन्नाथ पुरी), कामाख्या देवी की अम्बुवाची प्रवृत्ति (असम)
23	शनि	आषाढ	शुक्ल	चतुर्थी	24:05:33	विनायकी चतुर्थी, वरदविनायक चतुर्थी व्रत (चं.उ.रा.9:42) डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी दिवस,
24	रवि	आषाढ	शुक्ल	पंचमी	23:48:56	हैरा पंचमी (उ),रानी दुर्गावती दिवस,
25	सोम	आषाढ	शुक्ल	षष्ठी	23:02:21	स्कन्दषष्ठी व्रत, कर्दमषष्ठी (प.बं), कसुंबा षष्ठी (गु), कामाख्या अम्बुवाची निवृत्ति (असम), साईं टेऊराम जयंती
26	मंगल	आषाढ	शुक्ल	सप्तमी	21:48:35	-
27	बुध	आषाढ	शुक्ल	अष्टमी	20:06:42	श्रीदुर्गा अष्टमी व्रत, श्रीअन्नपूर्णाष्टमी व्रत, परशुरामाष्टमी, बुध अष्टमी पर्व (सूर्यग्रहण के समान फलदायक), महिषघ्नी व्रत, हार अष्टमी,
28	गुरु	आषाढ	शुक्ल	नवमी	17:59:32	भड्डली नवमी, कन्दर्प नवमी, हार नवमी, शारिका जयंती, गुप्त आषाढी नवरात्र पूर्ण,
29	शुक्र	आषाढ	शुक्ल	दशमी	15:29:52	आशा दशमी, गिरिजा पूजन, सोपपदा दशमी, पुनर्यात्रा उल्टा रथ (उ)
30	शनि	आषाढ	शुक्ल	एकादशी	12:40:32	श्रीहरि शयनी (देवशयनी) एकादशी व्रत, रविनारायण एकादशी (उ), पंढरपुर यात्रा (महाराष्ट्र), रात्रि में श्रीविष्णु-शयनोत्सव

क्या आप किसी समस्या से ग्रस्त हैं?

आपके पास अपनी समस्याओं से छुटकारा पाने हेतु पूजा-अर्चना, साधना, मंत्र जाप इत्यादि करने का समय नहीं है? अब आप अपनी समस्याओं से बीना किसी विशेष पूजा-अर्चना, विधि-विधान के आपको अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर सके एवं आपको अपने जीवन के समस्त सुखों को प्राप्त करने का मार्ग प्राप्त हो सके इस लिये गुरुत्व कार्यालय द्वारा हमारा उद्देश्य शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रों द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त विभिन्न प्रकार के यन्त्र-कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहुंचाने का है।

GURUTVA KARYALAY, Call Us : 91+ 9338213418, 91+ 9238328785,



गणेश लक्ष्मी यंत्र

प्राण-प्रतिष्ठित गणेश लक्ष्मी यंत्र को अपने घर-दुकान-ऑफिस-फैक्टरी में पूजन स्थान, गल्ला या अलमारी में स्थापित करने व्यापार में विशेष लाभ प्राप्त होता है। यंत्र के प्रभाव से भाग्य में उन्नति, मान-प्रतिष्ठा एवं व्यापार में वृद्धि होती है एवं आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। गणेश लक्ष्मी यंत्र को स्थापित करने से भगवान गणेश और देवी लक्ष्मी का संयुक्त आशीर्वाद प्राप्त होता है।

Rs.730 से Rs.10900 तक

मंगल यंत्र से ऋण मुक्ति

मंगल यंत्र को जमीन-जायदाद के विवादों को हल करने के काम में लाभ देता है, इस के अतिरिक्त व्यक्ति को ऋण मुक्ति हेतु मंगल साधना से अति शीघ्र लाभ प्राप्त होता है। विवाह आदि में मंगली जातकों के कल्याण के लिए मंगल यंत्र की पूजा करने से विशेष लाभ प्राप्त होता है। प्राण प्रतिष्ठित मंगल यंत्र के पूजन से भाग्योदय, शरीर में खून की कमी, गर्भपात से बचाव, बुखार, चेचक, पागलपन, सूजन और घाव, यौन शक्ति में वृद्धि, शत्रु विजय, तंत्र मंत्र के दुष्ट प्रभाव, भूत-प्रेत भय, वाहन दुर्घटनाओं, हमला, चोरी इत्यादी से बचाव होता है।

मूल्य मात्र Rs- 730

कुबेर यंत्र

कुबेर यंत्र के पूजन से स्वर्ण लाभ, रत्न लाभ, पैतृक सम्पत्ती एवं गड़े हुए धन से लाभ प्राप्ति कि कामना करने वाले व्यक्ति के लिये कुबेर यंत्र अत्यन्त सफलता दायक होता है। ऐसा शास्त्रोक्त वचन है। कुबेर यंत्र के पूजन से एकाधिक स्रोत से धन का प्राप्त होकर धन संचय होता है।



ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस

(Gold Plated)



ताम्र पत्र पर रजत पोलीस

(Silver Plated)



ताम्र पत्र पर

(Copper)

साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	460	1" X 1"	370	1" X 1"	255
2" X 2"	820	2" X 2"	640	2" X 2"	460
3" X 3"	1650	3" X 3"	1090	3" X 3"	730
4" X 4"	2350	4" X 4"	1650	4" X 4"	1090
6" X 6"	3600	6" X 6"	2800	6" X 6"	1900
9" X 9"	6400	9" X 9"	5100	9" X 9"	3250
12" X 12"	10800	12" X 12"	8200	12" X 12"	6400

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com



नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों ओर यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता है। सभी रत्नों को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। व्यक्ति को ऐसा आभास होता है जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारण करने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता है। गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता है एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता है। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता है। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं है ऐसा शास्त्रोक्त वचन है। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरुत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं।

अष्ट लक्ष्मी कवच

अष्ट लक्ष्मी कवच को धारण करने से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता है। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रूप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)-धैरीय लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रूपों का स्वतः अशीर्वाद प्राप्त होता है।

मूल्य मात्र: Rs-1250

मंत्र सिद्ध व्यापार वृद्धि कवच

व्यापार वृद्धि कवच व्यापार के शीघ्र उन्नति के लिए उत्तम है। चाहें कोई भी व्यापार हो अगर उसमें लाभ के स्थान पर बार-बार हानि हो रही है। किसी प्रकार से व्यापार में बार-बार बांधा उत्पन्न हो रही हो! तो संपूर्ण प्राण प्रतिष्ठित मंत्र सिद्ध पूर्ण चैतन्य युक्त व्यापार वृद्धि यंत्र को व्यापार स्थान या घर में स्थापित करने से शीघ्र ही व्यापार वृद्धि एवं नितन्तर लाभ प्राप्त होता है।

मूल्य मात्र: Rs.730 & 1050

मंगल यंत्र

(त्रिकोण) मंगल यंत्र को जमीन-जायदाद के विवादों को हल करने के काम में लाभ देता है, इस के अतिरिक्त व्यक्ति को ऋण मुक्ति हेतु मंगल साधना से अति शीघ्र लाभ प्राप्त होता है। विवाह आदि में मंगली जातकों के कल्याण के लिए मंगल यंत्र की पूजा करने से विशेष लाभ प्राप्त होता है।

मूल्य मात्र Rs- 730

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Our Website:- <http://gk.yolasite.com/> and <http://gurutvakaryalay.blogspot.com/>



विवाह संबंधित समस्या

क्या आपके लडके-लडकी कि आपकी शादी में अनावश्यक रूप से विलम्ब हो रहा है या उनके वैवाहिक जीवन में खुशियां कम होती जा रही हैं और समस्या अधिक बढ़ती जा रही हैं। एसी स्थिती होने पर अपने लडके-लडकी कि कुंडली का अध्ययन अवश्य करवाले और उनके वैवाहिक सुख को कम करने वाले दोषों के निवारण के उपायो के बार में विस्तार से जनकारी प्राप्त करें।

शिक्षा से संबंधित समस्या

क्या आपके लडके-लडकी की पढाई में अनावश्यक रूप से बाधा-विघ्न या रुकावट हो रही है? बच्चो को अपने पूर्ण परिश्रम एवं मेहनत का उचित फल नहीं मिल रहा? अपने लडके-लडकी की कुंडली का विस्तृत अध्ययन अवश्य करवाले और उनके विद्या अध्ययन में आनेवाली रुकावट एवं दोषो के कारण एवं उन दोषों के निवारण के उपायो के बार में विस्तार से जनकारी प्राप्त करें।

क्या आप किसी समस्या से ग्रस्त हैं?

आपके पास अपनी समस्याओं से छुटकारा पाने हेतु पूजा-अर्चना, साधना, मंत्र जाप इत्यादि करने का समय नहीं है? अब आप अपनी समस्याओं से बीना किसी विशेष पूजा-अर्चना, विधि-विधान के आपको अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर सके एवं आपको अपने जीवन के समस्त सुखो को प्राप्त करने का मार्ग प्राप्त हो सके इस लिये गुरुत्व कार्यालय द्वारा हमारा उद्देश्य शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त विभिन्न प्रकार के यन्त्र-कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहुंचाने का है।

ज्योतिष संबंधित विशेष परामर्श

ज्योति विज्ञान, अंक ज्योतिष, वास्तु एवं आध्यात्मिक ज्ञान से संबंधित विषयों में हमारे 30 वर्षों से अधिक वर्ष के अनुभवों के साथ ज्योतिष से जुड़े नये-नये संशोधन के आधार पर आप अपनी हर समस्या के सरल समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call Us - 9338213418, 9238328785

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

ओनेक्स

जो व्यक्ति पन्ना धारण करने में असमर्थ हो उन्हें बुध ग्रह के उपरत्न ओनेक्स को धारण करना चाहिए। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु और स्मरण शक्ति के विकास हेतु ओनेक्स रत्न की अंगूठी को दायाँ हाथ की सबसे छोटी उंगली या लॉकेट बनवा कर गले में धारण करें। ओनेक्स रत्न धारण करने से विद्या-बुद्धि की प्राप्ति हो होकर स्मरण शक्ति का विकास होता है।



जून 2012 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग

2	सूर्योदय से सायं 4.35 तक	18	सम्पूर्ण दिन-रात
4	सूर्योदय से दिन 11.04 तक	21	सम्पूर्ण दिन-रात
8	सूर्योदय से देररात 2.02 तक	27	प्रातः 5.46 से 28 जून को प्रातः 4.41 तक
12	सम्पूर्ण दिन-रात	29	सूर्योदय से दिन 3.28 तक
14	सूर्योदय से 15 जून को दिन 12.50 तक		

अमृत योग

18	रात्रि 9.55 से रातभर	22	प्रातः 4.15 से सूर्योदय तक
----	----------------------	----	----------------------------

त्रिपुष्कर योग (तीन गुना) योग

10/11	रात्रि 3.02 से 3.45 तक	30	दिन 12.40 से रात्रि 11.15 तक
26	प्रातः 6.24 से रात्रि 9.47 तक		

गुरु पुष्यामृत योग

22	प्रातः 4.15 से सूर्योदय तक		
----	----------------------------	--	--

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- गुरु पुष्यामृत योग में किये गये किये गये शुभ कार्य मे शुभ फलो की प्राप्ति होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30



दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुशार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघडिया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघडिये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघडिये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघडिये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया	मध्यम चौघडिया	अशुभ चौघडिया
चौघडिया स्वामी ग्रह	चौघडिया स्वामी ग्रह	चौघडिया स्वामी ग्रह
शुभ गुरु	चर शुक्र	उद्वेग सूर्य
अमृत चंद्रमा		काल शनि
लाभ बुध		रोग मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघडिया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघडिया उचित नहीं माना जाता।



दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक

वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र

रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक

रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता है, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानों के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता है।

- ❖ सूर्य कि होरा सरकारी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।



ग्रह चलन जून -2012

Day	Sun	Mon	Ma	Me	Jup	Ven	Sat	Rah	Ket	Ua	Nep	Plu
1	01:16:52	05:28:17	04:20:42	01:22:27	01:03:29	01:24:48	05:29:12	07:11:02	01:11:02	11:13:47	10:09:06	08:14:55
2	01:17:50	06:13:04	04:21:06	01:24:36	01:03:43	01:24:12	05:29:10	07:11:02	01:11:02	11:13:49	10:09:06	08:14:53
3	01:18:47	06:28:04	04:21:31	01:26:45	01:03:57	01:23:36	05:29:08	07:11:03	01:11:03	11:13:51	10:09:06	08:14:52
4	01:19:45	07:13:10	04:21:55	01:28:51	01:04:11	01:22:59	05:29:06	07:11:03	01:11:03	11:13:53	10:09:06	08:14:51
5	01:20:42	07:28:12	04:22:21	02:00:57	01:04:25	01:22:22	05:29:04	07:11:03	01:11:03	11:13:55	10:09:06	08:14:49
6	01:21:39	08:13:01	04:22:46	02:03:00	01:04:39	01:21:44	05:29:02	07:11:02	01:11:02	11:13:57	10:09:06	08:14:48
7	01:22:37	08:27:31	04:23:12	02:05:01	01:04:52	01:21:06	05:29:00	07:11:00	01:11:00	11:13:58	10:09:06	08:14:46
8	01:23:34	09:11:37	04:23:37	02:07:00	01:05:06	01:20:29	05:28:58	07:10:59	01:10:59	11:14:00	10:09:06	08:14:45
9	01:24:32	09:25:16	04:24:04	02:08:57	01:05:20	01:19:52	05:28:56	07:10:58	01:10:58	11:14:02	10:09:06	08:14:44
10	01:25:29	10:08:29	04:24:30	02:10:52	01:05:34	01:19:16	05:28:55	07:10:56	01:10:56	11:14:03	10:09:06	08:14:42
11	01:26:26	10:21:17	04:24:57	02:12:45	01:05:47	01:18:40	05:28:53	07:10:56	01:10:56	11:14:05	10:09:06	08:14:41
12	01:27:24	11:03:44	04:25:24	02:14:35	01:06:01	01:18:06	05:28:52	07:10:56	01:10:56	11:14:06	10:09:06	08:14:39
13	01:28:21	11:15:54	04:25:51	02:16:22	01:06:15	01:17:33	05:28:51	07:10:56	01:10:56	11:14:08	10:09:05	08:14:38
14	01:29:18	11:27:52	04:26:18	02:18:07	01:06:28	01:17:02	05:28:50	07:10:58	01:10:58	11:14:09	10:09:05	08:14:37
15	02:00:16	00:09:43	04:26:46	02:19:50	01:06:42	01:16:33	05:28:48	07:10:59	01:10:59	11:14:10	10:09:05	08:14:35
16	02:01:13	00:21:30	04:27:14	02:21:30	01:06:56	01:16:05	05:28:48	07:11:01	01:11:01	11:14:12	10:09:04	08:14:34
17	02:02:10	01:03:18	04:27:42	02:23:08	01:07:09	01:15:39	05:28:47	07:11:02	01:11:02	11:14:13	10:09:04	08:14:32
18	02:03:08	01:15:09	04:28:10	02:24:43	01:07:23	01:15:16	05:28:46	07:11:02	01:11:02	11:14:14	10:09:04	08:14:31
19	02:04:05	01:27:07	04:28:39	02:26:15	01:07:36	01:14:54	05:28:45	07:11:01	01:11:01	11:14:15	10:09:03	08:14:29
20	02:05:02	02:09:13	04:29:08	02:27:45	01:07:49	01:14:35	05:28:45	07:10:59	01:10:59	11:14:17	10:09:03	08:14:28
21	02:05:59	02:21:30	04:29:37	02:29:13	01:08:03	01:14:18	05:28:44	07:10:56	01:10:56	11:14:18	10:09:02	08:14:26
22	02:06:57	03:03:58	05:00:06	03:00:38	01:08:16	01:14:04	05:28:44	07:10:52	01:10:52	11:14:19	10:09:02	08:14:25
23	02:07:54	03:16:39	05:00:36	03:02:00	01:08:29	01:13:52	05:28:43	07:10:47	01:10:47	11:14:20	10:09:01	08:14:23
24	02:08:51	03:29:34	05:01:05	03:03:19	01:08:42	01:13:42	05:28:43	07:10:43	01:10:43	11:14:21	10:09:01	08:14:22
25	02:09:48	04:12:44	05:01:35	03:04:36	01:08:55	01:13:35	05:28:43	07:10:40	01:10:40	11:14:22	10:09:00	08:14:20
26	02:10:46	04:26:09	05:02:05	03:05:50	01:09:08	01:13:30	05:28:43	07:10:38	01:10:38	11:14:22	10:08:59	08:14:19
27	02:11:43	05:09:50	05:02:35	03:07:01	01:09:22	01:13:27	05:28:43	07:10:37	01:10:37	11:14:23	10:08:59	08:14:17
28	02:12:40	05:23:48	05:03:06	03:08:10	01:09:34	01:13:27	05:28:44	07:10:38	01:10:38	11:14:24	10:08:58	08:14:16
29	02:13:37	06:08:01	05:03:37	03:09:15	01:09:47	01:13:29	05:28:44	07:10:39	01:10:39	11:14:25	10:08:57	08:14:14
30	02:14:34	06:22:30	05:04:07	03:10:17	01:10:00	01:13:33	05:28:44	07:10:40	01:10:40	11:14:25	10:08:56	08:14:13



सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं।

उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्या होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसि स्थिती में लाभा प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वे औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये यंत्र मंत्र एवं तंत्र के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर में स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जैसे हर व्यक्ति को ब्रह्मांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रह्मांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।



कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उत्पन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमें अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शर्म अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जैसे-जैसे आयु बढ़ती हैं वैसे-वैसे उसके शरीर कि ऊर्जा होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमें जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमें होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु हम से संपर्क करें।

Declaration Notice

- ❖ We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- ❖ We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- ❖ If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- ❖ We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- ❖ Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- ❖ Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- ❖ Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

Our Goal

- ❖ Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, preciouese and semi preciouese Gems stone deliver on your door step.



मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रों द्वारा शुभ मूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते हैं. अलग-अलग कवच तैयार करने के लिए अलग-अलग तरह के मंत्रों का प्रयोग किया जाता है.

- ❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच?
- ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं
- ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं
- ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं
- ❖ कवच के बारे में अधिक जानकारी हेतु

मंत्र सिद्ध कवच सूची

सर्व कार्य सिद्धि	4600/-	ऋण मुक्ति	910/-	विघ्न बाधा निवारण	550/-
सर्व जन वशीकरण	1450/-	धन प्राप्ति	820/-	नजर रक्षा	550/-
अष्ट लक्ष्मी	1250/-	तंत्र रक्षा	730/-	दुर्भाग्य नाशक	460/-
संतान प्राप्ति	1250/-	शत्रु विजय	730/-	* वशीकरण (२-३ व्यक्तिके लिए)	1050/-
स्पे- व्यापर वृद्धि	1050/-	विवाह बाधा निवारण	730/-	* पत्नी वशीकरण	640/-
कार्य सिद्धि	1050/-	व्यापर वृद्धि	730/-	* पति वशीकरण	640/-
आकस्मिक धन प्राप्ति	1050/-	सर्व रोग निवारण	730/-	सरस्वती (कक्षा +10 के लिए)	550/-
नवग्रह शांति	910/-	मस्तिष्क पृष्टि वर्धक	640/-	सरस्वती (कक्षा 10 तकके लिए)	460/-
भूमि लाभ	910/-	कामना पूर्ति	640/-	* वशीकरण (1 व्यक्ति के लिए)	640/-
काम देव	910/-	विरोध नाशक	640/-	रोजगार प्राप्ति	370/-
पदों उन्नति	910/-	रोजगार वृद्धि	550/-		

*कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call Us - 9338213418, 9238328785

Our Website:- <http://gk.yolasite.com/> and <http://gurutvakaryalay.blogspot.com/>

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)



YANTRA LIST

EFFECTS

Our Special Yantra

1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-

Shastrokt Yantra

11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fever Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaee Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga



YANTRA LIST

EFFECTS

43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 255, 370, 460, 550, 640, 730, 820, 910, 1250, 1850, 2300, 2800 and Above.....

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Our Website:- <http://gk.yolasite.com/> and <http://gurutvakaryalay.blogspot.com/>

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)



GURUTVA KARYALAY

NAME OF GEM STONE	GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald (पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire (पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire (नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire (सफ़ेद पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue (बैंकोक नीलम)	100.00	150.00	200.00	500.00	1000.00 & above
Ruby (माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma (बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal (नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl (मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रती तक) (लाल मूंगा)	75.00	90.00	12.00	180.00	280.00 & above
Red Coral (4 रती से उपर) (लाल मूंगा)	120.00	150.00	190.00	280.00	550.00 & above
White Coral (सफ़ेद मूंगा)	20.00	28.00	42.00	51.00	90.00 & above
Cat's Eye (लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye Orissa (उडिसा लहसुनिया)	460.00	640.00	1050.00	2800.00	5500.00 & above
Gomed (गोमेद)	15.00	27.00	60.00	90.00	120.00 & above
Gomed CLN (सिलोनी गोमेद)	300.00	410.00	640.00	1800.00	2800.00 & above
Zarakan (जरकन)	350.00	450.00	550.00	640.00	910.00 & above
Aquamarine (बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite (नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise (फ़िरोजा)	15.00	30.00	45.00	60.00	90.00 & above
Golden Topaz (सुनहला)	15.00	30.00	45.00	60.00	90.00 & above
Real Topaz (उडिसा पुखराज/टोपज)	60.00	120.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz (नीला टोपज)	60.00	90.00	120.00	280.00	460.00 & above
White Topaz (सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00 & above
Amethyst (कटेला)	20.00	30.00	45.00	60.00	120.00 & above
Opal (उपल)	30.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Garnet (गारनेट)	30.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline (तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby (सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star (काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx (ओनेक्स)	09.00	12.00	15.00	19.00	25.00 & above
Real Onyx (ओनेक्स)	60.00	90.00	120.00	190.00	280.00 & above
Lapis (लाजर्वत)	15.00	25.00	30.00	45.00	55.00 & above
Moon Stone (चन्द्रकान्त मणि)	12.00	21.00	30.00	45.00	100.00 & above
Rock Crystal (स्फ़टिक)	09.00	12.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone (दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye (टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade (मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone (सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Diamond (हीरा)	50.00	100.00	200.00	370.00	460.00 & above
(.05 to .20 Cent)	(Per Cent)	(Per Cent)	(PerCent)	(Per Cent)	(Per Cent)

Note : Bangkok (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, Blue Topaz not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus



BOOK PHONE/ CHAT CONSULTATION

We are mostly engaged in spreading the ancient knowledge of Astrology, Numerology, Vastu and Spiritual Science in the modern context, across the world.

Our research and experiments on the basic principals of various ancient sciences for the use of common man. exhaustive guide lines exhibited in the original Sanskrit texts

BOOK APPOINTMENT PHONE/ CHAT CONSULTATION

Please book an appointment with Our expert Astrologers for an internet chart . We would require your birth details and basic area of questions so that our expert can be ready and give you rapid replied. You can indicate the area of question in the special comments box. In case you want more than one person reading, then please mention in the special comment box . We shall confirm before we set the appointment. Please choose from :

PHONE/ CHAT CONSULTATION	
Consultation 30 Min.:	RS. 1250/-*
Consultation 45 Min.:	RS. 1900/-*
Consultation 60 Min.:	RS. 2500/-*

*While booking the appointment in Advance

How Does it work Phone/Chat Consultation

This is a unique service of **GURUATVA KARYALAY** where we offer you the option of having a personalized discussion with our expert astrologers. There is no limit on the number of question although time is of consideration.

Once you request for the consultation, with a suggestion as to your convenient time we get back with a confirmation whether the time is available for consultation or not.

- We send you a Phone Number at the designated time of the appointment
- We send you a Chat URL / ID to visit at the designated time of the appointment
- You would need to refer your Booking number before the chat is initiated
- Please remember it takes about 1-2 minutes before the chat process is initiated.
- Once the chat is initiated you can commence asking your questions and clarifications
- We recommend 25 minutes when you need to consult for one persona Only and usually the time is sufficient for 3-5 questions depending on the timing questions that are put.
- For more than these questions or one birth charts we would recommend 60/45 minutes Phone/chat is recommended
- Our expert is assisted by our technician and so chatting & typing is not a bottle neck

In special cases we don't have the time available about your Specific Questions We will taken some time for properly Analysis your birth chart and we get back with an alternate or ask you for an alternate.

All the time mentioned is Indian Standard Time which is + 5.30 hr ahead of G.M.T.

Many clients prefer the chat so that many questions that come up during a personal discussion can be answered right away.

BOOKING FOR PHONE/ CHAT CONSULTATION PLEASE CONTECT

GURUTVA KARYALAY

Call Us:- 91+9338213418, 91+9238328785.

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com, chintan_n_joshi@yahoo.co.in,



सूचना

- ❖ पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ❖ लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारों से सहमत हों।
- ❖ नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ❖ पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं है।
- ❖ प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता है तो यह मात्र एक संयोग है।
- ❖ प्रकाशित सभी लेख भारतीय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयों कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं है।
- ❖ अन्य लेखकों द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं है। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य है।
- ❖ ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखों में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक है। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयों में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ❖ पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ❖ हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षों के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोंकी जिन्मेदारी नहीं लेते हैं।
- ❖ यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोंको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योंकि इन विषयों में नैतिक मानदंडों , सामाजिक , कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता है अथवा प्रयोग के करने में त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव है।
- ❖ हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकड़ोंबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमें हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायों द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई है।
- ❖ पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता है। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता है।
- ❖ अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादों केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)



FREE E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष पत्रिका जून -2012

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

<http://gk.yolasite.com/>
<http://www.gurutvakaryalay.blogspot.com/>



हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता है। वहाँ आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता है, भौतिकता का आवरण ओढ़े व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता है, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योंकि भावनाएँ हि भवसागर हैं, जिसमें मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समझने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता है। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार है। इसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ है। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। इसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं है की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रों द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहुँचाने का है।

**सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।**

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call Us - 9338213418, 9238328785

Our Website:- <http://gk.yolasite.com/> and <http://gurutvakaryalay.blogspot.com/>

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)



JUN

2012